लोकजीवन ओ लोकसाहित्य

डा. योगानन्द झा



शेखर प्रकाशन

पटना

लोकजीवन ओ लोकसाहित्य

डा. योगानन्द झा
एम. ए., पी-एच.डी.

प्रकाशक
शेखर प्रकाशन
पटना- 24

LOK JIWAN O LOK SAHITYA

(Folklore of Mithila) by

Dr. Yoganand Jha, Shekhar Prakashan, 2018

ISBN.	:	978-81-934584-5-7
प्रकाशक	:	शेखर प्रकाशन 2A/39, टेक्स्टबुक कॉलोनी, इन्द्रपुरी पटना-24, मोबाइल : 9334102305
प्रथम संस्करण	:	1986
द्वितीय संस्करण	:	2018
©	:	श्रीमती कीर्त्ति झा
मूल्य	:	200/- (दू सय टाका) मात्र
शब्द संयोजन, आवरण	:	अशोक कुमार मिश्र
बिक्री केन्द्र	:	शेखर प्रकाशन पोपुलर फर्मा के पीछे न्यू मार्केट, पटना-1, मो. 9334102305



वाणी-अर्चना

नहि स्नेहक छाहरि तर निवास।
दुख-विपति बीच कयलहुँ विकास।।
जँ जगदीश्वर छथिहे सहाय।
सब क्लेश हरथु जगदम्ब माय।।
वीणा कर मण्डित शुभ्र वेश।
श्वेताम्बर धारण रुचिर केश।।
मूढ़ो दिसि करुण कटाक्ष भेल।
मूढ़त्व तिरोहित, कतय गेल।।
अछि वर्ण-वर्ण सत्ता जनिकर।
अर्थक प्रतीति क्षमता तनिकर।।
हिनके थिक सभटा छन्द-बन्ध।
हिनके कृपाक बिनु जगत अन्ध।।
काव्यक रस हिनक अमोल दूध।
छाँकै छथि केवल तपःपूत।।
शारदा शिवा ब्रह्माणी छथि।
कमला तारा कल्याणी छथि।।
सौंसे संसार चलाबै छथि।
हमरा किऐक बिलटाबै छथि।।
वाणी रूपेँ जे विद्यमान ।
विद्यादायिनि भगवति प्रणाम।।

भूमिका

(प्रथम संस्करण)

आधुनिक साहित्यमे लोक शब्द अंग्रेजीक 'फोक' शब्दक भारतीयकरण थिक। मुदा भारतीय वाङमयक हेतु ई शब्द अत्यन्त प्राचीन अछि। पतञ्जलिक महाभाष्यमे शब्दक दुइ गोट प्रकार कहल गेल अछि   लौकिक ओ वैदिक। एहिमे लौकिकसँ तात्पर्य अछि सर्वजन व्याप्त।[1] आचार्य भरतक नाट्यशास्त्रमे धर्मीक दुइ गोट प्रकारक उल्लेख अछि   लोकधर्मी ओ नाट्यधर्मी।[2] अवश्ये तत्कालीन नाट्य परम्परामे आभिजात्य संस्कारक संगहि सामान्य जनजीवनक रुचि, व्यवहार ओ परम्पराक समावेशकेँ स्वीकार कयल गेल छल। महाभारत[3], गीता[4] आदि विभिन्न ग्रन्थमे लोक शब्दक प्रयोग जनसामान्यक हेतु बहुशः भेल अछि। डा. सत्येन्द्र मानव-समाजक ओहि वर्गकेँ लोक कहलनि अछि जे आभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता ओ पाण्डित्य-चेतना अथवा अहंकारसँ शून्य अछि आ एकटा परम्पराक प्रवाहमे जीवित रहैछ।[5] एलन डून्ड्स सामान्य व्यवसाय, भाषा, धर्म आदिसँ आबद्ध ओहन मानव समूहकेँ लोक कहलनि अछि जे कोनो खास परम्पराक स्वत्वक प्रति अभिमुख हो।[6] एतावता लोक शब्दक साम्प्रतिको अवधारणा जनसामान्ये अछि।

मिथिलाक लोकजीवनमे कर्मपर आधारित वैदिक वर्ण-व्यवस्थाक रिक्थ, व्यवसाय पर आधारित रूढ़ एवं जटिल जाति-व्यवस्थाक रूपमे विद्यमान अछि। सामाजिक आवश्यकताक अनुरूप कर्मविभाजनक निरन्तरगामी प्रक्रियासँ विभिन्न जातिक निर्माण होइत रहल। सामाजिक संस्तरणमे अपनाकेँ उच्च बुझबाक मनोवृत्तिसँ उपजातिक विभाजन सेहो होइत गेल। एहि तरहें लोकजीवनमे विशिष्ट सामाजिक व्यवस्थासँ युक्त विविध समूह देखि पड़ैत अछि जकर अपन परम्परा ओ संस्कृति विकसित भय गेल छैक। एहि परम्परा ओ संस्कृतिक पर्यवेक्षणसँ जातीय जीवनक ढाँचा ओ ऐतिहासिकताक विवेचन-विश्लेषणक दिशामे योगदान संभव।

लोकजीवनमे प्रचलित श्रुति साहित्यकेँ लोकसाहित्य कहल जाइत छैक। एकर दीर्घकालीन परम्परा ओ अपरिमित विस्तारमे लोकजीवनक वास्तविक झाँकी भेटैत अछि। आधुनिक सभ्यताक प्रभावसँ विरत निरक्षर ग्रामीण जनताक दैनन्दिन जीवनक उपभुक्त सुख-दुःख, भावानुभाव, लाभ-हानि, आचार-व्यवहार, हर्ष-विषाद, आशा-निराशा आदिक सहज ओ अकृत्रिम अभिव्यञ्जना लोकसाहित्यमे सहजोपलब्ध

रहल अछि। ई साहित्य अनभिज्ञात सामान्यजन द्वारा रचित सामान्यजनक हेतु सामान्यजनक साहित्य थिक शिष्ट साहित्यसँ पृथक्, दूर, उन्मुक्त; जकरा ने छन्द पिङ्गलक बन्धन छैक, ने क्रम-अनुक्रमक बाध्यता। परम्पराक प्रवाहमे निर्मित, विस्तृत, संकुचित ओ विस्मृत भऽ जायवला एहि साहित्यमे एकरूपता ओ समरसताक अभाव होइतो रूढ़ क्षेत्रीयताक सुमधुर आस्वादक कारणेँ एकरा प्रति जनसामान्यक विशिष्ट आकर्षण ओ व्यामोह दृष्टिगोचर होइत अछि। दैनन्दिन लोकजीवनक क्रम-उपक्रम एहि साहित्यक आधारभूमि रहैत अछि आ जातीय संस्कृतिक उच्छल अनुराग भाव भूमि। लोकजीवन ओ लोकसंस्कृतिकेँ अपन समस्त आरोह-अवरोहक संग एहिमे अभिव्यक्त होयबाक अवसर भेटैत छैक। फलतः लोकजगतक भाषा, वेश, मनोवांछा, कल्पना-जल्पना, रूढ़ि-विश्वास अपन प्रकृत स्वरूपमे एहि साहित्यमे प्रस्फुटित होइत अछि। एकरा ओ लोकरंजनी साहित्य कहल गेल अछि जे सर्वसाधारण समाजक मौखिक रूपमे भावमय अभिव्यक्ति करैछ।[7]

लोकश्रुति, लोकमंत्र, लोक-अनुष्ठान, लोकविश्वास, लोकोक्ति, लोकनृत्य, लोकनाट्य, लोकगीत, लोककथा आदिये जकाँ लोकगाथा सेहो लोकसाहित्यक महत्त्वपूर्ण विधा थिक। वैदिक युगमे शुभ अवसर पर गाओल जायवला गीतकेँ गाथा कहल जाइत छल।[8] गोस्वामी तुलसीदास रामकथाक पद्यात्मक स्वरूपकेँ गाथा कहलनि अछि।[9] अवश्ये गाथाक स्वरूपमे दुइ गोट वस्तु आधार रूपमे वर्त्तमान बूझल जाइत छल होयत गेयधर्मिता ओ कथातत्त्व। लोकगाथामे सेहो ई दुइ गोट तत्त्व संश्लिष्ट रूपमे देखल जाइत अछि। परन्तु लोकगाथाक स्वरूप स्थिर नहि रहैत अछि। गायकक प्रभावसँ ई परिवर्तित, परिवर्द्धित-संवर्द्धित होइत रहैछ। तेँ एकरा व्यक्ति विशेषक साहित्य नहि कहल जा सकैछ अपितु ई सम्पूर्ण समाजक धरोहर होइछ। क्षेत्र विशेषक प्रथा, परम्परा, व्यवहार आदिक प्रभावान्वितिक कारणेँ एकेटा लोकगाथा विभिन्न क्षेत्रमे भिन्न-भिन्न स्वरूपमे भेटि सकैत अछि मुदा ओहिमे मौलिक एकता बुझना जाइत छैक।

हमरा विचारेँ शिष्ट साहित्यमे जे स्थान महाकाव्यक छैक, सैह महत्त्व ओ स्थान लोकसाहित्यमे लोकगाथाकेँ छैक। वास्तवमे 'लोकगाथाकेँ लोकसाहित्यक महाकाव्य कहल जा सकैत अछि। महाकाव्यक नायक इतिहास प्रसिद्ध होइत छथि आ लोकगाथाक नायक लोक प्रसिद्ध। महाकाव्यक नायक उच्चकुलसम्भूत होइत छथि। लोकगाथाक नायक सामान्य जनसमुदायमे उत्पन्न भेल रहैत अछि। कोनो सामान्य कुलक व्यक्ति अपन शौर्य, पराक्रम, त्याग, बलिदान अथवा अन्य विशिष्ट

कार्यक सम्पादन कऽ गाथाक नायक बनि जाइत अछि। मिथिलामे जतेक जाति अछि सबमे कोनो ने कोनो एहन नायकक गाथाक प्रचलित अछि। ई गाथा सब श्रुति परम्परासँ पुस्त दर पुस्त चलि आबि रहल अछि। एहन मान्यता अछि जे ई नायक सभ दिव्यशक्ति सम्पन्न छलाह। अपन जीवनकालमे अलौकिक कार्य सम्पादन करबे कएलनि परन्तु अपार्थिवो रूपमे निरन्तर दुखिआक गोहारि करैत छथि। तेँ लोकदेवताक रूपमे एखनो पूजित-प्रतिष्ठित छथि। हुनक गाथा-गानमे धार्मिक भावना संयुक्त अछि। (स्वदेश दैनिक, दरभंगा, 25 अगस्त, 1982)।

मिथिलाक जनजीवनमे एहन लोकदेवताक जीवन ओ ओकर शौर्य, दया मानसिक शक्ति, शारीरिक बल, अद्भुत सामर्थ्य ओ विलक्षण चमत्कारक गीतिकथा भजन-कीर्त्तनक रूपमे विभिन्न जातिमे प्रचलित अछि। गितहर, मनरिया, भगत आदिक कंठमे बसल ई गीतिकथा वा लोकगाथा एखनहु जीवन्त अछि। एकर माध्यमसँ गितहर अपन श्रोताकेँ सहजहिँ भावसमुद्रमे अवगाहन करबैत रहैत अछि।

मिथिलाक जनजीवनमे पूजित लोकदेवता सभमे अमरसिंह, अलखिया, कमला, काली, कलाली, किरञ्ची, कुसियारमल, केवल, कुमरविनोदी, कारिख, कोइला, कोरल, कालिदास, गणिनाथ-गोविन्द, गहिल, गाँगो, गैरबाबा, गौरैया, जलपा, झम्मनमरड़, झालाराम, ठीठामल, डीहबाबा, दयाराम, दीना-भद्री, दुलरा दयाल, धर्मराज, नाग, पचपिढ़िया, पीरबाबा, फेकूराम, बरहम, बन्दी, बौधूराम भगवती, भैरव, मनुषदेवा, महिषासुर, मातर, मीरा, मोतीदाइ, रइयारनपाल, रकतमाला, रामठाकुर, राहु, लुकेशरि, विषहर, वेणीराम, सलहेस, ससिया, सहोदरा, सुल्तान खाँव, सुट्टी कुम्मरि, सूर्याऊ, सोखा, हुलहुली, क्षत्री आदि भिन्न-भिन्न जातिक जातीयदेवता, कुलदेवता ओ गृहदेवताक रूपमे प्रतिष्ठित छथि। हिनका लोकनिक पूजा विशिष्ट अवसर पर कएल जाइत अछि। खस्सी, पाठी, भेड़ा, दारू, टिकुली, सेनुर, मुर्गा, ठढ़िया, सिरनी, फूल, पान आदि हिनका लोकनिक विशिष्ट चढ़ौना छनि। हिनका रिझयबाक हेतु विभिन्न प्रकारक लोकगीत लोकजीवनमे प्रचलित अछि जकर माध्यमे हिनक गाथाकेँ प्रस्तुत कएल जाइत अछि। किछु खास व्यक्ति हिनक उपासक होइत अछि आ सुमिरन कयला उत्तर देवताक अंशकेँ अपना पर आवाहन करैत अछि। एहन व्यक्तिकेँ ओहि लोकदेवताक भगत अथवा घोड़ा कहल जाइत अछि। भगत द्वारा देवताकेँ मना कऽ दुखिआक दुःखहरण करबाक क्रियाकेँ 'गोहारि' कहल जाइत छैक। बच्चाक कष्ट हरबाक हेतु गोहारिकेँ बालकगोहारि, स्त्रीक कष्ट हरबाक हेतु गोहारिकेँ तिरियागोहारि ओ माल-जालक कष्ट हरबाक हेतु गोहारिकेँ गायगोहारि कहल जाइत छैक।

देवताक आवाहन ओ गोहारिक हेतु अनुष्ठानकेँ 'भाओ' कहल जाइत छैक। भाओ करबाक समय एकटा भजनमंडली गान करैत अछि। एहिमे भगतक चारू कात घूमि-घूमि मानरिपर थाप देबएवला व्यक्ति मनरिया कहबैत अछि, ओकरा संग झालि बजौनिहार झलैता होइत अछि आ लोकदेवताक गीत गौनिहार गितहर। भगतक हेतु अच्छत-फूलक डालीकेँ पकड़निहार डलिबाह होइत अछि जे कालक्रममे भगतक शिष्य बनि भगत-परम्पराकेँ आगाँ बढ़बैत अछि। जकर गोहारि होइत छैक से कारनी कहल जाइछ। कारनीक समूह 'गोहनिञा' कहल जाइछ।

मिथिलामे प्रचलित लोकगाथा सभक प्रकरण-विभाजनक अपन विशिष्ट परिपाटी छैक। लोकदेवताक जन्मसँ सम्बद्ध कथाकेँ जनमौटी, द्विरागमनसँ सम्बद्ध कथाकेँ गओनौती वा गोनौती आ मृत्युसँ सम्बद्ध कथाकेँ मरौटी कहल जाइछ।

लोकगाथा गौनिहार दुइ प्रकारक मानल जाइछ। किछु गोटेकेँ कोनो लोकगाथा अनासुरती स्मृतिमे आबि जाइछ। एहन विश्वास कएल जाइछ जे लोकदेवता अपन गाथा व्यक्तिविशेषकेँ स्वप्नमे अनायास प्रदान करैत छथिन। एहन गाथा 'सपनौती' कहल जाइछ। जे गाथा ककरोसँ सुनि कऽ सीखल जाइछ से 'सिखौंती'/'सीख' कहल जाइछ।

मिथिलामे प्रचलित विभिन्न लोकगाथाक अध्ययन-अनुशीलनसँ ई तथ्य स्फुट होइत अछि जे विभिन्न लोकगाथाक नायकक जीवनमे तथ्यात्मक एकता अछि। सभ कथाक नायक अद्‌भुत पराक्रमशील होइछ। जनमिते माएसँ सबाल-जबाब करैछ। नाड़ि-पुरैनि कटलो ने रहैत छैक तखनेसँ सऽरों खेलयबाक योग्यतासँ पूर्ण रहैछ। कतहु प्रस्थान करैत काल माएसँ आशीष अवश्ये लैत अछि। आपत्ति अयबासँ पूर्वधरि सात निन्ने मुनहर घरमे सूतल रहैत अछि। गओनाक चारि दिनुक बादे अद्‌भुत पराक्रमक हेतु प्रस्थान करैत अछि। सबकेँ कोनो खास भगवतीक कृपा प्राप्त रहैत छैक। भगवतीक सहाय रहला पर विजय आ विमुख रहला पर पराजय होइछ। सब इन्द्रासन जाइत अछि। सत्त करैत अछि। मुइलाक बाद अपन संस्कारक व्यवस्था करैत अछि। श्राद्धमे पात-भात परसैत देखल जाइछ। कखनो प्रकट भय जाइछ आ खने अलोपित भय जाइछ। अदृष्टे रूपमे तिरियोसँ भेट करैत अछि। एहिना अद्‌भुत कथा-प्रसंगक एकटा पैघ श्रृंखला देखि पड़ैछ।

तथापि लोकगाथामे मैथिली लोक-संस्कृति, भाषां-वेश, आचार-व्यवहार, माटि-पानि, जीवन-दर्शन अपन मूलरूपमे संरक्षित देखि पड़ैछ। कमला, तिलयुगबा, गंगा आदि मिथिलाक भूगोल सेहो लोकगाथामे समेटल देखि पड़ैछ। तेँ मैथिली लोकसाहित्यक ई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सम्पत्ति थिक।

हमरा प्रसन्नता अछि जे डा. योगानन्द झा सन उत्साही युवा अनुसन्धाता एहि दिशामे मौलिक कार्य करबाक हेतु अग्रसर भेलाह अछि। वास्तवमे श्रीयोगानन्द झा अपन पी-एच.डी. शोध-प्रबन्ध **'मैथिलीक प्रमुख पारम्परिक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावलीक व्याख्यात्मक अध्ययन'**क हेतु सामग्री संकलन करऽ लगलाह तखन हमरा विचारेँ विभिन्न जातिक जातीय स्वरूप, परम्परा, रूढ़ि, विश्वास, आचार, व्यवहार, पूज्य देवता ओ तनिक स्तुति ओ गाथा सबहिक संकलन करैत गेलाह। यद्यपि ई हुनक शोध-सीमासँ बहिर्गत छल तथापि भावी अनुसन्धानक हेतु महत्त्वपूर्ण आधारभूत सामग्री सहजहि बाइ-प्रोडक्टक रूपमे प्राप्त होयबाक अवसरकेँ छोड़ल नहि जा सकैत छल। ओ जे सामग्री संकलन कएल तकर एक अंशमात्र एहि पुस्तकक रूपमे प्रस्तुत भऽ रहल अछि।

लोकजीवनक अन्तर्गत मिथिलाक छओ गोट विशिष्ट व्यावसायिक जाति क्रमशः डोम, चमार, धोबि, हलुआइ, मलाह ओ कुरेड़ीक सामाजिक स्वरूपक परिचय देल गेल अछि। अनुसन्धाता सामाजिक स्वरूपक परिचय प्राप्त करबाक लेल ओकर अन्तरालमे प्रवेश करबाक चेष्टा कएलनि अछि। जातीय जीवनक स्वरूपकेँ निकटसँ, सूक्ष्मतासँ देखबाक प्रयत्न भेल अछि। अवश्ये एहिमे जे धैर्य, समय ओ खोजी दृष्टिक अपेक्षा होइछ जे योगानन्दजी देखौलनि अछि। वास्तवमे एखन धरि एहन अध्ययनक कोनो प्रयासे ने भेल छल। हमर विश्वास अछि जे एहि ठाम प्रदत्त-सूचना-सामग्री रोचक तँ अछिए, संगहि समाजशास्त्रीय अध्ययनक हेतु अनुच्छिष्ट तथ्य सेहो सिद्ध होयत।

दोसर खण्डमे एहि जाति सभक मध्य प्रचलित लोकदेवता विषयक बारह गोट लोकगाथाक परिचयात्मक विवरण देल गेल अछि। एहि सबमे दू-एकटाकेँ छोड़ि, सब सर्वथा पहिल बेर प्रकाशमे आबि रहल अछि। मैथिली लोकसाहित्यमे लोक गाथापक्ष कतेक समृद्ध, कतेक वैविध्यपूर्ण अछि, तकर सहज परिचय एहि ठाम भेटि जाइत अछि। कहबाक प्रयोजन नहि जे ई लोकगाथा सब मिथिलाक भाषा, साहित्य, समाजक अतीतकालीन स्वरूप, विश्वास, आचार, विचार ओ परम्पराक रोचक चित्र प्रस्तुत करैत अछि।

समाजक विकासक जे प्रवाह चलि रहल छैक, परिवर्त्तनक जे गति छैक, आधुनिकताक जे रंग पसरि रहल छैक, ताहिमे एहि लोकगाथा सभक अस्तित्व कतबा दिन धरि रहि सकत से अनुमान करब कठिन नहि अछि। आवश्यकता अछि जे एकरा सबकेँ लुप्त होयबासँ पूर्वहि लिपिबद्ध कऽ लेल जाय। एहिमे प्रयोजन अछि

नव, उत्साही, धैर्यवान ओ संवेदनशील युवा अनुसन्धाता लोकनिक। श्रीयोगानन्द झामे ई गुण विद्यमान छनि। मैथिली अनुसंधान जगत हिनकासँ बहुत किछु अपेक्षा रखैत अछि।

एहि पुस्तकक कतोक सामग्री पूर्वहु विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित भए चुकल अछि तथापि एकरा सबहक व्यवस्थित ओ समेकित संकलन मैथिली लोक साहित्यक अध्ययनक दिशामे महत्त्वपूर्ण योगदान कऽ सकत से विश्वासपूर्वक कहल जा सकैत अछि। विश्वास अछि जे एहि पुस्तकक स्वागत कएल जाएत। लेखकक प्रति हमर हार्दिक शुभकामना-संबर्द्धना।

संदर्भ संकेत

1. पतञ्जलि महाभाष्य, 1/1/1
2. नाट्यशास्त्र-भरत, 6/24
   लोकधर्मी नाट्यधर्मी धर्मीति द्विविधः स्मृतः।
3. महाभारत, आदि पर्व 1/84
   सत्यात्मा भव राजेन्द्र सत्ये लोकाः प्रतिष्ठिताः।
4. गीता, 3/21, 11/32, 11/43 आदि।
5. लोकसाहित्य विज्ञान डा. सत्येन्द्र, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं., दिल्ली, 1962, पृ.3
6. एसेज इन फोकलोरिस्ट एलन डून्ड्स, फोकलोर इन्स्टीच्यूट, मेरठ, 1978; प्रीफेस
7. भोजपुरी लोकगाथा डा. सत्यव्रत सिन्हा, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 1957, भूमिका।
8. ऋग्वेद, 1/7/1
   इन्द्रमिदं गाथिनो महत्
9. रामचरितमानस-तुलसीदास, बालकाण्ड, श्लोक 7
   स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा
   भाषानिबन्ध मति मञ्जुलमातनोति।।

डा. रामदेव झा

रीडर, मैथिली विभाग
ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा

वर्ष प्रतिपदा, वि. सं. 2043
तदनुसार 10 अप्रील, 1986

लेखकीय

लोक शब्दक सामान्य अवधारणा अछि जनसामान्य। डा. सत्येन्द्र मानव-समाजक ओहि वर्गकेँ लोक कहलनि अछि जे आभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता ओ पांडित्य-चेतना अथवा अहंकारसँ शून्य अछि आ एकटा परम्पराक प्रवाहमे जीवित रहैछ (लोकसाहित्य विज्ञान-डा. सत्येन्द्र, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं. दिल्ली, 1962, पृ.-3)। समाजक एहि वर्ग-विशेषक जीवनमे प्रचलित श्रुतिसाहित्यकेँ लोकसाहित्य कहल जाइछ। ई साहित्य अनभिज्ञात सामान्य-जन द्वारा रचित, सामान्य जनक, हेतु सामान्य जनक साहित्य थिक जे शिष्ट शास्त्रीय साहित्यसँ सर्वथा पृथक् प्रकृतिक होइछ। एहि साहित्यमे ने तँ छन्द-पिंगलक बन्धन होइत छैक, ने क्रम-अनुक्रमक बाध्यता रहैत छैक आ ने साहित्यशास्त्रीय रस, ध्वनि, अलंकार, रीति, वक्रोति, औचित्य, गुण आदि रचना-प्रक्रियाक समावेशक प्रौढ़ वा कृत्रिम प्रयत्नक आवश्यकते रहैत छैक।

तथापि लोकसाहित्यक परम्परा सुदीर्घकालीन अछि आ विस्तार अपरिमित। एहि साहित्यमे लोकजीवनक प्रतिच्छवि अंकित-टंकित भेटैछ। आधुनिक सभ्यताक प्रभावसँ दूर निरक्षर ग्रामीण जनताक दैनन्दिन जीवनक उपभुक्त सुख-दुःख, भावानुभाव, लाभ-हानि, आचार-व्यवहार, हर्ष-विवाद, आशा-निराशा आदिक सहज ओ सर्वथा अकृत्रिक अभिव्यंजना, सर्वसाधारण समाजक मौखिक रूपमे भावमय अभिव्यक्ति, एकरूपता ओ समरसताक अभाव होइतो रूढ़ क्षेत्रीयताक सुमधुर आस्वाद, लोकजीवनक आधार रूढ़ जातीय संस्कृतिक उच्छल अनुरागसँ युक्त एहि लोकरंजनी साहित्यमे लोकजीवन ओ लोकसंस्कृतिकेँ अपन समस्त आरोह-अवरोहक संग प्रतिस्थापित देखल जा सकैछ। लोकजगतक भाषा-वेष, मनोवांछा, तृष्णा, कल्पना-जल्पना, रूढ़ि-विश्वास आदि अपन प्रकृत स्वरूपमे एही साहित्यमे प्रस्फुटित पाओल जाइछ।

लोकसाहित्य शास्त्रीय परिपाटीसँ आबद्ध नहि रहैछ। एहिमे परम्परासँ अबैत लोकविश्वास, लोकरूढ़ि, लोककथ्य एवं विशिष्ट शैली एकरा शिष्ट साहित्यसँ पृथक् कयने रहैत छैक। क्रमहि युगविशेषक लोकसाहित्य जखन

नागरजन द्वारा परिनिष्ठित साहित्य मध्य परिगृहीत कऽ लेल जाइछ तँ ओहिमे कृत्रिमता आबि जाइत छैक आ ओ शिष्ट साहित्य मध्य परिगणित होमऽ लगैत अछि ।

मैथिलीक लोकसाहित्य आने समृद्ध भाषाक लोकसाहित्य जकाँ अत्यन्त समृद्ध अछि। आचार्य रमानाथझा आदि साहित्यिक ग्रन्थ वर्णरत्नाकरसँ पूर्वक जाहि जनमनोरंजक आ जनजीवनक उपकारी रचनाक चर्चा कयलनि अछि, से सब मैथिलीक प्राचीन लोकसाहित्येक विधा मध्य परिगणित कयल जा सकैछ (द्रष्टव्य, प्रबन्ध संग्रह-रमानाथ झा, दरभंगा प्रेस कं. प्रा. लिमिटेड, 1963, पृ. 63)। हुनका मतेँ वर्णरत्नाकरसँ प्राचीन निम्नलिखित कोटिक रचना भेल छल–

(अ) जनमनोरंजक

(क) व्यावहारिक, सामयिक, भक्तिक, नृत्यक, मुक्तक

(ख) वीरगाथा-भाट, दशजुधी प्रभृतिक रचना

(ग) तत्तत् जातिक वीरलोकनिक गाथा

(घ) तत्तत् जातिक देवतालोकनिक आराधनाक

(ङ) प्रबन्धकाव्य, गद्यमे वा पद्यमे

(च) कथा-गद्यमे, पावनि सबहिक तथा प्रमोदार्थ

(आ) जनजीवनक उपकारी

(क) कृषि, यात्रा, शकुन प्रभृतिक (ख) धर्मोपदेशक

(ग) धर्मप्रचारक (घ) भजन

डा. श्रीमती अणिमा सिंह लोकसाहित्यक वर्गीकरण विधाक आधार पर कयलनि अछि (द्रष्टव्य, मैथिली साहित्यक रूपरेखा, द्वितीय खण्ड, चेतना समिति, पटना, 1974, पृ. 6), जे निम्नस्वरूपक अछि–

(क) लोकगीत (ख) लोकगाथा

(ग) लोककथा (ग) लोकनाट्य

(ङ) बुझौअलि (च) फकड़ा

(छ) वचन

यद्यपि श्रीमती सिंहक ई वैज्ञानिक वर्गीकरण मैथिली लोकसाहित्यक अध्ययनक मार्गकेँ प्रशस्त करबाक हेतु अत्यन्त समीचीन ओ तर्कसंगत अछि

तथापि एकरा पूर्ण नहि कहल जा सकैछ। एहि वर्गीकरणकेँ आर व्यवस्थित ओ पल्लवित कयल जा सकैछ।

मैथिली लोकसाहित्यकेँ एकटा भिन्ने दृष्टिकोणसँ देखब अपेक्षित अछि। एहि साहित्य मध्य ओहि समस्त उपेक्षित तत्त्वकेँ समेटब आवश्यक अछि जे मैथिली भाषा साहित्यक आधारशिलाक रूपमे विकासमान अछि। एहि दृष्टिजे मैथिलीक समस्त लोक-साहित्यकेँ विधानुरूप वर्गोपवर्गीकरणक उपरान्त जे सूची प्राप्त होयत से निम्नस्वरूपक होयत–

(क) लोकशब्दावली

(ख) लोकनृत्य

(ग) लोकनाट्य

(घ) लोकगाथा

(ङ) गाथागीत

(च) लोकगीत

(छ) लोककथा

(ज) लोकोक्तिओ मोहावरा

(झ) लोकश्रुति ओ किंवदन्ती

(ञ) फकड़ा

(ट) लोकमंत्र

(ठ) बुझौअलि

लोकशब्दावलीः

मैथिलीमे तीनं प्रकारक शब्दावली दृष्टिगोचर होइछ। एक प्रकारक शब्दावली ओ अछि जकर प्रयोग दैनन्दिन जीवनमे निरन्तर होइत रहैछ। दोसर प्रकारक शब्दावली ओ अछि जकर प्रयोग सामान्यतः शिष्टे साहित्य धरि सीमित अछि आ तेसर प्रकारक शब्दावली ओ अछि जकर प्रयोग ने तँ दैनन्दिन जीवनमे होइत छैक, ने शिष्ट साहित्यिक भाषामे। एहन शब्दावलीक प्रयोग विशिष्ट व्यवसायमे विशिष्ट वस्तु ओ अर्थक द्योतनक हेतु विशिष्ट प्रयोजनसँ होइत छैक। कहल जा सकैछ जे विशिष्ट परिवेश ओ क्षेत्रे धरि एहन शब्दावलीक प्रयोग सीमाबद्ध रहैछ। पारिभाषिक रूपेँ ई तकनीकी शब्दावली

साहित्य ओ समाजसँ उपेक्षित रहितहुँ वर्ग विशेषक विशिष्ट शब्दावली होइछ। शिष्ट साहित्यसँ सामान्यत: अवडेरल ई शब्दावली लोकजगतक संचालनमे महत्त्वपूर्ण भूमिका रखैछ आ भाषाक महत्त्वपूर्ण सम्पदा थिक। क्रमिक संक्रमण भाषाक एहि महत्त्वपूर्ण सम्पदाक रूप ओ अर्थ तथा अस्तित्वहुमे विघटनकारी परिवर्त्तन आनि दैछ, जकर परिणामस्वरूप लोकजगतमे परिव्याप्त एहि शब्दावलीमे संरचनात्मक ओ प्रयोगात्मक परिवर्त्तन परिलक्षित होमऽ लगैछ आ कखनो काल शब्दलोप ओ अर्थलोपो भऽ गेल करैछ। तेँ शिष्ट जन ओ साहित्यिक प्रयोगसँ विमुक्त एहि शब्दावलीकेँ लोकशब्दावलीक रूपमे परिगृहीत कयल जा सकैछ। डोमक द्वारा प्रयुक्त ढाकी, छिट्टा, खैंचा, डाला, चालनि, लीलीमौनी, दौरा, दौरी, छितनी, मेघडम्मर, लारनि, सीकी, सिरकी आदि तेँ दैनन्दिन प्रयोगक शब्दावली थिक जे शिष्टो साहित्यमे परिवेश समुपस्थित भेला पर स्थान ग्रहण कऽ लैछ मुदा ओकर तकनीकी शब्द बांके, करदा, गभिया, पिठिया, लधना, पाट, गाद, कोचरी, बोनी, बसौती, गभौट, छीटक, दलिया, कनरी, बक्खी, तेरौन, मण्डी, चोप, धीरा, छाँछी, हड़िड़ा, गच्चा, टिपका आदि एहि जातिक जातीय व्यवसाये धरि सीमित क्षेत्रक प्रयोगमे अबैछ। तेँ एहन शब्दावलीकेँ लोकशब्दावली कहल जा सकैछ। मैथिली लोकशब्दावलीक ई क्षेत्र अत्यन्त समृद्ध अछि। बरही, लोहार, सोनार, कुम्हार, कसेरा, मलाह, पटवा, जोलहा, दर्जी, रङरेज, धोबी, धुनिञा, गरेड़ी, कानू, हलुआइ, नौआ, तेली, नोनिञा, बेलदार, राजमिस्त्री, वैद्य, शिकलगर, महापात्र, गंगापुत्र, पंडित, पुरहित, कुरेड़ी, बरइ, पासी, सूड़ी, कलवार, चमार, माली आदिक जातीय व्यवसाय तथा कृषि, गोरक्ष्य, सेवा, वाणिज्यादि विविध निरपेक्ष व्यवसायमे एहन शब्दावलीक भंडार सुरक्षित-संरक्षित अछि।

लोकनृत्य:

अंग संचालनपूर्वक भावप्रदर्शन ओ संगीतादिक लोकरंजनी क्रियाकेँ लोकनृत्य कहल जाइछ। मिथिलाक लोकजीवनमे प्रचलित लोकनृत्यमे, झरनी, मरसिया, झिझिया, कठपुतरी आदि प्रसिद्ध अछि। झरनी ओ मरसिया मुसलमान जातिक क्रमश: सुन्नी ओ शिया सम्प्रदायमे प्रचलित अछि जाहिमे कर्बलाक लड़ाइमे हसन-हुसैनक गाथागानपूर्वक चक्रनृत्यक आयोजन कयल जाइछ। द्रष्टव्य अछि सैयद दुलहिनक लोकजीवनक चित्रांकनसँ सम्बद्ध ई झरनी–

हाए जी, कोने उगलइ चान सुरुजबा कोने उगलइ तारा
कोने दुलहिन अङना बहारे जी।।
हाए जी, पुरबे उगलइ चान सुरुजबा पछिमे उगलइ तारा
सैयद दुलहिन अङना बहारे जी।।
हाए जी, अङना बहारिते सासु टुटलइ बढ़निञा
ताहि लय पढ़ै छइ सासु गारिये जी।।
हाए जी, जुनि गारी दिऔ सासु जुनि उलहनमा
नैहरा से बढ़नी मँगाएब जी।।
हाए जी, आगू आगू आबै सासु बढ़नीके भरिया
पाछू पाछू आबै जेठ भइये जी।।
हाए जी, किए बैसक देबै सासु बढ़नीक भरिया
किए बैसक देबै जेठ भइये जी।।
हाए जी, पटिये बैसेबै सासु बढ़नीके भरिया
अँचरे बैसेबै जेठ भइये जी।।
हाए जी, किए भोजन देबै सासु बढ़नीके भरिया
किए भोजन देबै जेठ भइये जी।।
हाए जी, पूरी भोजन देबै सासु बढ़नीके भरिया
खोआ भोजन देबै जेठ भइये जी।।
हाए जी, किए विदाइ देबै सासु बढ़नीके भरिया
किए विदाइ देबै जेठ भइये जी।।
हाए जी, धोती कुर्त्ता देबै सासु बढ़नीके भरिया
छोटकी ननदिया जेठ भइये जी।।

झिझिया लोकनृत्य दशहराक अवसर पर कयल जाइछ। एहि पर मिथिलाक तंत्र-साधनाक प्रभाव परिलक्षित होइछ। द्रष्टव्य अछि एहि नृत्यक संग ग्रामीण लोकनिक गायनक एक गोट प्रसंग–

हँसुली गढ़ा दय हो बंगाली बाबू हँसूली गढ़ा दय हो।
हँसुली पहिरि हम झिझिया खेलबै डनिञा देखतै हो।।

एहिना आनो-आन लोकनृत्य सभक आयोजन क्षेत्र-विशेषमे होइत होयत जेना कोशी क्षेत्रमे कोशी गीतक बहार लोकनृत्ये प्रणाली पर आधारित अछि (द्रष्टव्य, कोशी-गीत-ब्रजेश्वर मल्लिक, मल्लिक सदन, बड़गाँव, मधेपुरा)। भाओ, गोहारिकेँ सेहो लोकनृत्येक अन्तर्गत राखल जा सकैछ।

लोकनाट्य:

अवस्थानुकरणपूर्वक लोकरंजनी दृश्यकाव्यकेँ लोकनाट्य कहल जा सकैछ। मिथिलाक लोकजीवनमे जट-जटिन, सामा-चकेवा, डोमकछ, पमारा आदि लोकनाट्य अत्यन्त जीवंत अछि। जट-जटिन लोकनाट्यमे दाम्पत्य-जीवनक उतराचौरी, सामाचकेबामे भाइ-बहिनक स्नेह सम्बन्धक उत्कर्ष, पमारामे नेनाक जन्मोत्सवक बधैया तथा डोमकछमे मानवीयताक उत्कर्षक चरम स्थिति देखाओल गेल अछि। संगहि इहो ध्यातव्य अछि जे सलहेस, दीनाभदरी, लोरिक, बौआ बख्तौर, घुघली-घटमा आदि यावन्तो लोकगाथा अछि, तकरा लोकनाट्यक रूपमे प्रस्तुत करबाक विधान अछि। अन्तर एतबे रहैछ जे गाथा जतय पद्यात्मकेटा भेटैछ; लोकनाट्यक स्वरूपमे अबैत-अबैत हास्य-सृष्टि वा प्रसंगकेँ सम्बद्ध करबाक हेतु गद्यात्मक संवादसँ सेहो संयुक्त भऽ गेल करैछ।

लोकगाथा:

लोकगाथासँ लोकसाहित्यक ओहि विधाक बोध होइछ जकर आधारमे दुइ गोट वस्तु वर्त्तमान बूझल जाइछ—गेयधर्मिता ओ कथातत्व। एही दुहू तत्त्वक संश्लिष्ट संयोग लोकगाथाक स्वरूपरचनाक कारण होइछ।

डा. रामदेव झा लोकगाथाक सम्बन्धमे विचार जे 'लोकगाथाकेँ लोकसाहित्यक महाकाव्य कहल जा सकै अछि। महाकाव्यक नायक इतिहास प्रसिद्ध होइत छथि आ लोकगाथाक नायक लोकप्रसिद्ध। महाकाव्यक नायक उच्चकुलसम्भूत होइत छथि। लोकगाथाक नायक सामान्य जनसमुदायमे उत्पन्न भेल रहैत अछि। कोनो सामान्य कुलक व्यक्ति अपन शौर्य, पराक्रम, त्याग, बलिदान अथवा अन्य विशिष्ट कार्यक सम्पादन कऽ गाथाक नायक बनि जाइत अछि। मिथिलामे जतेक जाति अछि सबमे कोनो ने कोनो एहन नायकक गाथा सब श्रुति-परम्परासँ पुस्त-दर-पुस्त चल आबि रहल अछि। एहन मान्यता अछि जे ई नायक सभ दिव्य शक्तिसम्पन्न छलाह। अपन जीवनकालमे अलौकिक कार्य-सम्पादन करबे कयलनि परन्तु अपार्थिवो रूपमे निरन्तर दुखिआक गोहारि

करैत छथि। तेँ लोकदेवताक रूपमे एखनो पूजित-प्रतिष्ठित छथि। हुनक गाथा-गानमे धार्मिक-भावना संयुक्त अछि' (द्रष्टव्य, दैनिक स्वदेश, 25 अगस्त 1982,) सर्वथा समीचीन अछि।

मिथिलाक लोकजीवनमे लोकगाथाक परम्परा अत्यन्त प्राचीन ओ समृद्ध अछि। दुसाध जातिमे राजा सलहेसक; मुसहर जातिमे दीनाभदरीक; नौआ ओ कुरेड़ी जातिमे वेणीरामक; गोप जातिमे कारू खिरहर, बौआ बख्तौरक; मलाह जातिमे जयसिंह, अमरसिंह, केवल महाराज, दुलरा दयालक; हलुआइ जातिमे गणिनाथ-गोविन्द, फेकूरामक; धोबी जातिमे गरीबन भुइञाक, चमार जातिमे लुकेशरि, लालवन बाबाक; डोम जातिमे श्यामसिंहक लोकगाथा अत्यन्त प्रचलित अछि। लोकगाथा सभमे लोरिकाइन, घुघलीघटमा, रायरणपाल, नैका बनिजारा, राजा विजयमल, राजा ढोलन सिंह, मरुअनि, हिरनी-बिरनी, गोपीचन्द-मायावती, कुमार-वृजभान, कारिख, जोतिक, कालिदास, मीरायण, सती विहुला आदि प्रमुख अछि। ई समस्त लोकगाथा दीर्घ आख्यानपरक ओ गेय अछि।

गाथागीत:

लघु आख्यानसँ युक्त लोकगाथाकेँ कथागीत, गीतकथा, गाथागीत कहल जाइछ। शिष्ट साहित्यिक भाषामे एकरा लोकसाहित्यक खण्डकाव्य-पद्यकथा कहल जा सकैछ। मिथिलाक लोकजीवनमे एहि गाथागीतहुक अतिव्याप्ति अछि। मिथिलाक लोकजीवनमे पूजित लोकदेवता सभमे कमला, काली, बन्दी गौरैया, कलाली, किरंची, कोरल, कुसियारमल, झालाराम, ठीठामल, नाग, पंचपिढ़िया, राहु, रामठाकुर, रकतमाला, भगवत्ती, भैरव, मनुषदेवा, महिषासुर, मातर, मीरा, मोतीदाइ, दयाराम, डीहबाबा, बौधूराम, धर्मराज, झम्मन मरड़, गैरबाबा, बरहम, जलपा, हुलहुली, हलुमान, सुल्तान खाँव, सूर्याऊ आदि विभिन्न जातिक जातीय देवता, कुलदेवता ओ गृहदेवताक रूपमे प्रतिष्ठित छथि। हिनका लोकनिक आराधनासँ सम्बद्ध प्रबन्धात्मक गीत गायनक परम्परा देखि पड़ैछ जे गाथागीतक नामे अभिहित कयल जा सकैछ। गाथागीतमे लोकजीवनक सहज अभिव्यक्ति तथा कान्तासम्मित उपदेश-योजनाक सुघड़ नियोजनक निदर्शन उतिमाक गाथागीत (द्रष्टव्य, गीतनाद, विभूति आनन्द/ज्योत्स्ना आनन्द, भवानी प्रकाशन, मुसल्लहपुर, पटना-6, 1986 गीत सं. 191) मे

देखल जा सकैछ–

नहाय सोनाय उतिमा भीड़ चढ़ि बैसलि
उतिमा झाड़ै छै नामी केसिया रे की
घोड़बा चढ़ल आबै जालिम सिंह रसिया
उतिमा सुरतिया देखि लोभयलै रे की
कहाँ गेल किए भेल होरिलसिंह सिपहिया
उतिमा के कय दिऔ दाने रे की
केशिया झाड़ैत उतिमा भैया आगू ठाढ़ भेली
भौजो कहय हुनको कुबोलिया रे की
अगिया लगेबो उतिमा तोरी नामी केशिया
बजर खसेबौ सुरतिया रे की
कहाँ गेल किए भेल गाम कोतबलबा
दुइ बोझ करची कटायब रे की
एतबा वचन सुनलनि होरिलसिंह सिपहिया
झट दए डोलिया फनाबै रे की
एक कोस गेली उतिमा दुइ कोस गेली
तेसरे मे लागल पिआस रे की
गोर लागू पैञा पड़ू अगिला कहरिया
चुरु एक पनिञा पिआबह रे की
एक चुरु पील उतिमा दोसर चुरु पील
तेसरमे खीरय पताल रे की
हम ने जनलियौ उतिमा, तोहें डूबि मरबें
डेरबा पइसि इज्जति लितियौ रे की
बाबा कुल तारलै उतिमा भैया कुल तारलै
रखलै वियहुआ के मान रे की

एहिना गोपीचन, सरबनक आख्यानपरक लोकगीत, सम्मरि गीत, भाटक कतिपय प्रशस्ति पद्य, नट-नट्टिनक गोदना-गीत आदि सेहो गाथागीतेक मध्य

परिगणित कयल जा सकैछ। गोदना गीतक एकटा बानगी एतय प्रस्तुत कयल जाइछ–

आ रे बनके कउआ
दुइये गो खुद्दीके कारणमा सासुजी देलखिन बनवासे रे
आ रे वन के कउआ
झोरिओ देलखिन सुइयो देलखिन गामे गाम गोदना पड़ौलखिन रे
आ रे वन के कउआ
आ गे दाइ नटिनिञा
तोरे सनके बेटी छलइ तोरे सन सुरतिया
सेहो बेटी बसै ससुररियै गे, आ गे दाइ नटिनिञा
आ गे माइ मदोदरी
तोरे सन के मैया छलइ तोरे सन सुरतिया
तकरो बेटी गामे गाम गोदना पाड़इ छइ गे
आ गे माइ मदोदरी
आ गे दाइ नटिनिञा
जातियो के हम भात देबै कोतबलबाके टकबा
तोरो हम जतिये मिलेबौ गे, आ गे दाइ नटिनिञा

लोकगीतः

लोकजगतमे निर्मित, प्रचलित ओ संरक्षित गीतकेँ लोकगीतक अभिधान देल गेल अछि। सांस्कृतिक धरोहरक स्वरूपवला ई श्रुतिसाहित्य लोकजगतक प्रतिनिधि साहित्य थिक। मिथिलाक लोकजीवनमे अदौसँ प्रवहमान ई साहित्य सहज ओ सरल भाषा तथा निरलंकृत भाव-प्रवणताक कारणें लोकमानससँ निरन्तर जुड़ल रहल अछि। भक्ति, संस्कार ओ व्यवहारसँ मूलतः सम्बद्ध ई लोकसाहित्य मैथिल संस्कृतिक प्रतीकक रूपमे जनकंठमे वर्त्तमान रहल अछि।

लोकगीतक महत्त्वक सर्वाधिक प्रशस्त कारण अछि मिथिलाक सांस्कृतिक परिवेशक संगीतमयता। एतऽ धरि जे किछु सम्प्रदायमे तँ मत्युओक अवसर पर निर्वेदपरक गीत गाओल जाइछ। एहन कोनो क्षण नहि जखन एहिठामक सामान्यजन संगीत-सुधाक पान नहि करैत होथि। बूढ़-बुढ़ानुसक पराती ओ

गामक शिवालयक नचारीक जागरण संदेश पर दैनन्दिन जीवनक आरंभ होइत अछि। कान्ह पर हरखंडा लेने हरवाह, महिंसिक पीठ पर बैसल चरवाह, हाथमे पेना लेने गाड़ीमान पर्यन्तकेँ एहिठाम कजरी, मलार, महराइ गबैत सूनल जा सकैछ। जाँत पर बैसलि ग्रामीणक चूड़ीक खनक ताल दैत अछि लगनीक कोकिलकंठी रव पर आ सन्ध्या दीप लऽ रमकैत-झकमैत ग्रामबालाक वटगमनी आ साँझक गीत सन्ध्याक मनोहारितामे अतिरिक्त योगदान कऽ दैछ। रात्रिकालो अवञ्च नहि, कीर्त्तन द्वारा भगवानक गुणानुवादक परिपाटी जे अछि।

दैनन्दिन जीवनक ई क्रम-अनुक्रम सामाजिक परिवेशकेँ पाबि आर अधिक पल्लवित-पुष्पित भऽ उठैछ। वसन्त पञ्चमीक रंगहि प्रारंभ होइत अछि होली गायनक व्यामोहसँ आ फागुनक अंतिम दिवस रंग-रभस लेने चल जाइत अछि। रामनवमी पर्यन्त चैतावरक बहार रहैछ, साओनमे झूलनकशृंगार, वर्षा भरि कजरी, मलार, बारहमासा; आसिनमे भगवतीक प्रति उद्‌गार, कातिकमे छठि-परमेसरीक अवतार ओ सामा-चकेबाक खेड़ि, पूसमे तुसारीक उत्साह रहैछ।

तथापि लोकगीतक सर्वाधिक विशिष्ट आयोजनक प्रसंग अबैत अछि संस्कारक अवसर अयला पर। विवाह बेटाक हो वा बेटीक, कोजागरा, बरिसाति, मधुश्रावणी, द्विरागमनमे गीतक बखार फूजिते अछि। नव वर, नव कनिञाक विमल संयुक्ति, दूटा भिन्न कुल, मूल, गोत्र, परिवार, सामाजिकक भिन्न परम्पराक पारस्परिक अनुरक्ति लोकगीतक गिलाबा दय जोड़ल, ढेउरल, पोतल, चुनटेल, रांगल जाइत अछि आ मर्यादित सामाजिक जीवनक अक्षुण्ण परम्परा चलैत रहैछ। शिशुक जन्म, मूड़न, उपनयनमे तँ जेना सौंसे गाम दलमलित भय उठैछ आ सोहर, खेलौना आदि गीत-गायनक प्रतिस्पर्द्धात्मक द्वन्द्व चलैत रहैछ । नटुआक तिरहुति, वसन्त, रास, ग्वालरी; बक्खोक मनोरंजक जन्म-विवाह गीत, पचनिञाक अरधौना गीत, शिशुकेँ बहटारबाक नेनागीत, झिझिरकोना, कबड्डी, करिया झुम्मरि आदि लोकक्रीड़ागीत; जगरनथिया, कमरथुआक करुण यात्रागीत, विभिन्न देवी देवताक मिनती ओ ध्यानपरक भक्तिगीत मिथिलाक जनजीवनक विशिष्ट तन्तु सभ थिक।

विभिन्न परिवेश ओ सन्दर्भक बोध करबयवला लोकगीतकेँ विभिन्न अभिधान देल गेल अछि । लोकगीत विधाक मुख्यतः तीन गोट प्रभेद कयल

जा सकैछ—भक्तिपरक, संस्कारपरक ओ सामयिक गीत। देवी-देवताक स्मरण-वन्दन-कीर्त्तनसँ सम्बद्ध आत्म निवेदनपरक गीतकेँ भक्तिपरक कहल जाइछ। सोहर, खेलौना, मूड़न, उपनयन, लगन, परिछन, कोबर, गौरीपूजन, महुअक, विषहरि पूजन, उदासी, डहकन, समदाओन, पसाहनि, उचिती, सउजन, योग आदिसँ सम्बद्ध गीतकेँ संस्कारपरक गीत कहल जाइछ । सामयिक गीतमे पराती, मलार, रास, ग्वालरी, फागु, चैतावर, लगनी, एकमासा, चौमासा, छमासा, बारहमासा, साँझ, बटगबनी, चाँचर, कजरी, विरहा, जोगीड़ा, विहाग आदि अबैत अछि। निदर्शनक हेतु एतऽ दुइ गोट लोकक्रीड़ा गीत देल जाइछ—

(क) कबडीमे लबडी पतालमे पूआ
बैसल मालिक खेलथि जूआ

(ख) करिया-झुम्मरि खेलै छी
ढील पटापटि मारै छी।

लोककथा:

लोकसाहित्यक आख्यानपरक गद्यविधाकेँ लोककथा कहल गेल अछि। डॉ. अणिमा सिंह मैथिली लोककथाकेँ चारि वर्गमे खण्ड-विभाजन कयलनि अछि—रूपकथा, हास्यकथा, व्रतकथा ओ नीतिकथा (द्रष्टव्य मैथिली साहित्यक रूपरेखा, भाग 2, पृ. 16)। एहिमे रूपकथासँ तात्पर्य ओहन कथासँ अछि जाहिमे अमानवीय तत्त्व ओ चरित्रक वर्णन भेल हो। भूत-प्रेत, जादू-टोना ओ असंभव मानवीय क्रियासँ सम्बद्ध कथाकेँ रूपकथा कहल गेल अछि। आँझुलक कथा जाहिमे भाउजसँ प्रताड़िता कन्याक अन्ततः अमानवीय साहाय्यें जीवन धारण ओ भाइ द्वारा हत्या करबाक, समाधि स्थल पर प्रकृष्ट पुष्पयुक्त वृक्षरूपमे जन्म लेबाक एवं स्वामीक अयला पर प्रकट होयबाक कथा अछि; अलौकिकताक विन्यासक कारणेँ रूपकथा मध्य परिगणित होइछ। हास्यकथा मध्य गोनू झासँ सम्बद्ध ओ सदृश कथा सभकेँ राखल जा सकैछ जे प्राचीन कालसँ मनोरंजनक अजस्र स्रोत बनल अछि। व्रतकथा मध्य मधुश्रावणी व्रतकथा, वटसावित्री व्रतकथा, जितियाक कथा, सपताविपताक कथा आदि अछि जे विशिष्ट व्रत-अनुष्ठानक क्रममे सूनल जाइत अछि। पंचतंत्र आ हितोपदेशसँ प्रभावित ओहन कथा जे सदुपदेशक सहज संवाहक अछि,

नीतिकथा मध्य राखल जा सकैछ। ई समस्त लोककथा-साहित्य अपरिमित अछि। नीतिकथाक एकगोट उदाहरण एतऽ प्रस्तुत अछि–

धर्मक बानि

एकटा गाम छल। बाहरसँ देखबामे ओ गाम अत्यन्त शुभ्रशाभ्र लगैत छल। घर सभ पतियानीमे बनल छलैक। एकमहलासँ पँचमहला धरि सबटा मकान ईंटेसँ बनल-पलस्तर, टिपकारी, पोचारा आ नक्कासी कयल, रांगल-ढेउरल। सड़क सभ पक्का कयल, सोझसोझ, समानान्तर आ ठाम-ठाम चौबट्टी सभ पर फूलक केयारी आ नेना सभक खेलबा-कुदबाक स्थान। बाहरसँ आयल बटोहीकेँ एहि गाममे नगरक आशंका होइक । गामक सम्पन्नताक सभटा लक्षण एहि ठामक कोनो घरकेँ देखला पर बुझाइत छलैक । पैघ-पैघ पोआरक टाल, हृष्ट-पुष्ट मालजाल आ भरल-पूरल बखार सभ दरबज्जाक शोभा बढ़ा रहल छलैक । गृहस्थीक सुख-संभारसँ सौंसे गाम प्रसन्न देखि पड़ैत छल।

एहि गामक दछिनवारि कात एकटा पैघ पोखरि छलैक । पोखरिक एकटा मोहार पर घाट बनल छल, जतऽ सौंसे गामक लोक स्नान करैत छलाह। घाटसँ लगले एकटा जीर्णशीर्ण शिवमन्दिर छलैक । कहिया ई मन्दिर बनलैक, से ककरो बुझल नहि छलैक आ ने ककरो तकर जिज्ञासे छलैक । टूटल मस्तूल, ढहैत गुम्बज आ भखरैत देवाल शिवमन्दिरक प्राचीनता एवं भव्य निर्माणक संकेत दैत छल । भरि जांघक शिवलिंग मन्दिरक मध्यमे स्थापित छलैक । शिवलिंगक सटले एक दिस बसहा, तकर वाम भाग पार्वती ओ दहिन भाग गणेशक मूर्त्ति स्थापित छल । गौआँ सभ ओहि मन्दिरकेँ हरसंहारि महादेवक मन्दिर कहैत छलाह । ओहि मन्दिरमे पूजा करब सभ निषिद्ध बूझैत छल । तथापि एकटा पंडितजी नित्यप्रति ओहि मन्दिरक मूर्त्ति सभकेँ धो-धा कऽ साफ कयल करथि आ पूजा कयल करथि।

ओहि शिवलिंगक सम्बन्धमे गौआँ सभमे ई धारणा छलैक जे जे क्यो एहि मन्दिरमे पूजा करैछ, से धने-जने हीन भेल चल जाइछ । तेँ मन्दिरक जीर्णोद्धार एवं पूजा-व्यवस्थासँ क्यो कनेको स्नेह नहि रखैत छल । पंडितजीकेँ पूजा करबाक सद्यः परिणाम भेटि रहल छलनि । दुनू प्राणीक अतिरिक्त हुनक परिवारमे आन सदस्यक उत्पत्तिये ने भेलनि आ क्रमहि निर्धन होइत-होइत बेचारे पंडितजीकेँ भिक्षाटनक सहाराटा बाँचि गेल छलनि । जखन ककरो

दरबज्जा पर ओ भीखोक लेल जाथि तँ महादेवक कोपक डरें लोक हुनका दुरदुराबय लगैत छलनि । हारि-दारिकऽ पंडितजीकेँ गामे-गाम भीख माङिकऽ गुजर करऽ पड़ैत छलनि ।

एक बेर पंडितजी दू-चारि दिनक हेतु गामसँ बाहर जयबाक नेयार कयलनि । हुनका गाममे नहि रहला पर महादेव कतहु अपूज ने रहि जाथि तँ ओ पंडिताइनकेँ कहलथिन–'हमरा जायब जरूरी अछि । दू-चारि दिनक बादे घूरि सकब। एहि बीच महादेव अपूज ने रहि जाथि तँ काल्हिसँ अहीँ पूजा कऽ देल करबनि । पंडिताइन कहलथिन–'जाउ ! जाउ!! हमरा बुतें पूजा-तूजा नहि कयल होयत । डेबलहुँ तँ भरि जन्म महादेवकेँ आ हमरा कप्पारमे आगि लगा देल । देखू ने, सौंसे गौआँकेँ, कोना धने-जने अगड़ाइयै आ एकटा अहाँ छी–महादेव, महादेव ! आ महादेव दिनोदिन गलौनहि जाइ छथि । एहन महादेवक पूजासँ की ?

पंडिताइनक एहन गप्प सुनि पंडितजी कानपर हाथ दैत बजलाह–'राम! राम !! एहन कथा क्यो बाजए ! अयँ ये ! धने-जने हीन भेलहुँ तँ हुनक पूजा छोड़ि देब ! हुनका जे कर्त्तव्य छनि से तँ ओ करिते छथि आ हमहीं अपन कर्त्तव्य छोड़ि दिअऽ?' अन्ततः पंडितजी पंडिताइनकेँ पूजाक भार दऽ आन ठाम चलि गेलाह ।

एहि बीच एक दिन गाममे चोरि भेलैक । जाग भऽ जयबाक कारणेँ किछु चोरकेँ ई बुझना गेलैक जे सामान लऽ कऽ भगने पकड़ा जायब । तँ ओ सभ अपन-अपन सामान शिवमन्दिरमे फेकैत भागि पड़ायल ।

दोसर दिन जखन शिवमन्दिरमे सामान फेकल देखल गेल आ पंडितजीकेँ घर पर नहि पाओल गेलनि तँ चोरिमे हुनको सहायक होयबाक शंकासँ सौंसे गौआँ बैसार कऽ हुनका गामसँ बइला देबाक निश्चय कयलक ।

जखन पंडितजी गाम अयलाह आ पंडिताइन कानि-कानिकऽ सभटा कथा सुनौलथिन्ह तँ मुँहे बौने रहि गेलाह । ओ गाम नहि छोड़ऽ चाहैत छलाह आ गौआँकेँ शान्त करऽ चाहैत छलाह । मुदा पंडिताइन नोर चुआबैत कहलथिन–'जल्दी छोड़ू ई गाम । एहन गाम बासक जोग नहि । ने भरि पेट अन्नक जोगाड़, ने पाँच हाथ वस्त्रक । आ तइ परसँ ई कलंक ।'

अन्ततः पंडितजी गाम छोड़बाक हेतु विवश भऽ गेलाह । गामसँ विदा होयबा काल हुनका महादेवक अपूज रहि जयबाक कथा अखरलनि तँ बहुत, मुदा उपाये की रहनि ? विदा भेलाह ।

जखन दुनू प्राणी गामक सिमान पर पहुँचलाह तँ पंडितजी अपन महादेवकेँ अन्तिम प्रणाम करबाक हेतु गाम दिस तकलनि । देखैत छथि जे सौंसे गाममे त्राहि-त्राहि मचल अछि । चारू कातसँ गाम आगिक लपेटमे घेरायल अछि । बड़का टा टा गुङरौट आकाशमे लहरा रहल अछि । आगिक लहास उठि रहल अछि आ यावत् ओ पंडिताइनकेँ इशारा करथि तावत् तऽ सौंसे गाम धू-धू कऽ जरि चुकल छल । धूआँ छोड़ि किछुओ ने देखाइ पड़ि रहल छल । पंडितक मुँहसँ निकललनि—'धर्म कयने जे होअय हानि, तैओ ने छोड़ी धर्मक बानि।' ओ गाम दिस पड़यलाह ।

लोकोक्ति ओ मोहावरा:

लोकोक्ति ओ मोहावरा लोकजीवनक अत्यन्त सूक्ष्म ओ तीक्ष्ण ज्ञानक सूत्र अछि । लोकोक्ति सिद्ध प्रयोग थिक आ मोहावरा लाक्षणिक । मानवीय ज्ञानक ई घनीभूत रत्न बुद्धि ओ अनुभवक द्वारा युग-युगक पर्यवेक्षणक परिणाम थिक आ पदावलीक वामन स्वरूपमे त्रिलोकक अभिव्यंजनाक सामर्थ्य रखैछ। लोककंठ पुस्त-दर-पुस्तसँ एकर परिवहन श्रुति-परम्परासँ करैत आयल अछि आ सन्दर्भ उपस्थित होइत देरी ओकर प्रयोग कऽ तीक्ष्ण संवेदनाक अभिव्यक्ति करैत रहैछ । यथा, घानीसँ बहतौनी भारी, घर से कोल्हुअरबे अच्छा, सड़लो तेली तँ नओ सय अधेली, सब ठाम राम-राम बाड़ी पर नै राम राम, झख मारब, अरकस करब, पटरी बैसब, टाटी-बेनाठी लागब इत्यादि ।

लोकश्रुति ओ किंवदन्ती:

जँ लऽ कऽ लोक साहित्य श्रुतिसाहित्य थिक तँ कतोक विश्वसनीय-अविश्वसनीय ऐतिहासिक तत्त्वकेँ सेहो संवहन करैत आबि रहल अछि । एहन तत्त्वसँ सम्बद्ध वस्तु लोकश्रुति वा किंवदन्ती कहल जाइछ । लोकश्रुति विभिन्न कालखंडक परिकल्पनात्मक इतिहासक रूपरेखा दैत अछि।। उदाहरणक हेतु रहुमाथवगणक मिथिला आगमन आ यज्ञ द्वारा दलदल भूमिकेँ सुखाय बासयोग्य बनयबाक कथा, नेपाल स्थित ओहि शमीवृक्षक मणिमण्डप स्थल (सीताक विवाहक मड़बाक स्थान) होयबाक कथा, जाहि पर एकोटा

चिड़इँ नहि बैसैछ, उच्चैठ स्थित भगवती मन्दिर ओ कालिदाससँ सम्बद्ध कथा, पोखरि द्वारा पथिककेँ बासन देबाक कथा, प्रेत द्वारा पोखरि खूनल जयबाक कथा, जनकपुरसँ आठ किलोमीटर दूर दक्षिण-पश्चिममे स्थित लोहारपट्टी गाममे 1934 ई. मे उखरल महादेव भूकम्पनाथक कथा, दरभंगाक हड़ाही पोखरि खुनयबाक प्रसंगसँ सम्बद्ध कथा, मिथिलाविभूति गंगेशक पत्नी द्वारा हुनका नव्यन्याय-चिन्तनक हेतु प्रेरित करबाक प्रसंग-कथा, वृद्धवाचस्पति द्वारा भामती-टीका लिखबाक क्रममे हुनक पत्नीक साधनाक कथा, उगना-रूप महादेव द्वारा विद्यापतिक सेवा करबाक कथा, वीरनरेन्द्रक शौर्यकथा, लक्ष्मीनाथ गोसाँइ ओ म. रमेश्वरसिंहक विशिष्ट तंत्र साधनाक कथा आदिकेँ राखल जा सकैछ । प्रत्येक गाम, पोखरि, नदी, घाट, बान्ह, डीह आदिक सम्बन्धमे किछु एहने लोकश्रुति ओ किंवदन्ती कालक्रममे अनैतिहासिक होइतो प्रचलित सूनल जा सकैछ । अधिकांश एहन श्रुतिसाहित्य समाने तथ्य रखैत अछि मुदा माध्यम बदलल रहबाक कारणेँ कथ्यमे सेहो क्रमिक परिवर्त्तन देखि पड़ैछ । मिथिलाक अनेक गामक बड़का गाम कहयबाक पाछाँ, भोरे-भोर नाम नहि लेल जयबाक रूढ़िक पाछाँ सेहो एहने किंवदन्ती सभ अछि । गाम-गाममे व्यक्ति ओ प्रकृतिक विविध अवयवसँ सम्बद्ध एहन लोकश्रुतिक संख्या अपरिमेय अछि जे आत्मगौरवक प्रकाशन, मनोबलक संवर्द्धन, ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथ्यक पर्यवेक्षणक हेतु लोकसाहित्यक महत्त्वपूर्ण सामग्री थीक।

फकड़ा:

लोकजीवनक फक्कड़ कवि-व्यक्तित्वक जोड़ल एहन पद फकड़ा कहल जाइछ जे मानवजीवनक कोनो सत्य घटना पर आधारित उक्तिविच्छितिपूर्ण प्रभावशाली पद होइछ । ई भाषाक अभिव्यंजना-शक्तिकेँ अत्यन्त सर्वद्धित कऽ दैछ । यद्यपि एहिमे लोकोक्ति जकाँ सार्वजनीनताक अभाव रहैछ तथापि जातीय जीवनक विशिष्ट सन्दर्भ ओ परिवेशक कारणेँ ई लोकजीवनक नीक जकाँ प्रतिनिधित्व करैछ, यथा—

1. एक बरही दू लोहार । बाले बच्चे लगय कुम्हार ।।
2. आ गे दगरिन आ गे दगरिन गोर तोरा लगियौ ।
   दरद मोरा छूटि गेल लोल तोरा दगियौ ।।
3. सात तामा के सात पकैलहुँ चौदह तामा के एके।

तों कुलबरना सातो खैलें हम कुलमन्ती एके ।।
तों कुलबरना तीमन खैलें नून तेल मिरचाइ ।
हम कुलमंती छुच्छे खेलहुँ दही चुड़ा मिठाइ ।।

4. माघ मास जँ माङुर खाइ । ससरि फसरि वैकुण्ठे जाइ ।
5. एक बेटी लाइ, दोसर मिठाइ । तेसर भेली तँ तीनू बलाइ ।।
6. जेम्हरे देखलहुँ खीर । तेम्हरे गेलहुँ फीर ।
7. बैसल खाय चिबाबय पान । से की राखत देशक मान ।।
8. भूखल केर अन्न गीत रोगी के दवाइ ।
पियासल के गीत पानि तिरपित के महराइ ।।
9. धन के बाजय घाँटी । निरधन लोटए माँटी ।।
10. विधवा घरमे सब दिन भादव निर्धन घरमे कातिक ।
राजा घरमे सब दिन अगहन फागुन घर अहिवातिक ।।
11. हम नै बूढ़ि गे हम नै बूढ़ि । बुढ़बा वियाहलक तँ हम बूढ़ि।।
12. गुड़ा खुद्दी खेलौं उपास भङ भेल ।
बुढ़बा वियाहलक कुमारि पद गेल ।।
13. नैहरा जो बेटी सासुर जो । बहिञा घुमा बेटी कत्तहु खो।।
14. आधा गेलै उड़न-पुरनमे आधा गेलै पम्ह ।
आधा गेलै धून-लपेटन आधा लेलौं हम ।।

वचन:

परिनिष्ठित साहित्यमे जे स्थान सूक्तिकेँ छैक सैह स्थान लोकसाहित्यमे वचनकेँ छैक । लोकजीवनक अनुभवी, बुद्धिमान ओ विद्वान व्यक्ति सभक ई वचन श्रुतिपरम्परासँ जनकंठमे सुरक्षित अछि आ एहन अनुभवसिद्ध वचन ग्रामांचलमे लोकजीवनक संचालनमे महत्त्वपूर्ण भूमिका निमाहैत अछि । घाघ, भड्डरी आ डाकक भनितासँ तथा अनेक भनिताहीनो वचन मैथिली लोकसाहित्यक अमूल्य निधि थिक, यथा-

यात्रा-शकुन विचार : रविकेँ पान सोमकेँ दर्पण
मंगल किछु किछु धनिञा चर्वण
बुधकेँ गूड़ वृहस्पति राइ
शुक्र कहय मोहे दही सोहाइ
शनि कहल मोर अदरख भाइ।

कृषि-सम्बन्धी : कम कऽ जोतिहऽ खूब मेहिअबिहऽ
ऊँच कऽ बन्हिहह आड़ि ।
ताहू पर जँ नहि उपजह तँ
डाककेँ पढ़िहह गारि ।।

अन्य : गेल माघ उन्तिस दिन बाँकी ।
मंगलमुखी सदा सुखी ।
आधा तब सधा ।

लोकमंत्र:

मिथिलाक लोकजीवनमे साप, बिच्छा, बिढ़नी, पचहिया, घोड़न आदिक दंशसँ बचबाक, बिक्ख उतारबाक, सापादि पकड़बाक, नेनाकेँ नजरिसँ बचयबाक, भूत-प्रेत चुड़ैलसँ बचबाक तथा प्रभावित भेलापर दुष्ट-प्रभाव-मुक्त करयबाक, आगि मिझयबाक, चोरा, ममर्खा, कानक कीड़ी झाड़बाक मंत्र प्रचलित अछि। एहिना आनो कतोक कार्य जे लोकानुष्ठानपरक अछि, मंत्रक बलें साध्य बूझल जाइछ । ई लोकमंत्र सभ क्षेत्रानुसारी विविधतासँ युक्त तथा आदिम संस्कृतिक रिक्थ थिक । द्रष्टव्य अछि कुरेड़ी जाति द्वारा मधु छोड़यबाक क्रममे मधुमाछीक प्रकोपसँ बचबाक हेतु पाठ्य लोकमंत्र-

आँट बान्हू, साँठ बान्हू बान्हू अपन काया ।
सत गुरु के बान्हू काया, सूर महामाया ।।

बुझौअलि :

बुझौअलि मैथिली लोकसाहित्यक एक गोट विशिष्ट विधा थिक । एहिसँ मिथिलाक काव्यरसिकता ओ प्रयुत्पन्नमतित्वक परिचय भेटैछ, यथा-

1. फड़य बेराबेरी पाकय एक्के बेरी -कुम्हारक बासन
2. छौ मासक कमाइ छनमे गमाइ -आबाक नष्ट होयब
3. उट्ठाके बैठा कहय चलती के गाड़ी -
मुरुखके पंडित कहय पंडित के भिखारी ।।

एहिमे रजक जे कार्यावधिमे निरन्तर ठांढ़े रहैछ-कपड़ा बोरैत काल, भट्ठी करैत काल, धोइत काल, इस्त्री करैत काल; से बैठा (बैसल) उपनाम धारण करैछ, चलैत शकटकेँ गाड़ी कहल जाइछ, मूर्ख कुम्हार पंडित उपनाम ग्रहण करैछ आ पंडित ब्राह्मण धनाभावक कारणेँ समाजक भीख पर आश्रित

होयबाक कारणेँ भिखारि कहबैछ । एहि तरहेँ संसारमे सबटा उनटबाँसिये चलैत छैक, ताहि पर व्यंग्य कयल गेल अछि ।

एहि तरहेँ स्पष्ट अछि जे मैथिली लोकसाहित्यक परिसर एकर अत्यन्त समृद्धिक सूचक अछि । एकर संकलन, विवेचन-विश्लेषणक आवश्यकता अछि । शिष्ट साहित्यकेँ ई नव आयाम दऽ सकैत अछि । लोकशब्दावली जँ मैथिली भाषाक प्रकृतिक अध्ययनक हेतु भाषावैज्ञानिक सामग्रीसँ सम्पन्न अछि, भाषाकोशक सम्वर्द्धनक हेतु आवश्यक अछि, व्याकरणक निधि अछि, मैथिलीक क्षेत्रगत उपभाषा-सम्बन्धक परिचायक अछि, तकनीकी ओ पारिभाषिक शब्दावली-सम्वर्द्धनमे सहायक अछि तँ व्युत्पत्तिविज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्रक सेहो अमूल्य निधि थिक । लोकनृत्य, लोकनाट्य, लोककथा, लोकगाथा, लोकमंत्र जँ मिथिलाक परिचिति थिक, मैथिली संस्कृतिक अनुशीलन-पर्यवेक्षणक सूक्ष्म आँकड़ा थिक, तँ फकड़ा, वचन ओ बुझौअलि युग-युगसँ प्राप्त मानवीय ज्ञानक अजस्र स्रोत; लोकोक्ति ओ मोहावरा जँ शिष्टसाहित्यक अलंकृतिमे चमत्कृतिक परिधान थिक तँ लोकश्रुति ओ किंवदन्ती परम्परा ओ इतिहासक प्रारंभिक अध्ययन-सामग्री ।

मुदा लोकसाहित्य लिपिबद्ध नहि होयबाक कारणें आधुनिक वैज्ञानिक संक्रमणसँ सीदित अछि । सिनेमा, टी. वी.क सहज सौलभ्य ग्राम्यस्तर धरि भऽ गेने तथा प्रोत्साहनक अभावमे लोकनृत्य ओ लोकनाट्य क्रमशः मृत भेल जा रहल अछि । अनेक लोककथा ओ लोकगाथा नवयुगीन प्रवाहक अवहेला-विवश पुरना पीढ़ीक संगहि नष्ट होइत जा रहल अछि । चिकित्साक सौविध्य लोकमंत्रकेँ, श्रुति परम्परासँ स्मृतिक द्वारा ज्ञानार्जनक प्रक्रियाक समाप्ति फकड़ा, वचन, बुझौअलि, लोकोक्ति, मोहावरा ओ लोकश्रुतिकेँ संक्रमित कयने जा रहल अछि, गिड़ने जा रहल अछि ।

तँ यदि एकर सभक संकलन, व्याख्या ओ अध्ययन-अनुशीलन सम्प्रति नहि कऽ लेल जाय तँ आशंका अछि जे मैथिली भाषाक ई विशाल ओ अमूल्य सम्पदा विलुप्त भऽ जायत । डा. अम्बा प्रसाद 'सुमन' ब्रजभाषाक कृषक-जीवन सम्बन्धी शब्दावलीक प्रसंगमे कहने छथि जे 'वर्त्तमान युगक भारतवर्षमे नागरिक संस्कृति ओ सभ्यता दिनोदिन बढ़ले जा रहल अछि । विज्ञानक नव आविष्कार प्रत्येक दिन गामक दिस बढ़ले जा रहल अछि । एहन स्थितिमे

हमर कृषक ओ शिल्पकारकेँ औजार ओ कार्यपद्धति बदलबामे अधिक समय नहि लगतनि । जखन कृषकक सभ खेत ट्रैक्टरसँ जोतल जाय लागत आ पटौनी बिजलीसँ होमय लागत तँ देशी हर आ ढेकुलसँ सम्बद्ध जनपदीय शब्दावली गामक लोकक जीहपरसँ सर्वदाक हेतु उठि जायत ।' (द्रष्टव्य, कृषक जीवन सम्बन्धमे ब्रजभाषा शब्दावली भाग-1, डा. अम्बाप्रसादसुमन, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद, 1960, ग्रन्थ के सम्बन्धमे, पृ. 3-4)। डॉ. सुमनक ई आशंका लोकशब्दावलियेटा नहि अपितु सम्पूर्ण लोकसाहित्यक संरक्षणक हेतु विचारणीय कथ्य थिक ।

एही तथ्यकेँ ध्यानमे रखैत मिथिला-मैथिलीक मनीषी लोकनि लोकसाहित्य संकलनक दिस विद्वज्जनकेँ अभिप्रेत करबाक हेतु आह्वान करैत रहलनि अछि। डॉ. अमरनाथ झा, आचार्य सुमनजी आदि लोकशब्दावलीक संकलनक दिस बहुत पूर्वे इंगित कयल (द्रष्टव्य, भाषणत्रयी, सं. देवेन्द्र झा, मैथिली अकादमी, पटना, 1983, पृष्ठ 13 तथा मिथिला मिहिर, 27 मई 1944 पृ.7।) डा. जयकान्त मिश्र लोकसाहित्यक संकलन-क्षेत्रक अभिज्ञान करओलनि, ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' लोकगाथाचक्रकेँ शिष्ट-साहित्यक मानदंड पर कसैत रहलाह, डा. प्रफल्लकुमार सिंह 'मौन' निरन्तर लोकसाहित्यक विभिन्न अनुद्घाटित अंशकेँ उजागर करबाक दिस अभिमुख देखि पड़ैत छथि।

तथापि एहि क्षेत्रमे मानक, प्राथमिक ओ मार्ग-प्रदर्शक कार्यक श्रेय यूरोपीय विद्वान सर जी. ए. ग्रियर्सन महोदयकेँ छनि जे एसियाटिक सोसाइटी जर्नल 1881 मे गीत राजा सलहेसक तथा गीत दीनाभदरीक प्रकाशन कऽ मिथिलाक दुइ गोट प्रमुख लोकगाथाकेँ शिष्ट-साहित्यक मध्य विवेचन हेतु प्रस्तुत कयल तथा 'बिहार पीजेन्ट लाइफ' नामक पोथीक माध्यमे मैथिलीओ क्षेत्रक लोकशब्दावली, लोकोक्ति, मोहावरा, लोकश्रुति, वचन, फकड़ा आदिक सम्यक् संकलन ओ व्यवस्थापन कयल, 'एन इन्ट्रोडक्शन टू द मैथिली लैंग्वेज ऑफ नॉर्थ बिहार कन्टेनिंग ए ग्रामर, क्रेस्टामैथी एण्ड भोकेबुलरी' द्वारा मैथिली लोकायनक कतिपय अंशकेँ लिपिबद्ध कयल ।

परवर्त्तीकालमे एहि दिशामे मानक कार्यक श्रेय छनि डा. जयकान्त मिश्रकेँ, जनिक दू खण्डमे विभाजित 'इन्ट्रोडक्शन टू द फोक लिटरेचर ऑफ मैथिली' ग्रन्थ लोक साहित्यानुसन्धानक मानक बनल अछि ।

ततःपर परवर्त्तीकालमे मैथिली लोकसाहित्यक उर्वर क्षेत्र दिस विद्वानलोकनि नजरि देल आ प्रमुखतः विश्वविद्यालयीय अनुसन्धानक हेतु लोकसाहित्यक अंशविशेष सभ पर शोधकर्त्ता लोकनि अभिमुख भेलाह । एहि क्रममे लोकसाहित्य पर संकलनात्मक, विचेनात्मक ओ मिश्र तीनू तरहक काज होइत रहल अछि, होइत जा रहल अछि । एहि ठाम इहो उद्धृत करब अनपेक्षित नहि जे मैथिलीक शिष्ट साहित्योमे एकर लोकसाहित्यसँ रसग्रहण करबामे आधुनिको युगक गीतकार-कविलोकनिकेँ असौकर्य नहि बुझाइत रहलनि अछि ।

यावन्तो प्रकाशित सामग्री प्राप्त भेल अछि तकर आधार पर कहल जा सकैछ जे लोकसाहित्यक लोकगीत विधाक संकलन-विश्लेषण पर सर्वाधिक ध्यान देल गेल अछि । एहि क्षेत्रमे प्राथमिक कार्य डा. रामइकबाल सिंह 'राकेश'क' मैथिली लोकगीत' छनि जे प्रसिद्ध तँ भेल मुदा एहिमे लोकसाहित्यक नाम पर अधिकांश शिष्टसाहित्यिक गीतकेँ समेटि लेल गेल अछि । गीत सभक खण्डविभाजन ओ परिचयमे वैज्ञानिकतासँ बेसी भावुकताकेँ प्रश्रय दऽ देल गेल अछि । हिनक पोथी ओ निजी संकलनकेँ आधार मानि डा. तेजनारायणलाल 'मैथिली लोकगीतों का अध्ययन' प्रस्तुत कयल जे मैथिली लोकसाहित्यक विवेचन-विश्लेषणक दिशामे मानक ग्रंथ कहल जा सकैछ।

तथापि मैथिली लोकगीतक संकलन-व्यवस्थाक क्षेत्रमे जाहि मैथिल विदुषीक ग्रन्थरत्न 'मैथिली लोकगीत' केँ मार्ग प्रदर्शकक सिंहासनासीन कहल जा सकैछ से थिकीह डा. अणिमा सिंह । हिनक संकलन ओ व्यवस्थापन कार्यसँ आगू एखनधरि लोकगीतक क्षेत्र नहि बढ़ि सकल अछि यद्यपि एहि दिशामे सर्वश्री बालगोविन्द झा 'व्यथित'क मैथिली ग्रामगीत, डॉ. प्रफुल्लकुमारसिंह, 'मोन'क 'थारू लोकगीत' ओ 'नेना गीत', ब्रजेश्वर मल्लिकक 'कोसी गीत', भोलाझाक 'मैथिली गीत संग्रह', विभूतिआनन्द/ज्योत्स्ना आनन्दक 'गीतनाद', श्रीमती कामेश्वरी देवीक 'मिथिला संस्कार गीत', श्रीमती तारणीमिश्र तथा श्री राधावल्लभशर्माक 'मैथिली संस्कार गीत', डा. इन्द्रकान्त झाक 'मैथिली व्यवहार गीत संग्रह' आदि काज आगू आयल अछि ।

मैथिली लोकसाहित्यक अन्य विधा सभक दृष्टिञे प्रकाशित सामग्रीमे जीवानन्दठाकुर मैथिलडाक, कन्हैयालाल कृष्णदासक डाकवचनाकृत, राजेश्वरझाक लोकगाथा-विवेचन, श्यामा चकेबा, जट जटिन, नैना-योगिन; ऋषभदेव शर्मा

रेग्मीक 'दीनाभद्री र सलहेस', डा. लोकनाथमिश्रक मिथिलामे व्यवहार गीत, रमानाथमिश्र 'मिहिर'क 'लोकोक्ति ओ मोहावरा'; डा. तेजनाथ झाक मधुश्रावणीपूजाकथा, डा. प्रफुल्लकुमारसिंह 'मौन'क ब्रह्मग्राम, डा. शैलेन्द्रमोहन झाक कथा-कहानी, डा. अमरनाथझाक 'अष्टदल', डॉ. विभूति आनन्दक 'एकटा छला गोनू झा आ कथा-कहिनी, डा. महेन्द्रनारायणरामक मैथिली लोकमहागाथाः कारिख पजियार आदि पोथीकेँ प्रमुख रूपें गनाओल जा सकैछ। तदतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिकामे निरन्तर प्रवहमान लोकसाहित्यक स्फुट सामग्री सभ सेहो उपलब्ध अछि ।

अप्रकाशित सामग्रीक दृष्टिञे डा. पूर्णानन्ददास, डा. नन्दनन्दनझा, डा. महेन्द्रप्रसादसिंह, डा. श्रीमती उर्मिला प्रसाद, डा. मोतीलालयादव आदिक कार्यकेँ विशिष्ट महत्त्वसंयुत कहल जा सकैछ ।

एहि तरहें कहल जा सकैछ जे मैथिली लोकसाहित्यक अध्ययन-अनुशीलनक प्रति विद्वानलोकनि सजग भेलाह अछि । तथापि लोकसाहित्यक ओहने क्षेत्रकेँ स्पर्श कयल जा सकल अछि जे आभिजात्य परिवारसँ सम्बद्ध अछि । ग्रामांचलक लोकजीवन धरि प्रवेश अवडेरले अछि, मिथिलाक विशाल भूगोलक सर्वांशक क्षेत्रशः सर्वेक्षण नहि कयल जा सकल अछि । स्वभावतः समुचित ओ व्यवस्थित संकलन, अध्ययन, अनुशीलनक अभावमे साहित्येतिहासमे मैथिली साहित्यक ई विधा अनुरूप स्थान नहि पाबि सकल अछि ।

अपन पी-एच.डी. शोध-प्रबन्ध 'मैथिलीक प्रमुख पारम्परिक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावलीक व्याख्यात्मक अध्ययन'क प्रणयनक क्रममे हमरा पच्चीस गोट जातिक निरन्तर सम्पर्क-सान्निध्यमे रहबाक अवसर भेटल। हिनका लोकनिक जातीय संरचना ओ संगठन, परम्परा ओ विश्वास प्रथा व्यावसायिक ओ जातीय शब्दावलीकेँ निकटसँ देखबाक, परखबाक ओ संकलित करबाक क्रममे शोध प्रबन्धक सीमासँ बाहरोक बहुत वस्तु संकलित होइत गेल। मिथिलाक लोकजीवनमे परिव्याप्त जातीय व्यवसायी वर्गक विशिष्ट शब्दावली, लोकोक्ति, जाति-उपजातिक वर्गविभाजन, उत्पत्ति सम्बन्धी धरणा, विविध संस्कार, गोत्र ओ मूलक अवधारणा, जातीय दण्डविधान, जोग-टोन ओ खोम्ह तथा सामाजिक संस्तरण ओ खण्ड विभाजनमे निरूपित स्थान आदिमे वैशिष्ट्य परिलक्षित भेल। संगहि इहो परिलक्षित भेल जे मिथिलाक लोकजीवनमे

यावन्तो जाति अछि ताहिमे अधिकांशकेँ अपन जातीय लोकदेवता छथि। प्रत्येक लोकदेवताक सम्बन्धमे लोकगीत ओ गेयकथा सभ प्रचलित अछि।

प्रस्तुत पोथीक प्रथम भागमे क्रमशः डोम, चमार, धोबि हलुआइ, मलाह ओ कुरेड़ी जातिक सामाजिक स्वरूपक परिचय देल गेल अछि।

पोथीक दोसर भागमे प्रथम संस्करणक अन्तर्गत अनुसन्धान क्रममे संकलित बारह गोट लोक गाथाक परिचयात्मक स्वरूप प्रस्तुत कयल गेल छल। एहि संस्करणमे श्यामसिंह, लालवन बाबा, गरीबन भुइञा, मोतीदाइ, गणिनाथ गोविन्द, फेकूराम, कारिख, दुलरा दयाल, गाङो देवी, जयसिंह, अमरसिंह ओ केवल महाराजक यथोपलब्ध लोकगाथाक अतिरिक्त दुइ गोट लोकगाथा क्रमशः बेनीराम ओ दीना-भद्रीकेँ सेहो समाहित कऽ देल गेल अछि। अन्तमे 'गहवर गीत'क अभिधानसँ लोकजीवनमे व्याप्त किछु देवी-देवताक भजन-कीर्त्तनसँ सम्बद्ध किछु गीत सेहो अनुगुम्फित कऽ देल गेल अछि।

धन्यवादार्ह छथि ओ जातीय व्यवसायी लोकनिं जे अपन मूल्यदेय क्षणसँ कपीच-कपीच गाथारत्न सभ सुनौलनि-लिखौलनि आ अपन-अपन जातीय जीवनसँ परिचय करौलनि।

एहि ग्रन्थक निर्मितिक समटा श्रेय मैथिली जगतमे सव्यसाची रचनाकारक रूपमे विश्रुत मान्यवर डा. रामदेव झाकेँ जाइत छनि जनिक निरन्तर निर्देशन ओ पर्यवेक्षणक लाभ हमरा सहजहिँ प्राप्त रहल अछि। सामग्री संकलनसँ लऽ कऽ विवेचन-विश्लेषण धरि हिनक सहज उदारता, ममत्व ओ मार्गदर्शन हमरा पर्याप्त आत्मबल प्रदान कयने रहल अछि। ग्रन्थक भूमिका लिखि ई एहि ग्रन्थकेँ जे गरिमा प्रदान कयलनि, ताहि हेतु हम कृतज्ञ ओ भावाभिभूत छी।

अन्तमे, एहि ग्रन्थक द्वितीय संस्करणक प्रकाशन-वितरणक हेतु सहर्ष उद्यत शेखर प्रकाशनक अधिष्ठाता श्रीशरदिन्दु चौधरीक प्रति आभारी छियनि।

गुरु पूर्णिमा,
दिनांक 27 जुलाई, 2018

योगानन्द झा
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा-846001
मो. 09334493330

क्रम

डोम जातिक सामाजिक स्वरूप

मिथिलाक सामाजिक जीवनमे किछु जाति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत अछि, जकर सहयोग हिन्दू-संस्कारमे अनिवार्य रहैत छैक। मिथिलामे एहि प्रकारक जे जाति सभ चिरकालसँ निवास करैत रहल अछि तकर अपन सामाजिक व्यवस्था विकसित भऽ गेल छैक। डोम जाति सेहो तेहने जाति अछि, मुदा सामाजिक संस्तरणमे अत्यन्त निम्नकोटिक रहबाक कारणेँ मिथिलाक डोम जातिक समाज-शास्त्रीय अध्ययन एखन धरि नहि भऽ सकल अछि। हमर अध्ययनक क्षेत्रमे एहि जातिक शब्दावली रहल अछि मुदा जातीय-शब्दावली वर्ग-विशेषक विशिष्ट शब्दावली होयबाक कारणेँ ओकर जातीय-संरचनाक ढाँचा प्रस्तुत करबामे सर्वथा समर्थ कहल जा सकैत अछि।

मिथिलाक डोम-जाति वस्तुतः व्यावसायिक जाति अछि आ बसकरम (सं. वंशकर्म) एकर विशिष्ट उद्योग रहलैक अछि। ओना वंश-कर्ममे आनो अनेक जाति जेना धनिकार, मुसहर, मेहतर, बाँतर, हलखोर आदि सेहो लागल अछि मुदा विविध संस्कारसँ सम्बद्ध वंश-निर्मित वस्तु पर डोमे जातिक एकाधिकार छैक।

वंश-कर्मक परम्परा बड़ पुरान अछि। एकर संकेत ऋग्वेदहुमे उपलब्ध अछि।[1] मुदा स्मृति-काल धरि अबैत ई कर्म जाति-विशेष पर आधृत भऽ गेल छल जे पाण्डुसोपाक कहबैत छल।[2] एखनो मिथिलाक डोम अपनाकेँ सोपच कहैत छथि जे हुनक उत्पत्तिक स्मृतिकालीन परम्पराक द्योतक थिक ।

मुदा डोम जातिक उत्पत्तिक प्रसंग जे कथा डोमलोकनिक मध्य एखन प्रचलित अछि तकर आधारपर ओ सभ अपन उत्पत्ति ब्राह्मणेसँ कहैत छथि। एहि सम्बन्धमे एकटा कथा कहल जाइछ जे एकटा ब्राह्मण चारि भाइ छलाह आ नित्तह स्नानक हेतु एकटा पोखरि पर जाइत छलाह। एक दिन पोखरिक घाट पर एकटा गाय मरल छलैक आ 'बाभनक छोट राड़क मोट'क अनुसार सभसँ छोट भाइकेँ ओहि गायकेँ हटैबाक हेतु बाध्य कऽ देल गेलनि। मुदा

जखन घाट साफ कऽ कऽ ओ घुरलाह तँ हुनका अपन जातिसँ बारि देल गेलनि आ हुनके वंशज डोम कहौलकनि । मिथिलाक डोम एखन धरि मृतकक प्रति अपन साधिकार प्रयत्न करैत देखल जाइत छथि आ मृतकक गहना-कपड़ा पर अपन अधिकार बुझैत छथि। एतऽ धरि जे श्मशानमे बचल मरकाठीक सेहो उपयोग करैत छथि आ बिनु डोमकेँ पाइ देने मृतककेँ आगि देब निषिद्ध बूझल जाइत अछि। एहिसँ सामाजिक आवश्यकताक अनुसार कार्य विशेषमे समाजक कोनो वर्ग विशेषक लागि गेने, एहि जातिक उत्पत्ति भेल होयत, से असंदिग्ध अछि।

डोमक उपनाम सामान्यतः मल्लिक होइछ ।

मिथिलामे दू प्रकारक डोम छथि । करेहक बाम पारवला डोम तिरहुतिया आ दहिना पारवला पछिमा कहबैत छथि । मूलनिवास स्थानक भेदें डोम सभ चौबीस परगन्नामे विभाजित कहल जाइत छथि जाहिमे एक परगनावला दोसर परगन्ना वलाकेँ अपनासँ न्यून कोटिक बुझैत छथि ओ तदनुसारे विआह-दान, सभैती अथवा भोज-राजमे सम्मानक भागी होइत छथि। अनुसंधानक क्रममे चौरासी, दरभंगा, राज-बिसारा, कसमा, लोआम, भाला, बछौर, बालागच्छ, गयासपुर, हाटी, पचही, बेसारा, सरैसा, मलकैता, भच्छी, राजभरौरा आदि सोलह परगन्नाक नाम भेटल अछि, अन्य आठ अनुसन्धेय अछि।

पुनश्च डोम जाति अनेक खूँट/खुरहामे बाँटल अछि जे वंश-विशेष कहल जा सकैत अछि। एहिमे किछु अधलपुरिया, अमलौर, अर्रा, आँहीस, अधारपुर, अमारी, अरैता, कोनलिआर, कसमा, कोठिया, कल्याणपुर, कन्हौली, कानू, कोठियैता, खोन्हलिआर, गोरैता, घटैता, घटहो, चोन्हलिआर, चचरबार, चनौली, जढ़ुअति, जेरुआ-बेलसंडी, जरुआ-बेसारा, जलालपुर, जरुऐत, टभकैत, तिसबार, नागरबस्ती, पोनसीया, पाँड़, पाँचमोहाल, पूसा, पुनहास, फूलसोनपरिया, बेलसरैत, बहैलवरिया, बलगछिया, मनकैता, महुअति, मलकी, मधपुरिया, रोसड़ैत, ललवार, लरहनि, लाधा-बरबट्टा, लाधा, लालागच्छ, बेसारा, सोनपरिया, सिंघारा, सोनपुर, हँसैता, हायर, हाँसा आदि अछि। तिरहुतिया आ पछिमा डोम परस्पर विवाह सम्बन्ध नहि करैत छथि । मुदा एक खूँटक डोमक बीच सेहो विवाह सम्बन्ध नहि होइत छैक। विभिन्न परगन्नाक बीच ऊँच-नीचक भेद छैक। विआह-सम्बन्धक हेतु मातृकुलक ओ पितृकुलक तीनसँ लऽ कऽ पाँच पुस्त धरिक खुरहा बारल जाइत छैक।

डोमक बीच जे खुरहा अथवा परगन्नाक विभाजन अछि ताहिमे विशेष तँ स्थान अथवा गामक नामसँ सम्बद्ध अछि मुदा लालागच्छ, कानू, पाँड़ आदि अनेक नाम जाति-विशेषक सूचक थिक जे ई सिद्ध करैछ जे तत्तत् जातिक लोक कोनो सामाजिक कारणवश एहि जांतिमे परिगणित होमऽ लागल होएताह। अनेक एहनो खूटक नाम अछि जे डोमक प्रजातीय उद्‌गमक दिशि संकेत करैत अछि जेना पोनसीया, टभकैत, भाला आदि।

डोमक जातीय संगठन सभा, सभैती, जबार, चटाइ कहल जाइत अछि। एकर प्रधान सरदार कहबैत छथि जे उच्च जातीय संस्तरण प्राप्त इमानदार आ कहबैका व्यक्ति होइत छथि । सरदारक चुनावक प्रथा छलैक मुदा क्रमशः वंशानुगत भेल जा रहल छैक । सरदारक सहायताक हेतु टोल पाछू एकटा माइञ्जन होइत छैक आ माइञ्जनक सहायक करमान कहल जाइत छैक। जातीय संगठनक मुख्य काज पंचैती, कोनो डोमक मुइला उत्तर भोज आदिक व्यवस्था करब तथा कोनो डोम द्वारा जातीय व्यवस्थाक विरुद्ध काज कएला उत्तर दंड-विधान करब होइछ ।

व्यभिचारक दंड-स्वरूप पुरुषकेँ गरदनिमे उक्खरि बान्हि कऽ दौड़ायल जाइत छलैक एवं स्त्रीकेँ नाक-झोंट काटि अपमानित कयल जाइत छलैक, मुदा आब अर्थदण्डेक प्रधानता देखल जाइत अछि । एहिसँ प्राप्त द्रव्यक उपयोग सामाजिक कार्यक हेतु होइछ ।

डोममे छठ्ठी-छिल्लाक रेवाज छैक, बालविवाह प्रचलित छैक आ वर-कनिञाकेँ लाठीसँ नापि विआह-सम्बन्ध स्थिर कयल जाइत छैक । स्त्री-पुरुष दुनूक हेतु सगाइ (पुनर्विवाह) प्रचलित अछि मुदा पूर्वपति वा पूर्वपत्नीकेँ छोड़ला पर दण्ड-व्यवस्थाक भागी भेले उत्तर दोसर पुरुष वा दोसर स्त्रीक पाणिग्रहण संभव भऽ पबैछ। एकर अवहेलना दण्ड-योग्य बुझल जाइत छैक। विधवा-विवाह सेहो मान्य अछि। विआहक अवसर पर एहि जातिमे प्रचलित किछु विशिष्ट व्यवहार सभ अछि—पनकट्टी, धनबट्टी, परिछन, डालाहारा, मटकोर, समधी-मिलान इत्यादि ।

डोममे गुरुमंत्र लेबाक प्रथा सेहो अछि । मृतककेँ सामान्य हिन्दू अवधारणाक अनुरूप जराओल जाइत छैक । सनातनसँ एहि जातिमे तेरहा श्राद्ध प्रचलित छैक जाहिमे तेराति, सतलहान, दूधमुँह, नहकेश आदि विध होइत

छैक । श्राद्धमे सभैती भोज होइछ । एहिमे करसाजी/मरजादक प्रथा अछि । मरजादमे माइञ्जन लोकनिकेँ पहिने ताड़ी देल जाइत छनि । पछाति आगत पंचलोकनिकेँ खैनी-पीनीसँ सेहो स्वागत कयल जाइत छनि । भोजनोपरान्त माइञ्जन ओ सरदार लोकनिकेँ विदाइ कयल जाइत छनि। भोजमे बैसयबासँ पूर्व पंचलोकनि द्वारा उक्खरिमे राखल पानिमे पैर डुबयबाक प्रथा छलैक । भोज समाप्तिक सूचनाकेँ बेना डोलायब कहल जाइत छैक । सभैती भोज ओ कुटमैती-खान-पीनमे पदक गरिमा ओ सम्बन्धक आपकताक अनुरूप मानस (स्वागत) करबाक रेवाज छैक ।

सूगर पोसब एहि जातिक जीविकाक एक गोट प्रमुख साधन अछि । सूगरक नवजात बच्चा पाहुर, कने पैघ ढोका, दूध छोड़लापर छाबी, वर्ष दिनुक भेलापर पाङर, दुइ वर्षक भेलापर डहरा ओ प्रजनन हेतु परिपक्व भेला पर सूगर कहल जाइत छैक । मादा पाङरकेँ भेड़ाइ कहल जाइत छैक । मादा सूगरक हेतु सामान्य शब्द सुगरनी अछि ।

सभैती भोज ओ कुटमैती खान-पीनमे सुगरक विभिन्न प्रकारेँ रान्हल माँसु खोअयबाक विधान छैक । साधारण प्रक्रिया द्वारा निर्मित माँसुकेँ भतमसैया कहल जाइत छैक । करेजीकेँ भूजि कय बनाओल माँसुकेँ सतघरा कहल जाइत छैक । रसगर माँसु कोहरा-कोहरी कहल जाइत अछि । रान्हल माँसुक हड्डीवला भाग सहरी कहबैछ । हड्डी सहित रान्हल माँसु हरमुसरिया कहल जाइछ । सुगरक पीठपरक उपरका भागक माँसु पिठिया ओ तरखला माँसु गभिया कहल जाइत अछि । माँसुक पैघ-पैघ टुकड़ी काटिकऽ रन्हला उत्तर बनल तीमनकेँ चारिछन्ना कहल जाइत छैक । पाहुरक माँसुसँ बनल चारिछन्नाकेँ चारिबैल कहल जाइछ ।

कुटमैतीमे सुगरक विभिन्न अंगक माँसु पृथक्-पृथक् पसरल जाइत छैक । सोलहो कलम पुरा देला उत्तर आगत कुटुम अत्यधिक सम्मानित अनुभव करैत छथि । सुगरक दाढ़ीवला भागक माँसु घोघ, माथक उपरका पृष्ठभागक कनफड़, पाञ्जरवला भागक पेट, चर्बीबला भागक बक्खी, पित्ताशयक पिल्ही, अग्न्याशक बट; रीढ़क दुहू भागक बिस्सी, चमराक साठि, करेजक करेजी, जाँघक जँघेली, पैरक गोड़ी, नाङरिक नङरेठ, आमाशयक पचौनी, पतरका अंतरीक जाली एवं मोटका अँतरीक भौरी कहल जाइछ । भौरी, बक्खी

ओ करेजीकेँ भूजिकय सुगरक खून मिला कऽ बनाओल तीमनकेँ सोहरी कहल जाइत छैक । चमड़ाक टुकड़ी काटि कऽ रन्हला उत्तर बनल माँसुकेँ कुट्टी/खुट्टी कहल जाइत छैक ।

सुगरकेँ मारबाक हेतु डोम बाँसक नोंखगर फट्ठीक व्यवहार करैत अछि । एहि फट्ठीकेँ सुगरक गर्दनिमे भोंकि ओकर स्वासनलीकेँ अत्यन्त निर्दयतापूर्वक तोड़ि देल जाइछ । एहि फट्ठीकेँ खुभिया/खोभन्टा कहल जाइत छैक । सुगरकेँ रखबाक हेतु बाँसक फट्ठीसँ निर्मित गोलाकार आवासकेँ खोभाड़ कहल जाइत छैक ।

डोम जाति मृतकपर अपन अधिकार बुझैत छथि आ ओकर गहना-कपड़ाक उपयोग करैत छथि । श्मशानमे मृतककेँ जरयबाक हेतु प्रयुक्त लकड़ीकेँ मरकाठी कहल जाइत छैक । एहि मरकाठीक अवशेषकेँ डोम इन्धनक लकड़ीक रूपमे व्यवहार करैत छथि । सवर्णक भोजमे ऐंठकेँ सेहो ई जाति साधिकार ग्रहण करैत रहल छथि आ भोजनसँ बचल ऐंठक सुकठा बनाय आगूक उपयोगक हेतु राखि लेल करै छथि ।

डोम जाति पारस्परिक घोल-फचक्काक हेतु प्रसिद्ध अछि । घोल फचक्काक हेतु तँ सामान्य जनजीवनमे उपलक्षण बनि गेल अछि-डोमघाउज। पैघ व्यक्तिक पारस्परिक कलहकेँ 'डोमाडिगरी उठब' कहल जाइत छैक ।

एहि जातिमे अनेक देवी-देवता काली, बल्ली, गोरैया, गहिल, सहोदरा, डिहवार, मनुसदेवा आदिक पूजा कयल जाइत छनि । अधिकांश देवी-देवताकेँ पाहुरक बलि चढ़ैत छनि । प्रत्येक देवतासँ सम्बद्ध अनेक लोकगीत एहि जातिमे प्रचलित अछि । लोकायनक रूपमे प्रसिद्ध श्यामसिंह ओ बालाजी पहलमान पिता-पुत्रक लोकगाथा एहि जातिक धरोहर थिक जे सनगोहिक चरसासँ छारल मृत्पात्रक एकतारा ओरिनी पर भक्ति-भावापन्न भऽ गाओल जाइत अछि ।

गुरौड़क देवता महकार वीर डोमे जातिक मानल जाइत छथि । एहन मान्यता छैक जे एहि देवताकेँ पूजा नहि देने गुरौड़क काजमे भाङठ होइते छैक। डोम जातिक ई मनुसदेबा कुसियारक रस नहि देला पर रस भरल खोलैत

कड़ाहमे कूदि प्राणार्पण कऽ देने छल आ ताहि दिससँ समस्त गुड़-व्यवसायी एकर पूजा करैत आबि रहल छथि । एहि देवताक सम्बन्धमे प्रसिद्ध उक्ति अछि–'ने करी कुसियारक खेती, ने करी महकारक पूजा ।'

लोकगीत ओ लोकगाथा पर आधारित कोनो नाच मिथिलामे प्रचलित छल जे डोमकछ नाच कहबैत छल । मुदा एहि नाचक की स्वरूप छल से आब विस्मृत भऽ गेल अछि । एहि नाचक उल्लेख मनबोधक कृष्ण-जन्ममे सेहो भेल अछि ।[3] एहि आधारपर ई लोकनृत्यक विशिष्ट स्वरूप रहल होयत जे शिशुक जन्मक अवसर पर आयोजित होइत छल होयत । ग्रियर्सन एकर व्याख्या करैत कहलनि अछि जे ई अधोवस्त्रकेँ डोम जकाँ मोड़बाक प्रक्रिया विशेष थिक । हुनक अनुसार शिशुक जन्म ओ विवाहादिक शुभ अवसरपर डोम ओ ओकर स्त्री लोकनि प्रसन्नता-सूचक नृत्य करैत छलीह जे डोमकछ नाच कहबैत छल । एहि नाचमे अधोवस्त्रकेँ तेना कऽ बान्हि लेल जयबाक विधान छल जे नृत्य-गति प्रतिरोधित नहि भय पबैत छल।[4] श्री प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' डोमकछक शाब्दिक अर्थ डोमक स्वांग कहलनि अछि । हुनका अनुसार एकर अभिनय महिला लोकनि द्वारा महिला लोकनिक लेल प्रस्तुत होइत छल जाहिमे पुरुषक प्रवेश निषिद्ध मानल जाइत छल । गीतात्मक ओ गद्यात्मक संवादसँ युक्त एहि लोकनृत्यमे विवाहक सामाजिक आवश्यकता पर बल देल गेल अछि । एकर नायक जलुआ नामक अनाथ बालक अछि जकर लालन-पालन डोम दम्पती द्वारा होइत छैक आ यैह दम्पती सयान पोष्यपुत्र जलुआक विआह भीख माङि कऽ करा दैक छैक ।[5]

अछोपक श्रेणीमे परिगणित अत्यन्त निम्न सामाजिक स्तरीयताक मान्यताक अछैतो जन्म, उपनयन, विवाह, मृतक-संस्कार आदिमे डोम जातिक योगदान भेलहिँ सन्तां संस्कारक पूर्णता मानल जाइत छैक । छठिहारमे बेना, उपनयनमे डाली, साजी, कोनिञा, चँगेरा, मेघडम्मर; बरिसातिमे साजी, बेना; मधुश्रावणीमे लिली डाली; छठिमे डाला, दौरा, चँगेरा ओ कोनिञा; वर-विदाइ ओ द्विरागमनमे डाला एवं श्राद्धमे पेटारी, चँगेरा, छत्ता आदि अपन जजमानक हेतु डोमे आपूर्त्ति करैछ । गृहस्थीक विविध उपयोगक हेतु बाँसक बासन सभक आपूर्त्तिमे डोमक अन्यतम भूमिका छैक । गोवर्द्धन पूजामे मालजालकेँ हूड़ा/हुड़ियाहा देल जाइत छैक जकरा लेल पाहुर डोमे दैत छैक । खास परिवारसँ खास डोमक नित्य

सामाजिक ओ व्यावसायिक सम्बन्ध रहैत छैक । तेँ अभाव समुपस्थित भेला पर डोम अपन जजमानकेँ भरना पर राखि दैत अछि, बेचि लैत अछि । हिन्दू जातिक अन्तिम संस्कारक आगि डोमेसँ विहित छैक । ई एहन पौनी-पसारी थिक जकरा भोज नहि खुऔने मृतक संस्कारक पूर्णाहुति सफल नहि मानल जाइछ । लावारिश शवकेँ गति डोमे दैछ आ तेँ जीवन भरि आ मृत्यूपरान्तो डोमक साहाय्यक आवश्यकता रहिते छैक । कहबीयो अछि–

'ऊँचे बाभन नीचे डोम ।
की तारय बाभन की तारय डोम ।।' आ
'मुइला उत्तर डोम राजा' ।।

एतावता डोम जाति हिन्दू सामाजिक जीवनक अभिन्न अङ्ग थिकाह। हिनका लोकनिक वर्ण रक्त शुद्धिक परिचायक थिक । विभिन्न जातीय संस्कार ओ धार्मिक पावनि-तिहारमे ई सामान्य हिन्दूधर्मक अनुपालन करैत छथि । मिथिलामे ई प्रमुख पौनी-पसारीक रूपमे मान्य छथि । वंश-कर्म ओ सूगर-पालन द्वारा ई जाति अपन निर्वाह करैत आबि रहल छथि आ पूर्णतः व्यवसायी जातिक छथि ।

मुदा जतऽ धरि शिक्षा ओ आर्थिक प्रगतिक क्षेत्र अछि, ई जाति एखनो बड़ पछुऐल अछि । जाहि अनुपातमे आन अनुसूचित जातिक शैक्षणिक ओ आर्थिक जीवनमे प्रगति भेलैक अछि, जाहि तीव्रताक संग ओ सभ विकासक पथपर अग्रसर भऽ रहल छथि तकर गति डोम जातिमे एखनो अत्यन्त मद्धिमे कहल जा सकैत अछि । संख्योक आधार पर मिथिलामे ई जाति बहुत बेसी नहि आ चारि-पाँच गामक पाछाँ एकाधटा डोमक घर वा छोटछीन टोल देखल जा सकैत अछि आ ओहो सभ जीविकाक अभावमे प्रवासे जीवन बेसी काल पसिन्न करय लागल छथि । किछु परिवार तऽ पाकिस्तान आ बंगलादेश जा कऽ बसिये गेल छथि । संगहि कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली आदि पैघ शहर सभमे हिनका लोकनिक पलायनो चालू अछि ।

संदर्भ-निर्देश

1. ऋ. 8/553
   शतं वेणुच्छतं शुनः शतं चर्माणि म्लातानि।
   शतं मे बल्वजस्तुका अरूषीणां चतुःशतम्।।
2. मनु. 10/36
   चाण्डालात् पाण्डुसोपाकस्त्वक्सार व्यवहारवान्।
   आहिण्डिको निषादेन वैदेह्यामेव जायते।।
3. कृष्णजन्म-मनबोध-द्वितीय अध्याय
   'केओ घर-आँगन केओ दोआरी । कय ठाम डोमकछ नाचए गोआरी ।।'
4. Journal of Asiatic Society of Bengal, Vol. LIII, Part I, special Number, 1884, Page-7
   डोमकछ a Dom's waist cloth (काछ) hence 'after the manner of Dom's.' In Bihar, on occassion of births, marriages & c. it is customary to employ Doms and their women to dance as a sign of Joy. काछ is a particular way of tying up the waist cloth so that movement may not the impeded. डोमकछ may be freely translated 'tucking up their petticoats like Doms.'
5. पूर्वाञ्चलीय नाटक ओ रंगमंच-दोसर भाग, चेतना समिति, पटना, 1977, पृ. 41



चमार जातिक सामाजिक स्वरूप

चमार जाति मिथिलाक सामाजिक जीवनमे प्रमुख पौनी-पसारीक रूपमे जानल जाइत छथि । दन्तकथा पर आधारित एहि जातिक उत्पत्तिक प्रसंगमे जे कथा प्रचलित अछि तकर अनुसार ई जाति ब्राह्मणेक वंशज थिक । एकटा ब्राह्मण चारि भाइ छलाह । हुनका ओहि ठाम कोनो माल मरि गेलनि । ओकरा हटैबाक हेतु बाभनक छोटकेँ आदिष्ट कयल गेलनि । छोटका भाइ अपन जनउ बेलक गाछ पर राखि मृत मालकेँ दरबज्जापर सँ हटौलनि । पश्चात् घर घुरला पर हुनका बारि देल गेलनि आ हुनके वंशज चमार कहौलकनि जे एखनहुँ मृत माल-जालकेँ फेकबाक व्यवस्था करैत छथि ।

मृत माल-जालकेँ फेकबाक संगहि ई जाति चामक व्यवसाय सेहो करय लागल आ एखनो चामक विभिन्न परिधान बनबैत अछि । चामक अतिरिक्त सींघ, हड्डी, चर्बी, गोलोचन, पाढ़ी आदि मृत मालक अंगसँ प्राप्त विभिन्न वस्तु सेहो एहि जातिक व्यावसायिक परिधिमे अछि । चाम खलब, ओकर पकोइया करब तथा पाकल चामक जुत्ता आदि विभिन्न वस्तुजातक निर्माण करब एहि जातिक प्रमुख उद्योग रहल अछि । गाम-घरमे चमैनि प्रसूताक परिचारिकाक रूपमे काज करैत रहलीह अछि । एहि परिचारिकाक हेतु विशिष्ट शब्द दगरिन अछि । लोकोक्ति प्रसिद्ध अछि–

'चमैनिसँ कत्तहु कोखि नुकेलैए' आ
'आ गे दगरिन आ गे दगरिन, गोर तोरा लगियौ।
दरद मोरा छूटि गेल, लोल तोरा दगियौ ।।'

चमारक सम्बन्धमे सेहो अनेक लोकोक्ति प्रचलित अछि, जेना–

'कारी बाभन गोर चमार ।
एक संग ने उंतरय पार ।।'
'चमारक हिछने कतहु माल मरलइए'

'चमारक पेटमे जायब' हड़ाहि मालक हेतु गारिक रूपमे प्रयुक्त अछि। गोनू झाक **चमरछोछ** नामी अछि ।

मिथिलाक चमार जाति अनेक उपजातिमे विभाजित छथि । एहि उपजाति सभकेँ विभिन्न पंघत कहल जाइत छैक । किछु प्रमुख पंघत अछि–राउत, मोची, सफरी, कनगुजिया, महरा, हाइट, सारखी, धोखरिया, पजरतोड़ा, पाँड़, नाइक, छपरिया, कपरी, मगहिया, बोहित, घुसिआ, बहिङारि, गोरिया, गोहित इत्यादि । पाँड़े, मोची, दास, राम, राउत आदि एहि जातिक प्रमुख उपनाम सभ थिक मुदा सभ चमार अपनाकेँ रविदास कहैत छथि जे प्रसिद्ध संत रैदासक वंशक कहयबाक जातीय गौरवक प्रतीक थिक ।

सामान्य हिन्दू देवी-देवताक अवधारणाक संगहि एहि जातिमे अनेक गृह देवताक सेहो पूजन-अर्चन कएल जाइत अछि जेना कोरल, क्षत्री, धर्मराज, रकतमाला, काली, बन्दी, गोरैया, महामाया, नरसिंह, जलपा, लुकेशरि, मनसाराम, लालाजी आदि । लालाजीकेँ लालबन बाबा सेहो कहल जाइत छनि । ई चमारक जातीय देवता छथि । प्रसूताक कल्याणकामनाक हेतु चमैनि हुलहुली देवीक पूजा करैत छथि । एहि देवीकेँ प्रसवक दोसर दिन आदी-गुड़ आ तापनक रूपमे थोड़े दारू चढ़ाओल जाइत छनि ।

एहि जातिक लोक दशहरामे भगवतीक आगमनक सूचना भरि गाममे ढोलहो पीटि कऽ दैत रहल छथि । पूर्वमे ई लोकनि विशिष्ट राज्यादेशक मुनादी दैत रहलाह अछि । उपनयन-विवाहादि शुभकर्ममे तेँ ई लोकनि विभिन्न वाद्यादि बजबितहि छथि, कतोक जातिक मृतकक श्मशान-यात्राक अवसर पर सेहो वाद्यवादन करैत छथि । शुभ अवसरक हेतु मिथिलाक रसनचौकी वाद्य अति प्रसिद्ध रहल अछि जाहिमे ढोल-पिपही आदि वाद्यक प्रधानता रहैत अछि। चर्म आधारित वाद्य सभ यथा ढोल-नगाड़ा, खुरदक, नाल आदिकेँ छारबाक व्यवसायसँ सेहो ई जाति संपृक्त अछि।

सामाजिक संस्तरणमे चमार जातिक स्थान न्यून बूझल जाइत रहल अछि । कृषक मजदूर ओ वंश व्यवसायीक रूपमे सेहो ई जाति सामाजिक व्यवस्थाक अभिन्न अंग बनल रहल छथि । मुदा ऐतिहासिक कारणे चर्मोद्योगपर एहि जातिक वर्चस्व समाप्तप्राय छैक, तेँ एहि उद्योगमे लागल चमार मात्र भङठीक काजमे निरत अपन आजीविकाक जोगाड़ करैत देखल जा सकैत छथि । साम्प्रतिक सरकारी ऋण-व्यवस्था द्वारा अवश्य एहि जातिक लोक लाभ उठा रहल छथि आ मिथिलाक गामे-गाम चर्मोद्योगक विकेन्द्रीकृत स्वरूप नजरि आबऽ लागल अछि । ◆

धोबी जातिक सामाजिक स्वरूप

मिथिलाक सामाजिक जीवनमे धोबीक स्थान महत्त्वपूर्ण छनि । हिनका लोकनिक पारम्परिक व्यवसाय मैल वस्त्रकेँ धोकऽ साफ करब अछि । सौर-गृह, मृतकक परिवारक एवं सभ जातिक कपड़ा धोबाक कारणे यद्यपि एहि जातिकेँ सामाजिक स्तरमे न्यून बूझल जाइत रहलनि अछि मुदा पौनी-पसारीक रूपमे हिनक स्थान प्रमुख अछि आ सवर्णोक कन्याक विवाह बिनु धोबिनक सोहाग देने पूर्ण नहि बूझल जाइत अछि । जनउमे बरुआक कपड़ा धोबिए द्वारा रँगैबाक परिपाटी ई सिद्ध करैछ जे कपड़ा पर रंग करब सेहो एही जातिक व्यवसाय रहल होयत जे कालक्रममे हिन्दू वस्त्र-व्यवसायक समापनक संग रंगरेजक हाथमे चल गेल होयत । एहि जातिक उपनाम रजक सेहो एही तथ्यकेँ सिद्ध करैत अछि ।

एहि जातिक उपाधि बैठा होइछ जखन कि पाट पर कपड़ा साफ करबासँ लऽ कऽ कपड़ा बनयबाकाल धरि ई लोकनि ठाढ़े भऽ कऽ काज करैत छथि । तेँ कोनो अज्ञात कवि सांसारिक अज्ञानक परिचय एहि पदमे दैत कहने छथि–

उट्ठा के बैठा कहय चलती के कहय गाड़ी।
मूरख के पण्डित कहय पण्डित के भिखारी॥

एतय गाड़ीसँ गड़ल, एकटा पण्डितसँ कुम्हार आ दोसरसँ विद्वान अकिञ्चन ब्राह्मणक बोध होइत अछि । धोबिक अन्य उपाधि रजक, साफी, चौधरी आदि अछि।

धोबिक पाटक सम्बन्धमे एहन मान्यता अछि जे जँ ओकरा निशाभाग रातिमे केओ चोरा कऽ गामक कोनो चौक पर गाड़ि दिअए तँ ओहि गामक दुःख-दारिद्र्य समाप्त भऽ जाइत छैक । मुदा एहन प्रयत्न कयनिहार सुरक्षित नहि रहि सकैत अछि। एतऽ धरि जे पाट पर गर्हित काज (पनिछोआ आदि) कयनिहारकेँ पाट स्वयं उनटा दैत छलैक । पाटमे एतेक सत्त छैक । पाटक

मजगूती ओकर निरन्तर कपड़ाक मारि सहबासँ स्पष्ट अछि । प्रत्येक माए अपन बच्चाक ओहने मजगूतीक कामना करैत तेल लगबैत काल ई पद पढ़ैत छथि–

बौआ हमर ओल्ह सन, कोल्ह सन।
धोबियाक पाट सन, कुम्हराक चाक सन॥

धोबी जतय कपड़ा साफ करैत छथि से धोबीघाट कहल जाइत अछि। धोबिघट्टाक पानि स्वभावतः मलिनतम होइत अछि । एकर सम्बन्धमे एकटा लोकोक्ति अछि–

नींद ने जानए टूटी खाट ।
प्यास ने मानए धोबीघाट ॥

सैकड़ो पोशिन्दाक कपड़ा अलग–अलग राखि सकबाक स्मरण–शक्तिक सम्बन्धमे कहल जाइछ जे धोबिनकेँ सीताजीक वरदान भेटल छनि । गयामे राजा दशरथकेँ पिण्डदान देबाक हेतु जखन राम–लक्ष्मण–जानकी पहुँचलीह तँ राम–लक्ष्मण वस्तु जुटयबाक हेतु बाहर गेलाह । ताहि बीच एकाकी सीता लग दशरथक प्रेत पहुँचलथिन आ सीताजी तिलांजलि दऽ देलथिन । जखन रामचन्द्र घुरलाह आ सीता ई कथा कहलथिन तँ रामकेँ विश्वास नहि भेलैन्हि। ओ साक्ष्यक माँग कयलथिन । सीताजी वस्तुक अल्पताक कारण बहुत कम्मे वस्तुसँ पिण्डदान कयने छलीह तेँ पिण्डदानक बाद बहुत अल्प वस्तु सभ एम्हर–ओम्हर छीटल छल जे गाय ओ खिखिर खयने छल। जखन ओकरा दुनूकेँ साक्ष्यक रूपमे बजाओल गेल तँ दुनू लोभमे पड़ि गेल आ सोचलक जे जखन राम स्वयं पिण्डदान करताह तँ आर अधिक बलि खयबाक मौका भेटत। तेँ ओ दुनू झूठ बाजि देलक । सीताजीक पिण्डदानक क्रिया एकटा धोबिन सेहो देखैत रहय जे सत्यकेँ उद्घाटित कयलक । सीताजी तखने गायकेँ कलियुगमे विष्ठा खयबाक शाप आ खिखिरकेँ ई शाप देलथिन जे ओ कतबो नम्हर बिल खूनत राति कऽ ओकर नाङरि बाहरे रहतैक। एही कारणें खिखिर रातिमे ठिठुरैत रहैत अछि आ गाय द्वारा विष्ठा खयल जाइत अछि । तकरा पाछाँ सीताजीक वएह शाप छनि । धोबिनक सत्यकथासँ प्रभावित सीता ओकरा कपड़ाक प्रतियें स्मरण–शक्ति तीव्र होयबाक वरदान देलथिन ।

मैल चिकाइट आ सौर गृह पर्य्यन्तक कपड़ा धोनिहारि धोबिन मैला लागल कपड़ा लेब खोम्ह मानैत छथि । एहन मान्यता छैक जे जीह पर फोंकावला बीमारी पपियाहामे जँ धोबिनकेँ जीह देखा देल जाय तँ बीमारी छूटि जाइत छैक मुदा एहन जीह देखब सेहो धोबिन खोम्ह मानैत छथि । पोशिन्दा द्वारा धोअल कपड़ा लेबाक बाद ओकरा पहिने चारमे छुऐबाक परिपाटी छैक ।

धोबिकेँ पोशिन्दाक काजक प्रति असावधान ओ समयक पाबन्दी रहित बूझल जाइत छैक । कहबी छैक 'धोबी, नाऊ, दरजी, ई तीनू अलगरजी'। धोबीक कपड़ा पिटबाक दण्ड धोबिया–डांग कहबैत अछि । डाङकेँ मुङरा सेहो कहल जाइत अछि। एकर सम्बन्धमे प्रसिद्ध उक्ति अछि–

'धोबियासँ की तेलिया घाटि ।
एकरा मुङरा ओकर जाठि ॥'

मुदा धोबीकेँ अविश्वसनीय जाति बूझल जाइछ । एहन मान्यता अछि जे धोबी अपना हेतु कपड़ा कीनैत नहि अछि आ पोशिन्देक कपड़ासँ अपनो काज चला लैत अछि जे अनेक लोकोक्तिसँ विदित होइछ जेना–

'धोबिक बापक किछु नहि फाट'
'तीन बेर चोरि भेने धोबिया सेठ'
'राजाक ओढ़ना धोबिक ओछौना'

मुदा कोनो गाममे अधिक धोबिक वास भेने प्रतियोगिताक कारणेँ कपड़ा नीक जकाँ साफ होइत छैक जे एहि उक्तिसँ प्रतिध्वनित होइछ–

'जब धोबी पर धोबी बसे
तब गेन्हरा पर साबुन पड़े'

तेँ धोबिक प्रति लोकक संवेदना सेहो तेहने सन । कहल जाइछ जे धोबिगामामे आगि लगलै से सुनि आन गामक लोक कहैत भेल–**'जेहन धोबिगामा तेहन धाह नहि** ।

मुदा धोबी जातिक लोक मेहनती होइत छथि आ हुनका सभक प्रत्येक कैञ्चा हुनक पसेनाक मूल्य थिक ताहिमे कोनो संदेह नहि । दिन–राति हुनका

सभक परिवारक समस्त जन सफाइक कोनो-ने-कोनो उद्योगमे लगले रहैत छथि जाहिमे धोबिनक सेहो प्रमुख भूमिका रहैत छनि जे एहि लोकोक्तिसँ प्रतीत होइत अछि । एकटा धोबिनक बेटीक सम्बन्धमे कहल गेल अछि–

''नैहरा जो बेटी ससुरा जो
बहियाँ घुमा बेटी कत्तहु खो।'

मुदा जखन लोक स्वयं कपड़ा साफ करैत अछि तँ धोबिक नाम लेब अशुभ बूझैत अछि । कहल जाइत अछि जे से कयने कपड़ा साफ नहि होइत छैक ।

धोबी द्वारा कपड़ाक यातायातक हेतु गदहाक सहायता लेल जाइत अछि। गदहा मूढ़ताक हेतु रुढ़ भऽ गेल अछि । कहल जाइछ जे बैशाख मासमे जखन हरियर दूभिक सर्वथा अभावे रहैत छैक, धोबि अपन गदहाकेँ छान लगा चरबाक हेतु छोडि दैत अछि। जखन गदहा दूभिक अभावें चरैत-चरैत बहुत दूर चलि जाइत अछि आ पाछू घूरि तकला पर अपना द्वारा चरल गेल विस्तृत क्षेत्रक अवलोकन करैत अछि तँ पेट नहियों भरला उत्तर प्रसन्नताक सीमा पार कऽ हेंको-हेंको करैत नाचऽ लगैत अछि । तँ एकरा वैशाखनन्दन सेहो कहल जाइत छैक । खिसिआयल गदहा पछिला दुनू टाँगसँ शत्रु पर प्रहार करैत अछि जकरा दुलत्ती कहल जाइत छैक ।

गदहाक सम्बन्धमे सेहो अनेक कहबी प्रचलित अछि, जेना–

'धोबिया के ने आन बहान ।
गदहा के ने आन किसान ॥'

'धोबिक गदहा ने घरक ने घाटक'

'गदहा गेलाह स्वर्ग, छान लगले गेलनि'

'गदहा खसला स्वर्गसँ, रुसला गामक लोकसँ'

गद्हाक व्यक्तित्ववला उग्र गदहपचीसी कहल जाइछ । गदहा सन मूर्खत्व गदहपनी कहल जाइछ । सन्ध्या ओ निशाक मध्यवर्त्ती पहर गदहबेर होइछ । **'गदहा जनम तरब'**, **'बाप गदहिया पूत ब्रह्मचारी'** आदि उक्ति गदहेसँ सम्बद्ध अछि ।

धोबिक गृहदेवताक रूपमे काली, बन्दी, महामाया, गोरैया, बरहम, सोखा, धर्मराज, मोतीदाइ, कारिख, बिसहरा आदिक पूजन-परम्परा अछि । एहि जातिक जातीय देवताक रूपमे गरीबन भुइयाँक पूजा होइत छनि ।

मिथिलाक ई श्रमाश्रयी व्यवसायी वर्ग एहि ठामक आर्थिक ओ सामाजिक जीवनक युग-युगसँ अभिन्न अंग बनल छथि मुदा साम्प्रतिक व्यावसायिक सुविधाक अभावमे ई वर्ग तथाकथित आधुनिक वस्त्र-प्रक्षालन पद्धतिक अभावमे युगक समानान्तर विकास-रेखामे पछुआयल देखि पड़ैत छथि ।



हलुआइ जातिक सामाजिक स्वरूप

'मधुरेण समापयेत्' मिथिलाक लोकजीवनक सांस्कृतिक वचन थिक। 'चीनीक लड्डू, टेढ़ो मीठ', 'दिल्लीक लड्डू जे खयलक सेहो पछतायल जे नहि खयलक सेहो', 'मुँह देखि कऽ मुङ्गबा परसब' आदि उक्ति मिष्टान्नक प्रति एतुक्का जनमानसक आकर्षणक अभिव्यक्ति अछि । मधुरक निर्माणसँ सम्बद्ध व्यवसायमे एहि ठामक जाहि जातिक एकाधिकार छैक ओकरा हलुआइ कहल जाइत छैक ।

प्रो. हंसराज हलुआइक व्युत्पत्ति हलवाही-हलवाइ-हलुआइसँ मानलनि अछि।[1] गीतामे 'कृषि गौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्'[2] कहल गेल अछि। कृषिकर्ममे लागल वैश्यक जे समुदाय हलवाही सेहो करैत छल पछाति काल हलुआइ कहौलक । मुदा हिनक जातीय नामक व्युत्पत्तिक ई मूल वैश्य मात्रक हेतु सत्य अछि आ हलुआइक विशिष्ट व्यवसायसँ सर्वथा असम्बद्ध अछि । तेँ एकर व्युत्पतिकेँ हलुआ नामक मिष्ठान्नसँ सम्बद्ध कहल जाइत अछि । एहि मिष्टान्नक निर्माणसँ जीविका प्राप्त करऽवला अथवा मिष्टान्न मात्रक व्यवसायसँ आजीविका ग्रहण करऽवला जाति हलुआइ कहौलक ।

मिथिलामे हलुआइक तीन गोट उपजाति भेटैत अछि-कनौजिया, मधेशिया, ओ कानू । कनौजिया उपजातिक सम्बन्ध कन्नौजसँ प्रव्रजित हलुआइक समुदायसँ बुझना जाइछ । मधेशिया लोकनि अपनाकेँ खण्डवला राजकुलक संग मध्यदेश (मध्यप्रदेश) सँ आव्रजित बुझैत छथि । एहि दुनू उपजातिक लोक मिष्टान्न मात्रक व्यवसाय करैत छथि । कानू उपजाति कंसारमे भूजा भूजि कऽ जीविका प्राप्त करैत छथि ।

कानूक उत्पत्तिक सम्बन्धमे विलियम क्रुक एकटा अत्यन्त मनोरंजक कथाक संग्रह कयने छथि । मिर्जापुर (उत्तरप्रदेश) मे प्रचलित एहि कथाक अनुसार एक गोटाकेँ तीनटा बेटा आ बाबनटा महुआक गाछ छलैक । बूढ़ भऽ गेला पर ओ अपन गाछीक बँटवारा तीनू भाइमे कऽ देबऽ चाहैत छल । अन्तमे

ई निश्चिय भेल जे एक भाइ पात लऽ लेथि, दोसर फूल लऽ लेथि आ तेसर फल । जाहि भाइकेँ पात हिस्सामे पड़लैक ओकरे वंशज कानू कहौलक आ एखनहुँ कंसारमे पातेक आँच द्वारा आजीविका ग्रहण करैत अछि । जाहि भाइकेँ फूल भेटलैक ओ ओहिसँ दारू चुअयबाक व्यवसाय कयलक आ ओकर वंशज कलवार कहबैत छैक । तेसर भाइ महुक फलकेँ पीसि कऽ तेल तैयार करबाक व्यवसाय ग्रहण कयलक आ ओकर वंशज सम्प्रति तेली कहबैत छैक ।[3] दन्तकथाक एहि आधारसँ जातिक निर्माणमे व्यवसाय ग्रहणक भूमिकाक अहम्मन्यता स्पष्ट होइत अछि ।

जातीय संस्तरणमे मिथिलाक हलुआइ लोकनि कनौजियाकेँ श्रेष्ठतम तथा कानूकेँ न्यूनतम सामाजिक स्तरक मानैत छथि । यद्यपि मिष्टान्न ओ भूजाक व्यवसाय कोनो उपजातिक लोक कऽ सकैत छथि मुदा भूजाक व्यवसायसँ बेसी सम्पृक्त कानू उपजातिए अछि ।

एकहि जातिक भिन्न-भिन्न उपजाति मधेशिया ओ कानूक बीच सामाजिक संस्तरणक दूरी क्रमशः बढ़ैत गेलनि अछि । कानू उपजाति मध्य सतभुज्जा, पचभुज्जा, तिनभुज्जा आदि उपजातीय विभाजन सेहो एहि तथ्य दिसि इंगित करैत अछि ।

हलुआइ लोकनिमे गोत्रक अवधारणा तँ नहिञे जकाँ अछि मुदा वैवाहिक सम्बन्धमे मूल-विचार होइत छैक आ पितृकुलक सात ओ मातृकुलक पाँच मूलक मिलान कऽ सम्बन्ध नहिञे ठहरला पर विवाह सम्बन्ध वैध बूझल जाइत छैक । हिनक किछु संकलित मूल सभ अछि-अँकुरी, कलशडीह, करनी, कहिनबारि, कनही कनबारि, कराया, गेहूमी, घरबहरा, घरभितरा, छितनी, छौडीहा, जीराबस्ती, टारी, ढकाइत, तीनडीहा, दिघबारि, नरौना, पचडीहा, पँचपिढ़िया, पचोतर, मडुअनि, मडुआडीह, मनेमनारस, लटकौआ, सटकौआ, सिंघागढ़, संजीरा इत्यादि । वैश्य जागृति ज्योति नामक पत्रमे अखिल भारतीय स्तर पर हलुआइ लोकनिक मूलक संकलन भेल अछि ।[3]

सामान्य हिन्दू संस्कार ओ देवी-देवताक अवधारणासँ आबद्ध एहि जातिक विशिष्ट गृहदेवताक रूपमे कारिख, कलाली, डीहबाबा, दयाराम, पाँचोपीर, बहरिया बाबा, फेकूराम, मनसाराम, मीरसैयद, सुलतान खाँव आदिक पूजा होइत छनि । श्रीगणिनाथ गोविन्द एहि जातिक अति विशिष्ट देवता छथि

जनिक सम्बन्धमे अनेक लोकगीत ओ लोकगाथाक प्रचलन अछि । एहि लोकगाथाक विभिन्न क्षेत्रीय स्वरूप दृष्टिगोचर होइत अछि ।[5]

खाद्य सामग्रीक व्यवसायी एहि जातिक मिथिलाक सामाजिक जीवनमे अत्यन्त उच्च संस्तरण छनि । मिथिलाक समस्त हाट-बजार, चट्टी-चौकपर हिनका सभक दोकान नवागन्तुकक आगत-भागतमे लागल देखि पड़ैत अछि। उपनयनाक भोज हो वा मधुश्रावणीक साँठ हलुआइक जरूरति पड़ितहिँ छैक। गाम-गाममे कानूनिक कंसार संध्याक बेरमे विभिन्न प्रकारक अन्न लेने ग्रामीण लोकनिक गोलसँ आबाद देखि पड़ैत अछि । अगहनीक कटनीक समय लाइ-मुरही लेने बौआइत कानू खेतक आरि-धूर छनैत देखि पड़ैत छथि । मुदा स्वागतक हेतु चाह-प्रधान एहि युगमे हलुआइक मिष्टान्न उद्योग प्रभावित भेल अछि । एहि उद्योगक विकेन्द्रीकरणक कारणेँ जातीय एकाधिकारक समाप्तप्राय भय जयबाक स्थितिसँ अधिकांश हलुआइ मिठाइक दोकानमे मजदूरक रूपमे काज करैत देखल जाइत छथि । मशीनीकरणक एहि युगमे भूजा भुजबाक व्यवसाय सेहो कानूक हाथसँ छिना रहल छनि । शिक्षा ओ अर्थक क्षेत्रमे सेहो कानू-हलुआइ जातिक स्थिति सर्वथा समुचित नहि कहल जा सकैछ ।

संदर्भ-निर्देश

1. स्मारिका, श्रीगणिनाथ समिति, गोविन्द घाट, पटना-6, 1962, पृ. 17
2. गीता, 18/44
3. द ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स ऑफ द नॉर्थ वेस्टर्न इण्डिया, भॉल्यूम-4, विलियम क्रुक, कॉस्मो पब्लिकेशन्स, 1975 पृ. 372
4. वैश्य जागृति ज्योति, 1893, बेहरामबेग, लालकुआँ, दिल्ली-6, फरवरी 1981 अंक, पृ. 25-28
5. स्मारिका, मध्यदेशीय वैश्य महासभा, जिला सम्मेलन समस्तीपुर, वर्ष 1975-76, पृ. 13 तथापि स्मारिका, श्रीगणिनाथ समिति, गोविन्दघाट, पटना-6, वर्ष, 1962, पृ.27



मलाह जातिक सामाजिक स्वरूप

मिथिलाक आम, पान, माछ, मखान नामी अछि । माछ ओ मखान जलसँ प्राप्त होइत अछि । नदीमातृक देश होयबाक कारणेँ मिथिलामे जलीय भू-भागक प्रचुरता अछि । पोखरि खुनायब एहि ठामक धार्मिक जीवनक प्रमुख अंग रहल अछि। अनेक पैघ-पैघ पोखरिक सम्बन्धमे तँ एहि ठाम किंवदन्ती सुनल जाइछ जे ओ राता-राती दैत्येक द्वारा खुनाओल गेल अछि । नदी, पोखरि, चर-चाँचर मिथिलाक मत्स्य व्यवसायक प्रमुख स्रोत रहल अछि । गाम-घरक लोकक स्नानादिक हेतु उपयोगी पोखरिमे तँ माछेटाक उत्पादन होइत अछि मुदा अन्य जलाशय, डबरा-डबरी, खत्ता-खुत्ती आदि माछक अतिरिक्त मखान ओ सिंघाड़ाक उत्पादनमे सेहो सहायक होइत अछि । जलसँ प्राप्त एहि समस्त उत्पादनमे मिथिलाक एकटा जाति-विशेष लागल छथि जे मलाह जातिक नामे जानल जाइत छथि । माछ ओ मखानक उत्पादनक अतिरिक्त ई जाति जलसँ प्राप्त सितुआसँ चून बनैबाक व्यवसाय सेहो करैत छथि आ नदीक घाटपर लोकक आबा-जाहीक हेतु जल-परिवहन पर सेहो एही जातिक एकाधिकार छनि ।

एहि तरहेँ मलाह पूर्णतः व्यवसायी जाति थिकाह जे जलसँ सम्बद्ध व्यवसाय करैत छथि ।

मलाह अरबी शब्द थिक जकर अर्थ अछि खेबनिहार । एहिसँ लगैत अछि जे एहि जातिक ई नाम बहुत प्राचीन अछि । मुदा जल-व्यवसायक प्राचीनता तँ सर्वथा निर्विवाद अछि । मलाह नामकरणसँ पूर्व ई जाति धीवर ओ कैवर्त्त रूपमे जानल जाइत छल । धीवर शब्द मिथिलामे धिम्मरक रूपमे जीवित भेटैत अछि जे एकटा पृथक् जातिक हेतु रूढ़ भऽ गेल अछि । ई सभ कानू-हलुवाइक व्यवसाय करैत छथि । सम्भवतः जल-व्यवसायीक जे वर्ग खाद्य पदार्थक व्यवसाय करऽ लागल, पछाति धिम्मर कहौलक । कैवर्त्तकेँ मनुस्मृति (10/34) मे नौकर्मजीवी कहल गेलनि अछि । कैवर्त्त शब्द सम्प्रति

केवट रूपमे मलाहक एकटा उपजातिक नाम थिक जे अपनाकेँ भगवान रामचन्द्रकेँ बनवासक हेतु गंगा पार करौनिहार केवटक वंशज मानैत छथि आ सम्प्रति घटबारक काज करैत छथि । ओना केओट एकटा पृथक् जातिक रूपमे सेहो मिथिलामे विद्यमान छथि जे गृहस्थपयोगी पानि भरबाक काज करैत छथि। सम्भवतः इहो जल-व्यवसायीक एकटा पृथक् कयल वर्ग थिकाह जे अपन पृथक् जातीय व्यवसायसँ चीन्हल जाय लागल छथि । मलाहक हेतु अन्य शब्द मैनालः भेटैत अछि।[1]

मिथिलाक मलाह जाति अनेक उपजातिमे विभाजित छथि जेना बीन, बाँतर, बनपर, सोरहिया/सुरहिया, तिअर, नोनफर, गोंढ़ि, खुनौट, पछिमा, चाभ, केवट, कोल्ह, कठौतिया, जेठौतिया, खरकट/खरकौट आदि । बीन ओ बाँतर आब पृथक् जाति भऽ गेल अछि जे बाँसक विभिन्न प्रकारक बर्त्तन बना कऽ गुजर करैत अछि । नोनफर प्रायः मलाह जातिक ओ वर्ग थिकाह जे जल-व्यवसायकेँ त्यागि पछाति नोन बनयबाक व्यवसाय करऽ लगलाह आ पृथक् जातीय अस्तित्वं भऽ गेलाक कारणेँ नोनिआ कहौलनि । अन्य उपजातीय नामसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे मलाह जाति विभिन्न जनजातिक सम्मिश्रणसँ बनल अछि आ ओ सभ जनजाति अपन व्यवसायिक एकताक कारणेँ एकटा पृथक् जातिक निर्माण कयलक ।

एहि जातिमे सहनी, माँझी, मुखिया, सिंह, चौधरी, मंडल आदि उपाधि देखि पड़ैत अछि ।

मलाहक सम्बन्धमे अनेक लोकोक्ति मिथिलाक जनजीवनमे प्रचलित अछि जेना मलाह ने मानय सलाह; सभ ठाम राम-राम बाड़ी पर नै राम-राम; मुसहर के चलचल-मलाह के पैस-पैस; गोआरक सराहल माछ आ मलाहक सराहल दही दुनू एके रंग; जतेक माछ जाल देखै छै ततेक जे मलाह देखय तँ करेजे फाटि क' मरि जाय, रहै छी सदिखन पानिञेमे मुदा नहाइ छी कहियो ने; जलमे मलाह, वनमे गोआर, नैहरमे स्त्री अपन नहि होइछ; आदि ।

आने व्यावसायिक जाति जकाँ मलाहो लोकनिक अपन सामाजिक ओ सांस्कृतिक व्यवस्था विकसित भऽ गेल छनि । एहू जातिक सामाजिक संगठन सभा-सभैती कहल जाइत अछि । एहि संगठनक प्रमुख काज शुभ ओ अशुभ

अवसर पर भोज आदिक व्यवस्था करब तथा जातीय व्यवस्थाक प्रतिकूल आचरण कयला उत्तर दंड-व्यवस्था करब थिक ।

मलाह जातिक विविध संस्कार आने हिन्दू जातिक अनुरूप होइत छनि। बाल-विवाह ओ विधवा-विवाह एहि जातिमे प्रचलित अछि । विवाह बेसी काल अपने उपजातिमे कयल जाइत छैक । उपजातिकेँ जातीय संस्तरणक मानदण्डक रूपमे ग्रहण कयल जाइत छैक ।

मलाह जाति सामान्य हिन्दू अवधारणाक अनुरूप विभिन्न वैदिक ओ पौराणिक देवी-देवताक पूजा करैत छथि । मुदा एहि जाति मध्य किछु खास जातीय देवताक पूजाक विधान सेहो छैक । एहि जातीय देवता सभमे दुलरादयाल/नटवर दयालसिंह, अमरसिंह, जयसिंह, केँवल महाराज, गांगो देवी, झम्मन मरड़, ठीठामल / ठीठरमल, बैहरू तिअर; झालाराम, रइया-रनपाल, मीर सैय्यद/सुल्तानखाँव, कुसियारमल्ल, मातर आदि प्रमुख छथि । कमला ओ कोइलाक सेहो पूजा कयल जाइत छनि । एहि देवता सभक वार्षिक पूजन साओनमे भगत, मनरिया आदिक संग कयल जाइछ। दैनिक जीवनमे जलकरमे जाल खसयबासँ पूर्व सभ देवताक सुमिरन आवश्यक मानल जाइत अछि । जलकरक भीड़पर ठाँव कऽ देवताक नामे धूर बान्हल जाइछ (कबुला कयल जाइछ)। कमलाकेँ पाठी चढ़ैबाक परिपाटी छैक; दुलरा दयाल, अमरसिंह, केवल, जयसिंहकेँ छागर; गांगो गोढ़िनकेँ आदी-गूड़, सेनुर-टिकुली आ सुल्तानखाँकेँ मुर्गा आ ठढ़िया (गरगराबाला मुसलमानी हुक्का) चढ़यबाक प्रथा छैक । फूल-पान-प्रसाद तँ सभ देवताकेँ चढ़ाओले जाइत छनि ।

एहि सभ लोकदेवतासँ सम्बद्ध लोकगाथा ओ लोकगीतक प्रचार मलाह जातिमे अछि । एहि लोकगीत सभमे लोकनायक सबहिक अद्‌भुत पराक्रम ओ सहज प्रेमक उल्लेख भेटैत अछि । द्रष्टव्य अछि गांगो देवीक एकटा गीत जाहिमे गांगो देवीक अपन प्रियसँ मिलनक हेतु शृङ्गारक वर्णन भेटैत अछि–

कमला से पुरुब गांगो कोशिका से पच्छिम
ताहू से पच्छिम बरहम थान ।
कहमा नहेलें गांगो कहमा लट झारलें
कहमा केलें सोलहो शृङ्गार ।
गंगा हम नहेलहुँ सेवक तिरहुत लट झारलौं ।

घरे कैलों सोलहो शृङ्गार ।
कथी लय नहेलय गांगो कथी लय लट झारलें
कथी लय कैलें सोलहो शृङ्गार ।
देह लय नहेलहुँ सेवक केशक लट झारलौं
पियबा लय कैलौं सोलहो शृङ्गार ।

एकटा अन्य गीतमे मृगाक शिकार कऽ गांगो देवीक हेतु चोली बनयबाक विवरण भेटैत अछि–

पर्वत महारपर चनसुर हे बुनलौं
सेहो चनसुर मिरगा चरि गेल ।
बरजू बरजू राजाजी अपन मिरिगबा
गांगो छौड़ी गेल खिसिआय ॥
तिरबा-धनुषबा राजाजी काँखतर जँतलनि
वने वने खेलथि शिकार ।
मिरगाके मारि राजाजी खलरी धिचेलनि
गाँगो छौड़ीके चोलिया देलनि सिलाय ॥
पहिर ओढ़िए गांगो भेल समतूलबा
चलि भेल लबी ससुरारि ।
एक कोस गेली गांगो दुइ कोस गेली
तेसर कोस लबी ससुरारि ॥

कमलाकेँ मलाह अपन रक्षिका बुझैत छथि । नदीक अगम पानिमे, मझधारक नगदामे, एकठा नाव पर खेबैत मलाह कमलाक भरोसे पानिकेँ अपन घरे बुझैत छथि । अवकाशक क्षणमे मानरिक थापपर कानपर हाथ धयने मिथिलाक मलाह अपन एहि देवीक गीतक झोंकमे अल्पविस्मृत भेल देखल जा सकैत छथि–

रुनुझुनू बाजै छै बजनिआ
आबै छथिन कमला मैया के रन्थ ॥
कहमा बैठेबै छप्पन कोटि देवता
कहमा बैठेनै कमला मैयाके रन्थ ।
चारू भाग बैठेबे छप्पन कोटि देवता

बीचेमे बैठैबै कमला मैयाके रन्थ ॥
कथी लय बोधबै छप्पन कोटि देवता
कथी लय बोधबै कमला मैयाके रन्थ
फूलपत्ती लय बोधबै छप्पन कोटि देवता
परबा लय बोधबै कमला मैयाके रन्थ॥

मिथिलाक सामाजिक जीवनमे मलाहक स्थान द्विजेतर जातिमे उच्च मानल जाइत छनि । जल-व्यवसायसँ सम्बद्ध ई जाति मिथिलाक प्रमुख खाद्य माछक उत्पादन करैत । माछकेँ शुभसूचक बूझल जाइत छैक । मैथिल ब्राह्मणो माछकेँ प्रिय खाद्य बुझैत छथि । कहल जाइत अछि जे माछ-मखान स्वर्गोमे दुर्लभ छैक । मिथिला मध्य प्रचलित विभिन्न संस्कारमे माछकेँ सेहो आवश्यक बुझल जाइत छैक । चतुर्थी ओ कहौतियाक भारमे माछ पठायब अनिवार्य छैक। छठिहार, श्राद्ध ओ जितिया पावनिमे सेहो माछक उपयोग आवश्यके होइत छैक। माछक संगे मिथिलाक जनजीवनक संपृक्ति माछसँ सम्बद्ध अनेक लोकोक्तिक दैनन्दिन जीवनमे प्रयोगसँ स्पष्ट अछि, जेना–

'माछ भात पाँच हाथ'
'एक पोठ पर नौ रोट'
'भुल्ला माछ कबइके झोर।
तइ लय भुल्ला कंठी तोर ॥'
'मरलो भुन्ना तऽ रहुक दून्ना'
'माघ मास जँ माङुर खाइ।
ससरि-फसरि बैकुण्ठे जाइ ॥'
'उड़न्तमे बगेड़ी, गरन्तमे ओल, जलन्तमे रहु'
'टेङरा पोठी चालि दिअए रहू सिर बिसाय'
'रहु के मूड़ी भुन्ना के पेट ।
दहीक ऊपर गुड़ के हेठ ॥'
'मडुआ मीन चीन संग दही।
कोदोक भात दूध संग सही ॥'
'भोरा खाय से घोड़ा खाय'
'मारी माछ ने उपछी पानि'

'तोरा के पुछौ गे ढलोइ'

'अघायल बकके पोठी तीत'

'सीरा खाय मीरा पुच्छी खाय गुलाम'

'ककरो कुटिया ककरो झोर ।
ककरो आँखिसँ बहै छनि नोर ॥'

'पानीमे मछरी, नौ नौ कुटिया बखरा'

'माछ आ पहुना, तीन दिन कहुना'

'तरे तरे सौरा जाय।
कोढ़िया कुत्ता छुच्छे खाय॥'

'बेच दऽ कऽ जे कीनथि माछ ।
ताहि घर लछमी खलखल नाच ॥'

'जत बल होंहि माछके खाये ।
तत बल जाँहि गाँज घिसिआये ॥'

'माछ सङ्गे दुध खिचड़ी खाय ।
मुइला बहुक नैहर जाय ॥
बाट चलैत जे गाबय गीत
डाक कहय जे तीनू पतीत ॥'' इत्यादि ॥

माछक सम्बन्धमे एकटा सुविख्यात पिहानी अछि । एकटा माछक आगाँ बन्सी पाथल गेलैक । ओ माछ पूर्वहि एक बेर बन्सीक बोरक मजा बूझि लेने छल मुदा कोनहुना बंसीमे फँसबासँ बाँचि गेल । तथापि ओकर गलफर एहि दुर्घटनामे आहत भऽ गेलैक । व्यथामे जखन पानिपर दहाइत छल तँ चील्ह झपट्टा मारलकैक मुदा संयोगसँ ओ चील्हक लोलमे जयबासँ सेहो बाँचि गेल। पाथल बन्सीकेँ देखि ओ अपन अनुभवक आधारपर उत्तर देलकैक जे जाहि माछकेँ बन्सीक दाओ नहि गमल छैक तकरा लग बन्सी दातव्य–

'एक बेर बझयौ गलफर फट्यौ ।
बघवर पन्थ चील्ह से बच्यौ ।
जे नहि जानय बन्सीक फ्यौ ।
तकरा आगाँ बन्सी देअओ ॥'

मलाहक अन्य उत्पादन मखान देव ओ पितृकर्ममे आवश्यक बुझल जाइछ । कोजागराक मखान नामी अछि । अन्य जलीय उत्पादन सिंघाड़ा जँ खाद्य फूलक रूपमे गृहीत होइछ तँ चून गृह निर्माणक सामग्रीक रूपमे।

एंहि सभक अतिरिक्त मलाह नौ–परिवहन द्वारा नदीक घाटपर लोककेँ पार उतारैत अछि । छोट पैघ जिनसी नाओ द्वारा मिथिलाक व्यापारमे परिवहन व्यवस्था मे ई प्रमुख भूमिकाक निर्वाह करैत अछि ।

मुदा आब मलाह जातिक जातीय व्यवसाय विकेन्द्रित भऽ रहल अछि। व्यावसायिक लाभक कारणेँ जलकरक ठेकामे आनो आन जाति सभ सन्हिआय लागल छथि आ मलाह ठीकेदारक मजदूर बनि कऽ रहि गेल छथि । अधिकांश मलाह तँ कृषक मजदूर ओ खट्टिकक काज करऽ लागल छथि । ओना नदी कातक गाममे एखनो घटबारकेँ वार्षिक खेबा आने पौनी–पसारी जकाँ देबाक विधान छैके । 'खेबो दी भसिऐलो जाइ' लोकोक्ति तँ प्रचलित अछिए ।



कुरेड़ी जातिक सामाजिक स्वरूप

नागरिक सभ्यताक विकाससँ पूर्वहिसँ मिथिलामे अनेक जनजातिक निवास रहल अछि । एहिमे किछु जनजाति तँ मिथिलाक सामाजिक संरचनाक अंगीभूत एकाइ भऽ गेल मुदा किछु घुमक्कर प्रवृत्तिक जनजाति एखनो अपन पृथक् अस्तित्व बनौने अछि आ समाजक आधुनिक संरचनामे पूर्णतः समीकृत नहि देखल जाइछ । जाति निर्माणक प्रक्रिया ओ सामाजिक स्वरूपक वैशिष्ट्यक दृष्टिएँ किछु जनजातिक समाज-शास्त्रीय अध्ययन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि, जाहिसँ एहि जनजाति सभहिक सामाजिक संरचनासँ सम्बद्ध अभिरुचिपूर्ण तथ्यक उद्घाटनक संभावना ।

कुरेड़ी जाति मिथिलाक एहने घुमक्कर प्रवृत्तिवला जनजाति थिक । एहि जातिक निर्माणक सम्बन्धमे जनश्रुति अछि जे पूर्वमे ई जाति पाशकर्म द्वारा अपन जीवन व्यतीत करैत छल । पछाति एकर जे वर्ग लौठा (पासी जातिक तरछेबाकेँ तेज करबाक हेतु व्यवहृत काष्ठ दंड) उठा लेलक, से पासी कहौलक आ जे वर्ग नरसर (ऊँच स्थलपर वेध करबाक हेतु व्यवहृत कुरेड़ीक औजार विशेष) उठा लेलक, से कुरेड़ी कहौलक ।

व्युत्पत्तिक दृष्टिएँ कुरेड़ी शब्द गारुड़िकसँ संबद्ध बुझना जाइत अछि । अवश्य पूर्वमे ई जंगली जनजाति सापादिक मन्त्र-तन्त्रमे लागल रहल होयत । मुदा बादमे वर्ग विभाजन भऽ गेने एकेटा गारुड़िक जनजातिसँ सपेरा, कुरेड़ी, पासी आदि जाति उद्भूत भेल होयत ।

गारुड़िकसँ कुरेड़ी शब्दक व्युत्पत्तिमे ध्वनिक अघोषीकरणक स्थिति भेटैत अछि । ई पैशाची प्राकृतक प्रधान लक्षणक रूपमे वर्त्तमान छल । तेँ पैशाची प्राकृत कालमे ग़ारुड़िक जाति अनेक उपजातिमे विभक्त भेल होयत, से सहजहि अनुमान्य।

कुरेड़ी जातिक प्रमुख व्यवसाय मधु छोड़ायब अछि । मधु छोड़यबाक धंधा ऋतुसापेक्ष होयबाक कारणेँ जेठसँ माघ धरि एहि जातिक वृत्ति गाम-घरमे

हींग, जाफर, काफर, विषमा, शंखलाभी, टटैनी, अधकपारी आदि विभिन्न प्रकारक औषधि एवं जड़ी-बूटी बेचब रहैत अछि । मधु छोड़यबाक ओ विभिन्न औषधि बेचबाक क्रममे एहि जातिक लोक निरन्तर अटनशील जीवन व्यतीत करैत छथि । गाम-घरमे कुरेड़िन सभकेँ अपन ताओ-तेबरक संग भीख मङैत देखल जा सकैत अछि ।

कुरेड़ी जाति अनेक उपजातिमे विभक्त अछि । मिथिलामे एकर व्याधा, तरसुलिया, धोबी, नट, बक्खो, सपेरा, लठोर, बाभन, राजपूत, मगहिया ओ देसबारि उपजाति भेटैत अछि । देसबारिये उपजाति वस्तुतः कुरेड़ी नामे जानल जाइत अछि आ मधु ओ मोमक उत्पादनसँ संबद्ध अछि । ई सभ अपनाकेँ कुर्मी अथवा गोआर जातिक समकक्ष बुझैत छथि ।

धोबि, बाभन, राजपूत आदि उपजातिक एहि जातिमे स्थितिसँ ई तथ्य स्पष्ट होइत अछि जे कालक्रममे अनेक जातिक लोक अपन जातीय जीवनसँ उत्क्रमित अथवा अवक्रमित भऽ कुरेड़ी जातिक अङ्गक रूपमे समाविष्ट भऽ गेल होयताह ।

पासी जाति 'पाशिक' शब्दसँ व्युत्पन्न अछि । अवश्ये एहि जातिक लोक पूर्वमे व्याधा रहल होयताह आ कुरेड़ीक एकटा वर्गक रूपमे विद्यमान होयताह । मुदा बादमे कार्य विभाजन भेला पर पासी जाति तार-खजूरसँ मादक पेयक उत्पादनसँ संबद्ध भऽ अपन पृथक् अस्तित्वक निर्माण कऽ लेने होयताह। पासी जातिमे तरसुलिया ओ व्याधा उपजाति कुरेड़ीक समाने होइत छथि ।

कुरेड़ी जातिक सपेरा उपजाति साँप पकड़बाक तथा तन्त्र-मन्त्र द्वारा सापक विष झाड़बाक व्यवसायमे लागल छथि । एहि उपजातिमे 'गारुड़िक' शब्द एखनो जीवित अछि । मगहिया उपजातिकेँ गिदरमारा सेहो कहल जाइत छनि आ ई सभ मग्गहक डोम बूझल जाइत छथि । ई सभ गीदर मारि कऽ खाइत छथि तथा ओकर चामक विक्रय करैत छथि । गारुड़िक शब्दसँ सम्बद्ध एहि जातिकेँ एखनो धामिन आदि साँपक माँसु खाइत देखल जा सकैत अछि। नट-बक्खो आदि समाजमे मनोरंजन कऽ तथा लठोर जादू-टोनाक द्वारा आजीविका चलबैत छथि ।

कुरेड़ी जातिक उपाधि धामि, धर्म हिन्दू ओ विशिष्ट जातीय देवता बेनीराम छथि । बेनीरामक स्थान मोरङ स्थित लावाडीह छनि जे कुरेड़ी जातिक पवित्र तीर्थ बूझल जाइत अछि ।

कुरेड़ीक जातीय देवता बेनीराम वस्तुतः हजाम जातिक छथि आ हिनक प्रसंगमे लोकगीत ओ लोकगाथाक एकटा विशाल भंडार लोकमुखमे विद्यमान अछि, जकर अध्ययन-अनुशीलनसँ अनेक ऐतिहासिक तथ्यक उद्घाटनक संभावना अछि। बेनीरामक प्रति कुरेड़ीक समर्पण भाव ओहिना अछि जेना हजाम जातिक लोकक सेहो अपन एहि जातीय देवताक प्रति । कुरेड़ी जातिमे कोनो शुभाशुभ कार्यमे बिनु बेनीरामकेँ तपान देने पूर्णाहुति नहि मानल जाइछ। एहि जातिमे परिवार पितृ प्रधान होइत अछि मुदा वर्चस्व मातृपक्षेक रहैत छैक। पुत्रक अपेक्षा कन्याक जन्ममे बेसी प्रसन्नता देखल जाइत छैक । एहि जातिमे कन्याक मूल्य स्थिर होइत छैक । रूप, शील, भीख मङबाक कला, जादू-टोना आदि करबाक गुण आदिक आधार पर कन्याक मूल्य देल गेलाक उत्तरहि ओकर बिआह कोनो वरक संग होइत छैक । पिता कन्याक जन्मक बादेसँ पुत्रीकेँ बन्हक, भरना राखि टाका उधार लेल करैत अछि । पत्नी ओ पुत्रकेँ सेहो बन्हकी रखबाक व्यवस्था छैक । बन्हकीक अवधिमे भेल सन्तान पर ओकर वास्तविक पिताक अधिकार होइत छैक ।

कुरेड़ी जातिक विभिन्न सामाजिक संस्कार हिन्दू रीतिक अनुरूप होइत छैक। पुत्रक जन्म भेला पर छठिहारक रातिमे प्रसूता ओ बालकक सीरममे नर-सर राखि देल जाइछ आ ई कामना कयल जाइछ जे बालक शिकारी प्रवृत्तिक होअओ । पुत्रीक छठिहारमे ओकर सीरममे टिनही बाटी राखि ई कामना कयल जाइछ जे ओ भीख माङऽमे तेज होमय ।

कुरेड़ी जातिक सामाजिक संगठन सेहो बेजोड़ होइत छैक । एकर सामाजिक संगठनक कार्यपालिकाकेँ सभा कहल जाइत छैक जे स्वजातीय अपराधी व्यक्तिकेँ दण्ड-व्यवस्था, व्यभिचारक दण्ड-व्यवस्था ओ भोज-भात आदिक प्रबन्धमे सक्रिय देखल जाइत अछि । एहि सभामे माइञ्जन, सरदार आदि अनेक अधिकारी होइत छैक । पारस्परिक झगड़ाक हेतु कोनो कुरेड़ी न्यायालयक शरणापन्न नहि भऽ सकैत अछि । ओकर अपन जातीय-न्यायालय होइत छैक जाहिमे जज, सिपाही, दरोगा आदि अधिकारी रहैत छैक आ

अन्यायीकेँ सभा बैसला पर सुनबाइ कऽ तत्काले दण्ड-व्यवस्था करैत छैक । दण्डमे शारीरिक प्रताड़ना ओ आर्थिक दण्डक प्रधानता छैक । अर्थदण्ड तत्काल पत्नी, पुत्र आ निज शरीरक विक्रय द्वारा पुरबऽ पड़ैत छैक। शारीरिक प्रताड़नामे देह पर घोड़नक छत्ता देब, माथमे बेल बान्हि कऽ हिलायब, नाक-झोंट काटब आदि अछि ।

अटनशील जीवन होयबाक कारणेँ कुरेड़िन सभक चारित्रिक मर्यादाक स्खलनक अवसर नहि भेटैक तेँ सभकेँ सूर्यास्तसँ पूर्वहिं डेरा धऽ लेबाक आदेश रहैत छैक। सुबहा भेला पर नारीक जाच होइत छैक । जाचमे ओकर दुनू हाथक तरहत्थी पर पीपरक पातकेँ तागसँ लपेटि बान्हि देल जाइत छैक । पश्चात् ओहि पर लाल तप्त लोहक फार धऽ देला उत्तर जँ ओ स्त्री दस डेगक दूरी पर राखल दूटा कलशक दूरी धरि पार कऽ जाइत अछि मुदा ने ओकर हाथे जरैत छैक ने पीपरक पाते, ने सूते, तँ स्त्रीकेँ सती मानल जाइत छैक । अन्यथा ओकरा व्यभिचारक दण्ड देल जाइत छैक।

एतावता कुरेड़ी जाति अपन विशिष्ट सामाजिक संरचनाक दृष्टिेँ अध्ययन ओ अनुशीलनक विशिष्ट क्षेत्र अछि । मिथिलाक आर्थिक संरचनासँ जुड़ल ई जाति युग-युगसँ एहि ठामक सभ्यता ओ सांस्कृतिक परम्पराक अभिन्न अंग भऽ गेल अछि।



श्याम सिंह

लोकनायक श्यामसिंह सिंघिया गाममे डोम परिवारमे जनमल रहथि । दिन-राति सरो खेलाथि । वंशीधर नामक देवधाक ब्राह्मण खलीफा हुनक पराक्रम जानि माटि पठौलकनि–

काते-काते लिखल हइकऽ खेम कुशलतिया ।
बीचे-बीचे मरदक धिरकारना ॥
मरदक जँ जनमल हेतै अखाड़ा चढ़ि एतै ना ।
कादरके जनमल हेतै, घरे बैसि जेतै ना ॥

चिट्ठी पढ़ैत देरी श्यामसिंहक तरबाक लहरि मगज चढ़ि गेलनि । अस्सी मनके गुदरा, चौरासी मनके लाठी चढ़ाकऽ लाबी गहबरसँ विदा भेलाह। पहुँचला सिपथी पोखरिपर । बाट चलैत-चलैत ठेहिया गेल रहथि । अम्मल जागि उठल रहनि । गुदरासँ सबा सेर गाँजा निकालि चुटकी पर लटाबऽ लगलाह । लटौलाक बाद चीलममे साजि लगक कंसारमे कनूनिआँ सँ आगि माङऽ गेलाह । कनूनिञा लबलरस, जाति जानि आगि देबासँ इन्कार कयलक। श्यामसिंह खिसियाकऽ ओकरा पात समेत कंसारमे झोंकि देलनि । आगि निकालि चीलमपर दऽ सोंट मारलनि । सवा हाथ चीलम धनकि उठल आ मुँह-नाकक धूआँसँ सौंसे संसार अन्हार भऽ गेल ।

गाँजा चढ़ौलाक बाद श्यामसिंह ताल ठोकलनि । सौंसे गाममे टाटी-बेनाठी लागि गेल । हरिराम आ चुन्नीराम दुनू भाइ तालक आवाजसँ दोस्त श्यामसिंहक आगमन बूझि अरियाति अनलकनि । मुदा भोजन काल श्यामसिंहकेँ डहराक (दू सालक सुगरक) माँसु परसल गेलनि आ आन कुटुमकेँ पाहुरक (नौ दिनक सुगरक बच्चाक)। श्यामसिंहकेँ अपमानक बोध भेलनि । क्रोधमे आबि श्यामसिंह हरिरामक बहिन मनियाँसँ छीनि दूटा सुगरकेँ दुनू काँखतर दाबि मारि देलथिन आ मनियाँक माथपर धऽ देलथिन ।

जाइत-जाइत श्यामसिंह ब्यौराघाट जूमि गेलाह–

घड़िएक चलल श्यामसिंह, पहरो ने बितलै जूमि गेल ब्यौरा के हे घाट।

ओतऽ ढुनमुन गोआर आ अहीमन तेलीक दूटा भैंसा पहलमानीक खेलौनाक रूपमे रहैत छल । महींस बीचमे पड़ि गेलैक । श्यामसिंह ताल ठोकलनि, मेदिनीमे अहंकाल उठि गेल । दुनू महीसकेँ बेरा-बेरी सिंघ पकड़ि खेलाय मारि देलनि आ नदी पार कऽ महुअरि गाछीमे पचास हाथक छोट-छीन तम्मुख गाड़लनि । सुतला पर पैर बाहरे रहि जाइत छलनि । पैराक ठेहिआयल श्यामसिंह भरि राति आराम कएलनि ।

दोसर दिन महुआ-पाँतरक सात सौ सूगर श्यामसिंहक आहार भऽ गेल। वंशीधरक बहिन रामवती आ श्यामवती सात-सात सौ सूगर खैनिहार एहि पहलमानक जुमबाक खबरि देबाक लेल कनैत-खीजैत देवधा पहुँचलीह । ओतऽ वंशीधर कोबर घरमे सूतल छलाह–

नवे दिन गौनाके वंशीके भेलैए ।
डाँड़के धोती की मलीनो ने भेलैए ।
माँगक की चन्नन सेहो मलीनो ने भेलैए।
डाँड़के हरहारा की डाँड़ै के शोभैए ।
हाथ के कङन की हाथे के शोभैए ॥

समाद पाबि वंशीधर अखाड़ाक हेतु तैयार होमऽ लगलाह । ताबत हुनक तिरिया लवकी दुलहिनिया पोखरिक घाटसँ भिजले वस्त्र पहिरने घुरलीह । श्यामसिंह हुनक चारि आङुर आँचर काटि अपमान कएने छलथिन । श्यामसिंह वंशीधरक माटिक उतारा सेहो पठा देने छलाह । तिरिया लटारम्हमे बिनु पड़ने वंशीधर खरुआक लङौटा पहिरि माता अन्हरीसँ आशीष लेबऽ गेलाह । माताक आँखिसँ दहो-बहो नोर बहऽ लगलनि । असमय कागा कुचरऽ लागल । सुरुज मलीन भऽ गेल । अनेक असगुन देखि सभ मना करिते रहल मुदा वंशीधर चलि पड़लाह ।

सात कोसक अखाड़ा । पाथरक फरस । पत्थल अखराहा नाम । वंशीधर ओ श्यामसिंह दुनू गोटे जूमि गेलाह । दुनूक तालसँ मेदिनी डगमगाए लागल। गाछ'सभक पात झहरि-झहरि कऽ खसऽ लागल । झुरमुट पड़ि गेल। सात दिन सात राति बिनु दाना-पानीक दुनू लड़ैत रहलाह । पत्थल अखराहा गर्दा-गर्दा भऽ गेल । दुर्गाक सहाय भेला पर वंशीधर श्यामसिंहकेँ बारह हाथ ऊपर उठा लेलनि आ पटकि देलनि । मुदा श्यामसिंह गहिलक स्मरण

कयलनि। फेर उठि गेलाह । अँगुरीमे-अँगुरी बेओरा लागि गेल । चङुले-चङुले फलका उड़ि गेल । फेर श्यामसिंहकेँ वंशीधर बारह हाथ ऊपर उठा कऽ पटकि देलकनि । श्यामसिंह मरलाह नहि मुदा दू बेर पराजित भऽ चुकल छलाह । वंशीधर आब हुनकासँ युद्ध नहि करऽ चाहलकनि । हारलकेँ हरेने की ? मरलकेँ मारने की ?

बापक हारि श्यामसिंहक बेटा बालाजीकेँ पता लागि गेलैक । बापकेँ जीति कऽ वंशीधर कबुलाक अनुसार गहिलक बलिक हेतु बालाकेँ टक्कर मारैकेँ चन्दनक खुट्टामे ढाका मारैकेँ लोहाक कड़ीसँ बान्हि अस्सी मोनक पाथर तर जाँति कऽ रखने छल । मुदा ओकर एकेटा अङैठी मोड़सँ सभटा बन्हन भरभरा उठलैक । बालाजी देवधाक हेतु यात्रा टेकि देलक । रस्तामे ढुनमुन गोआर ओ अहीमन तेली अपन भैंसाक मृत्युक बदला लेबऽ चाहलक मुदा दुनू बालाजीक हाथें मारल गेल ।

देवधा अखाड़ापर वंशीधर आ बालाजीक भिड़न्त भेलनि । सात दिन सात राति धरि युद्ध चलैत रहल । दुनू अपन-अपन दाओ-पेंच देखबैत रहलाह। अन्तिम दिन बालाजी दुर्गाक सुमिरन कयलनि । चितरसन दाओ लगा वंशीधरकेँ चौदह हाथ ऊपर उठा लेलकनि । जखन वंशीधर आकाशसँ खसऽ लगलाह तँ हाथे पर लोकि जाँघमे साटि बालाजी हुनका दुर्गाक बलि दऽ देलकनि ।

मुदा वंशीधरक मृत्युक बादो ओ झगड़ा खतम नहि भेल । वंशीधरक गर्भवती पत्नी बालाजीकेँ समाद पठौलक जे ओ तँ राँड़ भइये गेलि मुदा एक दिन ओकरो तिरियाकेँ वंशीधरक बेटा राँड़ कइये कऽ रहतैक ।

बालाजी आ श्यामसिंह दुनू बापुत घर घुरि अयलाह । ढुनमुन गोआर आ अहीमन तेलीक बेटा जखन जवान भेल तँ बापक मृत्युक बदला लेबऽ चाहलक । बालाजीसँ युद्धमे दुनू हारि गेल । बालाजी दुनूक जान बकसि ओकरा दुनूसँ दोस्ती कऽ लेलनि मुदा वंशीधरक बेटा जखन जवान भेल तँ बापोसँ बेसी कबजगर भेल आ बाला आ श्यामसिंह दुनूकेँ मारि बप्पाबैरिकेँ सधौलक ।

एही डोम खलीफाक स्मृतिक रूपमे आइयो सिंघिया थानाक देवधा गाममे श्यामसिंहक प्रसिद्ध गंहवर अछि जतऽ साले-साल परोपट्टाक डोम सभ जाय पूजा करैत, चढ़ौना-चढ़बैत छथि, मनता पुरैत छथि । देवधा डोम जातिक तीर्थस्थल बनल श्यामसिंहक सिंह उपनाम आ अपूर्व पराक्रमक कथा कहैत अछि ।

◆

लालवंन बाबा

लालाजी चमार आ मनसाराम ब्राह्मण दुनू पकिया दोस्त रहथि । दुनू गोटे महींसक चरबाहीक क्रममे इयारी जोड़ने छलाह । अहलभोरे दुनू गोटे अपन पौसर खोलथि आ भरि दिन केदूवनमे महींस चरबैत रहथि, गाँजा पीबैत रहथि आ मस्त बनल रहथि । केदूवनमे बाघ-बघिनित्रा रहैत छल । एक दिन लुल्ही बघिनित्रा लालाजीकेँ घेरि लेलक । यद्यपि लालाजी जोरावर छलाह आ बघिनित्राकेँ मारि सकैत छलाह मुदा तिरियाक वधक पापक डरसँ से करब ग्राह्य नहि भेलनि । मुदा मुइलाक बाद हुनका संस्कार कोना होयत, ताहि छगुन्तामे पड़ि मनसारामकेँ अपन घरपर समाद देबऽ कहलथिन । बघिनित्राक डरें मनसारामकेँ जऽड़ धऽ लेलकनि । ओ हहायल-फुफआयल गाम दिस पड़यलाह । लालाजीक मायकेँ जखन संस्कारक सरञ्जाम करऽ कहलथिन तँ सौंसे घर हतोशयन भऽ गेल ।

लुल्ही बघिनित्रा लालाजीक सौंसे शरीर खा गेल, एक ठोप खून धरि जमीन पर नहि खसऽ देलक । जखन खाइत-खाइत पहुँचा लग पहुँचल तँ लालाजीक मुरका (मुद्रिका) जमीनपर खसि पड़लैक । मुरका उड़ि कऽ लालाजीक गोसाँइ घरमे चलि गेलैक । ओहि ठाम लालाजीक तिरिया अपन पतिक वियोगमे कनैत रहथि । मुरकासँ लालाजीक अंश आवाज देलकै-हे तिरिया ! कानू खीजू नहि । अहाँ बारह वर्ष धरि अहिबातिये रहब । हम अहाँक सपनेमे आयब, सपनेमे जायब, सपनेमे भेट-मुलाकात होइत रहत ।

बघिनित्रा लालाजीक अस्थिटा छोड़ि चल गेल । हुनक सौंसे देह आमक पल्लोसँ झाँपि देलक जे ओहिपर माछी नहि लगैक । भरि राति लाश पड़ल रहल मुदा मनसाराम संस्कारक व्यवस्था नहि कयलकनि । दोसर दिन जखन मनसाराम महींस खोलि चरबाहीमे गेलाह तँ लालाजी अपन दोस्तक गद्दारीक बदला लेबाक सोचलनि । लालाजी बाघक रूप धऽ मनसारामक छातीपर बैसि हुनका मारि देलथिन।

मनसारामक मृत शरीर जखन गामक लोक बाधमे देखलक तँ क्यो ई नहि बूझि सकल जे हिनका के मारलकनि अछि । गाममे पंचैती बैसल । पंचैतीमे एकटा पंचक देहपर लालाजी खेलऽ लगलाह । दोस्तक गद्दारीक कारणे हुनक लाश एखनो जंगलेमे पड़ल अछि, तकरे बदला ओ लेलनि अछि, से गोहारि भेल। लालाजीक आदेशपर सौंसे समाज दुनू दोस्तक संस्कारक व्यवस्था कएलकनि। ताही दिनसँ लालाजी आ मनसाराम चमारक जातीय देवताक रूपमे पूजल जाइत छथि ।

लालवन बाबा चमार जातिक छथि तेँ ओ पूजामे खस्सी, ताड़ी, गाँजा आदि ग्रहण करैत छथि मुदा मनसाराम गाँजा तँ लैत छथि, ताड़ीक बदला पाने-प्रसादसँ प्रसन्न होइत छथि ।

एहि जातीय देवताक लोकगीत गाबि-गाबि हिनक भक्त समुदायकेँ सहज तृप्ति अनुभव करैत देखल जा सकैत छनि–

किए तोरा आहो लालाजी, मुहमा मलिन भेल
किए मन लागैए उदास ।
पान बिना आगे मैया, मुहमा मलिन भेल ।
गाँजा बिना लागैए उदास ॥
गँजबा चढ़ौलऽ लालाजी पान मुँह धयलऽ
चलि भेलऽ बिजूवन शिकार ।
हरिणो ने मारैए लालाजी तितरो ने मारैए
बिछि-बिछि मारैए मजूर ॥
हकन कानैए लालाजी वन के मजूरनी
वारी वयस हरलऽ सेनूर ॥



गरीबन भुइञा

गरीबन भुइञा धोबिक भट्ठीक ओस्ताद-देवता मानल जाइत छथि । भट्ठीक सम्हार-बिगाड़ हुनके कृपापर अवलम्बित बूझल जाइत अछि । मान्यता अछि जे हजारो टाकाक पोशिन्दाक कपड़ा जकर दायित्व धोबिए पर रहैत छैक, गरीबनेक विश्वास पर भट्ठी पर बोझि देल जाइत छैक आ हुनक कनेको अकृपा भेने भसम भऽ जाइत छैक । तेँ प्रत्येक धोबि अपन एहि ओस्तादक पूजा प्रत्येक साओनमे करितहिं अछि । पूजामे भगतीया जकरा पर गरीबन मनुषदेवाक रूपमे अबैत बूझल जाइत छथि, कूदैत अछि आ मनरिया सभ गीत गबैत अछि–

कानके कनौसी गरीब हो, कहमा हेरौलऽ हो,
कहमा धरौलऽ तीर धनुष हो ।
तीरबा-धनुषबा गरीब हो, काँख जाँति लेलऽ हो ।
चलि भेलऽ विजुवन शिकार हो ।
एक कोस गेलऽ गरीब हो, दोसर कोस गेलऽ हो,
तेसर कोस विजुवन शिकार हो ।
एक वन झोरैए गरीब हो, दोसर वन झोरलऽ हो,
तेसर वन उठलै शिकार हो ।
हरिणो ने मारैछऽ गरीब हो, तितरो ने मारलऽ हो,
बिछि-बिछि मारलऽ मयूर हो ।
किए तोरा खेलकऽ गरीब हो, अङना पथार हो,
किए तोरा केलकऽ अपराध हो ।
कानि-कानि कहै छइ वन के मयूरनी हो,
भोर होइते सबद सुनैब हो ।
जब तोहें आहे गरीब हो, सेनुरा बकसबऽ हो,
भरि राति नचबा देखैब हो ।

एक बेर बोलू हो पञ्चन, श्रीसियाराम हो,
दोसर बेर बाबा बैद्यनाथ हो ।
तेसर बेर बोलू हो पञ्चन, इन्दर कविलास हो,
चारिम बेर गरीब महाराज हो ॥

धोबिक एहि जातीय देवताक प्रसंग ई कथा प्रचलित अछि—

उघरा गाममे घासी गोआर, बरहमठाकुर ब्राह्मण आ गरिबा धोबि तीनू दोसमे एक पान तीन टुकड़ी होइत छलनि । गामक पच्छिम अखाड़ा छलैक जतऽ तीनू दोस दिन-राति खेलाइत छलाह । गामक पूरुब कमला-कोइलाक गहबर छलैक । निशाभाग रातियोमे जखन तीनू दोस खेलाइत-खेलाइत ताल ठोकै छला तँ गाम दलमलित भऽ जाइत छल । कमलाक आसन डोलि जाइत छलनि । कमला जोगिनिञाक नीन छीन भऽ जाइत छलनि । ओ सोचऽ लगली—चारू भुवन हम बुललौं मुदा एहन कोनो मर्द ने देखलौं जकर तालसँ हमर आसन डोलि उठय । आखिर के अछि एहन माइक कोखिक जनमल पूत जे हमर आसन डोला दैए ? जखन कमलाकेँ पता लगलनि जे ओ पूत गरिबा धोबी अछि तँ ओकरा अपन सेवक बनयबाक, अपना रन्थमे काज लेबाक उत्कंठासँ भरि गेलनि कमला ।

गरिबा धोबि छल गहिलीक सेवक । गहिली कमलाक बहिन, बड़ छिपारनी । कमला गहिलीसँ ओहि सेवककेँ मङलथिन मुदा गहिली तैयार नहि भेलथिन । ओ कहलकनि—'नै गे, एहन सेवक हमरा कतहु ने भेटत । बड़ पूजा दैअए गरीबा हमरा ।'

निराश कमला पहुँचलीह इन्दर कविलास । इन्दर बाबा नाच-गानमे मस्त छलाह । ओतै जखन कमला कानै-खीजै लगलीह तँ राग-रंगमे भंग पड़ि गेलनि। इन्दर बाबा खिसिया गेलाह ।

'जो गे जोगिनिञा, तोँ सभटा नाश कऽ देलेँ । कोन तोरा गाढ़ विपती पड़लौ जे इन्दर कविलास जूमि गेलैँ'—इन्दर बाबा बजलाह ।

कमला कनिते बाजलि—'नै हो इन्दर बाबा । यावत् सत्त नहि करबऽ, तावत् हम किछु ने कहबऽ।'

सत्त भेल एक सत्त, दोसर सत्त, तोहर कहल जँ नहि करी, तँ अस्सी

कुण्ड नरकमे पड़ी । कमला बाजलि—'हम गरिबाकेँ अपन सेवक बनबऽ चाहैत छी । इन्दर बाबाकेँ स्वीकार करऽ पड़लनि । तथापि कमला इन्दर बाबाक सभा नहि छोड़लनि । इन्दर बाबा जखन जयबाक हेतु कहलथिन तँ ओ गरीबाक मनुषदेवा बनयबाक, अकालमृत्यु प्राप्त करयबाक उपाय पूछि देलकनि। कनैत इन्दर बाबा कहलथिन—'उघराक पच्छिम डीहसँ बाघ-बघिनिञाक शिकार उठतै । तोहर भाइ कोइला बनतौ बाघ आ गहिल बनतौ बघिनिञा । गामक लोक सभ शिकार करऽ जयतौक मुदा ओ दुनू मारल जयतौक नहि । तखन अओतौक गरीबन शिकार करऽ । बाघ-बघिनिञाकेँ खेहारैत गरीबन जखन पछोर धयने तोहर धारक काते-काते चलतौ तँ तोँ धसना खसाकऽ ओकर बलि लऽ लिहेँ।'

गरीबक गौनाक चारियो दिन नहि भेल छलनि । हुनकर तिरिया छलथिन भिखना सत्ती । ओहि राति निशाभागमे कागा डकि देलकै । भिखनाकेँ आभास भऽ गेलै जे जँ आइ ओकर स्वामी बाहर जयतैक तँ जरूर मारल जयतैक । दिनमे तँ ओ बाहर नहिञे जाय दितैक मुदा रातुक की करय । गरीबनकेँ अनुनय करैत ओ कहय लगलै—आइ कागा कुबोल बोलै हए, से अहाँ कोनो जरुरियो काज अभरला पर बाहर नहि जाइ । गरीबन ओकरा दबारि लेलथिन—'पक्षी हइ, बोलतै नइ । तोरा झुट्ठो बड डर होइहऽ ।' भिखना बुझि गेल जे ओ मानऽवला नहि, तेँ सुतबा काल अपन साड़ीक खूटसँ गरीबनक धोतीक खूटकेँ कसिकऽ बान्हि लेलक जाहिसँ गरीब जे कत्तहु बाहर होथि तँ ओकर निन्न टूटि जाइक आ तखन तँ ओ किन्हु गरीबकेँ बाहर नहिएँ जाय देतैक ।

बादमे पूर्व योजनाक अनुरूप उघरामे बाघ-बघिनिञाक शिकार उठलैक। बारहो वरण ओकरा मारबाक हेतु प्रयत्नशील भेल । मुदा बाघ-बघिनिञा ओकरा सभकेँ खेहारि देलकैक । घासी गोआर आ बरहमठाकुर जुमलाह गरीबनक दूरा पर । —"हौ मीता ! तू कोबर घरमे सूतल छऽ तिरियाकेँ साड़ी धयने आ एम्हर तोरा अछैते शिकार भागल जाइयै ।'

धिरकारक वंचन सूनि गरीबकेँ नहि रहल भेलनि । खूट छोड़ा कंऽ बाहर भेलाह । बाघ-बघिनिञाकेँ खेहारलनि । ओ दुनू भागल जाय आ गरीबन खेहारने जाथि । बाघ-बघिनिञा गरीबकेँ छकयबाक हेतु जाहि टेढ़-मेढ़

रस्ताकेँ पकड़ने रहय, कमला अपन धारकेँ ओम्हरे मोड़ने जाय । योगी पोखरि पर जाकऽ गरीबन कमलाक चाँपमे पड़ि गेलाह । कमला जोगिनिञा धसना खसा गरीबनक बलि लय लेलकनि । गरीबनकेँ मृत्यु-मुखमे जाइत देखि गामक लोक सभ पड़ा गेल । गरीबक लाशोकेँ तकबाक साहस ककरो नहि भेलैक।

कमलाक धारमे पड़ल गरीबनक लाश बहैत-बहैत लरायण-दोहट गाम लग नूआ साफ करैत धोबीक पैरमे ठेकलैक । लाशकेँ ओ धोबि कतबो बहयबाक प्रयास करय मुदा बेर-बेर लाश ओकर पटहा लग आबि जाइक । एहि बीच ओहि धोबीकेँ समाद भेटलैक जे घरपर ओकर भट्ठीमे आगि लागि गेलैक अछि आ सभटा कपड़ा स्वाहा भऽ गेलैक अछि । धोबी अपन घर दिस दौड़ल । रस्तामे ओकरा पता लगलै जे घासी गोआरक देहपर गरीब खेललनि अछि । खेलैत-खेलैत मनुषदेवा गरीबन कहलथिन–'उघरा गाम हमरा धोपचटमे अपटी खेतमे मरबा देलक आ हमर लाशके संस्कारो नहि देलक–तँ ओतऽ कोनो धोबीक भट्ठी नहि सुधरतै । धोबि ओहि गाममे नहि रहि पाओत । हम लरायणपुर-दोहटमे जा कऽ जाति-कुर्माक पैरमे ठेकलहुँ मुदा ओहो हमरा संस्कार की देत, लाठी सँ ठेलि देलक । हमर गति कोना होत ?'

लरायणपुर दोहटक ओ धोबि घासी गोआरक ओहि ठाम आबि फेर भाओ करौलक । गरीबनक खेललापर ओ संस्कार देबाक वचन देलक आ अपन भट्ठी सुधारबाक उपाय सेहो पुछलक । गरीबन जबाब देलथिन जे भट्ठीमे बेठन लगाकऽ पहिने जकाँ आँच देने भट्ठी सुधरि जयतैक । गरीबक संस्कार कऽ देलाक बाद ओहि धोबिक भट्ठी सुधरि गेलैक । तथापि उघरा गामक लोक गरीबनक उत्पातसँ भयभीत रहऽ लागल । फेर भाओमे गोहरौलापर गरीबन कहलथिन जे जँ ओहि गामक लोक गौना कराकऽ अयलाक बाद तिरियाक साड़ी अपना माथसँ सटा लेत तँ दोषमुक्त भऽ जायत आ ओकरा गरीबनक उत्पात नहि सहऽ पड़तैक ।

किवदन्ती अछि जे एखनो उघराक लोक गौनाक बाद अपना स्त्रीक साड़ी माथमे जरूर लगबैत छथि । गरीबनक सरो-स्थल आ कमलाक गहबर कथाक इतिहास-प्रसिद्धिक प्रमाण अछि । उघरामे एखनो धोबि नहि बसैत

छथि । बाघ-बघिनिञा जाहि वक्र बाटेँ गरीब द्वारा खेहारलापर भागल छल, ओहि वक्रताक संग कमला एखनो ओतऽ बहैत देखलि जा सकैत छथि ।

धोबीक ई जातीय देवता गरीबन भुइञा आब धोबीक कार्यक्षेत्रक ओस्ताद मानल जाइत छथि । भट्ठी बिगड़लापर, भट्ठीक आमद बढ़लापर, नव भट्ठी खोललापर, संस्कार विशेषक अवसरपर हिनक पूजा धूमधामक संग होइछ । पूजामे गुड़-खीरक जेनार होइत छैक, दूधक छाँकी पड़ैत छैक, खैनी-पीनी, गांजा, दूध, लाबा चढ़ैत छैक आ कहल जाइछ जे पूजा स्थल पर भरिकऽ राखल हुक्कासँ धुआँ तेना बहराय लगैत छैक जेना क्यो सोंटि रहल होइक ।



मोतीदाइ

मोतीदाइ नामक एकटा स्त्री छलीह । बच्चेसँ ओ नित्य सूति-उठि गंगास्नान करैत छलीह । जखन पैघ भेलीह, बिआह-दान भऽ गेलनि, तैओ अपन नित्य नैमित्तिक काजमे शिथिलता नहि अनलनि। मुदा मोतीदाइकेँ अध वयसाहुओ भऽ गेला उत्तर पुत्रक प्राप्ति नहि भऽ सकलनि । लोक हुनका बझिनिञा कहऽ लगलनि ।

एक दिन मोतीदाइ गोबरछितनी लऽ कऽ गेली बोहा-बथान दिस । चरबाहा सभ जखन हिनका अबैत देखलक तँ अपनामे गप्प करऽ लागल जे 'बाँझिन बथान पर आबि रहल अछि । जँ एकर नजरि गाय-महींस पर पड़त तँ ओहो सभ बाँझ भऽ जायत' । ई विचारि सभ चरबाहा अपन-अपन गाय-महींस दूर हटा लेलक ।

मोतीदाइ जखन चरबाहा सभक ई गप्प सुनलनि तँ हुनका कोखियाक लहरि उठि गेलनि । 'भोरे उठि गंगा नहेने की फल भेल ? तुलसी चौड़ामे जल ढारने बिना कहियो अनजल नहि कयल, से यैह दिन देखै लय ? एते दिन जे गहिलक पीड़ी निपलहुँ से बाँझिए कहबै लय ?' मोतीदाइ छगुनऽ लगलीह । अमर्षमे आबि मोतीदाइ हहायल-फुफुआयल घुरली घर । खुर्पी लेलनि हाथ आ लगली कोड़ऽ गहीलक पीड़ी । इनारमे बिनु भसौने नहि रहती ।

गहिलकेँ प्रकट होमऽ पड़लनि । मुदा ओ विवश छलाह । मोतीदाइक कोखि आबाद नहि भऽ सकैत छलनि । हुनका पूत लिखनहि ने छलथिन विधाता । मोतीदाइ गहिलक दर्शन कऽ लज्जित भेलीह । सब कथा जानि अपन जीवे बेकार बुझना गेलनि । कान्हे लेलनि कुलहड़ि आ चलली बिजूबन। रस्तामे पड़लनि तिलयुगबा नदी । केराक थम्हक नैया बनाकऽ पार उतरलीह। बिजूवनमे चाननक लकड़ी काटि एकट्ठा कयलनि । चित्ता बरोबरि लकड़ी भऽ गेलनि तँ चलि भेली उजैनी गाम। चिता निर्माबऽ लगली । जखन पूत नहिएँ हेतनि तँ जीविए कऽ कोन पोखरि आ इनार खुना सकतीह ?

गहिल असमंजसमे पड़ि गेलाह । जँ मोतीदाइ जरि कऽ मरि जाइत छथि तँ हुनका ब्रह्मफाँस तँ लगबै करतनि, आब के हुनका पूजा करबाक हेतु तैयार होयतनि ? गोहारि लेले पर ने क्यो हुनक नाम लैत छनि, नहि तँ हुनक नामे संसारसँ अलोपित भऽ जयतनि । तत-मतमे पड़ि गहिल चल गेलाह इन्दर कविलास । हुनक नाम दुनियाँ सँ उठि रहल छनि । भगवान कहलथिन-मोतीदाइकेँ पूत होयतनि मुदा छठिहारे दिन मरि जयतनि ।' गहिल दौड़लाह उजैनी गाम । मोतीदाइ उकबत्ती जरा कऽ चितामे लगबऽ चाहैत छलीह। गहिल हाथ पकड़ि लेलथिन, कहलथिन-'जो, पूत हेतौ तोरा मुदा छठिहारेक राति मरि जेतौ ।' मोतीदाइ घुरि ऐली । पूत भेलनि मुदा छठिहार पुजैते काल मरि गेलनि। तथापि बाँझी पद छूटि गेलनि ।

◆

गणिनाथ-गोविन्द

मिथिलाक तेली, सूड़ी, कलबार ओ मुख्यत: हलुआइ जातिक जातीय देवताक रूपमे श्री गणिनाथ-गोविन्दक पूजाक विधान अछि । गणिनाथक स्थान राज पलबैया अछि जे वैशाली जिलाक हाजीपुर अनुमंडलक महनार थानासँ आठ किलोमीटर दूर पूरब ओ थोड़ेक दक्षिण भर गंगाक किनारपर अवस्थित अछि । एतय प्रतिवर्ष भादोक जन्माष्टमीक बादक शनि कऽ बेस पैघ मेला लगैत अछि । यैह दिन गणिनाथक जन्मदिन मानल जाइत छनि । हलुआइ लोकनि कोनो शुभ संस्कार शनिए दिन करैत छथि आ ओहिमे गणिनाथ-गोविन्दक पूजा अवश्ये करैत छथि । एहि लोकदेवताकेँ सभ वस्तु उज्जरे रंगक चढ़ाओल जाइत छनि ।

गोविन्दक स्वरूपक कल्पना बालकृष्णक रूपमे कएल गेलनि अछि जनिक एक हाथमे आगिक खप्पर अछि जे एहि तथ्यक द्योतक थिक जे गोविन्दक पूजक जाति अवश्ये अग्निपूजक रहल होयत । हिनक दोसर हाथमे कृष्णक वेणुक स्थान पर बेंत अछि जाहिसँ ओ सकल समाजक रक्षा करैत छथि ।

गणिनाथ गोविन्दक पिता छलाह । हिनक उत्पत्तिक सम्बन्धमे प्रचलित लोकगाथाक अनुसार एक समय ब्रह्मा, विष्णु ओ महेश परस्पर विचार कएलनि जे घोर कलिकालक आगमन भेने संसारमे अत्याचार-अनाचारक वृद्धि होयत। तेँ एकटा एहन महापुरुषकेँ संसारमे पठायब आवश्यक जे निरन्तर जनताक कल्याणमे लागल रहथि । एहि विचारसँ ओ सभ एकटा यज्ञक आयोजन कएलनि । यज्ञक हेतु सात मन तिल, सात मन जौ, सात मन धूप, सात मन घृत ओ अन्य शाकल जुटाओल गेल । हवन शुरुह भेल । यज्ञाग्निसँ बारह वर्षक एकटा पुरुष उत्पन्न भेलाह । वैह बिना रीज-बीजक अंशी अवतार पुरुष गणिनाथक नामे ख्यात भेलाह । तत्काल तीनू देव ओहि पुरुषकेँ देवलोकक भनसीयाक रूपमे नियुक्त कएलनि ।

देवलोकमे पूर्वहिसँ ब्राह्मण भनसीया नियुक्त छलाह । गणिनाथ द्वारा निर्मित सुस्वादु भोजनसँ समस्त देव प्रसन्न भऽ हुनक प्रशंसा कएल करथि । मुदा ब्राह्मण भनसीयाकेँ गणिनाथक प्रशंसा अनसोहाँत बूझि पड़लनि । ओ गणिनाथकेँ सतयबाक उपाय करऽ लगलाह । भीजल जारनिसँ ओ गणिनाथसँ भानस कराबथि । गणिनाथ अपस्याँत भऽ जाथि । चूल्हि-फूकैत-फूकैत आँखि लाल भऽ जाइन्ह । तंग भऽ गणिनाथ तीनू देवसँ देवलोक छोड़बाक आज्ञा मँगलनि । सभ देव विचारि हुनका मर्त्यभुवन पठा देलथिन ।

मर्त्यभुवनमे गणिनाथ गंगाजीक एकटा गेंड़ (दीअर) पर अवतरित भेलाह । एतऽ एकटा पैघ खरहोड़ि छल । खरहोड़िमे एकटा बूढ़ व्यक्ति खऽढ़ काटि रहल छलाह । गणिनाथ हुनक सहायता करऽ लगलाह । सौंसे खरहोड़िक खऽढ़केँ ओ क्षणे भरिमे खरड़ि देलथिन । बहत्तर हाथक जुन्ना बान्हि सभटा खऽढ़क एकेटा बोझ बना देलथिन आ एकेटा आङुरसँ बोझकेँ उठा कऽ बूढ़ाक माथपर धऽ देलथिन । बूढ़ाकेँ ओहि पैघ बोझक कनेको भार अपना माथपर नहि बुझना गेलनि । बोझ हुनक माथसँ एक बीत उपरे निराधार स्थित रहल । दुनू गोटे बूढ़ाक घर दिस विदा भेलाह ।

ओ बूढ़ व्यक्ति जातिक कानू छलाह । घर पर हुनक स्त्री कंसारमे भूजा भुजैत छलीह । जखन अपन पतिकेँ पैघ बोझ लेने अबैत देखलनि तँ अत्यन्त आश्चर्यित भेलीह । गामक लोक सभ हुनक अद्भुत सामर्थ्य देखि अवाक् रहि गेल। कंसारक निकट बूढ़ा कानू खऽढ़क बोझ पटकि देलनि । जुन्ना टूटि गेलैक। खऽढ़ छिरिया गेलैक आ खऽढ़क बीचसँ एकटा महान सुन्नरि कन्या प्रकट भेलीह । बूढ़ा कानूकेँ एकोटा सन्तान नहि रहनि । दून परानी ओहि कन्याकेँ हँसोथि-पसोथि कऽ उठौलनि आ छातीसँ लगा लेलनि । कन्याक नाम खनेसरी राखल गेलनि ।

गणिनाथकेँ भूख लागल रहनि आ कानूक घरमे अन्नक एकोटा दाना नहि रहनि । ओहि दिन गाम-घरसँ क्यो किछु भुजैबाक हेतु सेहो नहि आयल छल जे किछु भाड़ो-ताड़ भेल·रहितनि । अभ्यागतक परिचर्या कोना कएल जाय ताहि चिन्तामे बूढ़ा कानू खिन्न छलाह । गणिनाथ बूढ़ाक मनोभावकेँ ताड़ि गेलनि आ हुनक घरक सीकपर राखल मटकूरीमे लागल चारि गोट चाउरक दाना अनबाक हेतु कहलथिन । ठाँओ करबा कऽ ओहिपर बूढ़ाक

बाछीकेँ ठाढ़ करबा कऽ ओकरा दूहब शुरुह कयलनि । गणिनाथक कृपासँ बाछीक स्तनसँ दूधक धार बहऽ लगलैक। ओहि दूध आ चाउरसँ गणिनाथ कानूनिकेँ खीर बनैबाक आग्रह कयलथिन । मुदा एहि हेतु नव हाँड़ीक आवश्यकता छलैक । कानूनि गेलीह कुम्हैनि ओतऽ । ओकरासँ एकटा नव हाँड़ी मंगलथिन मुदा कुम्हैनि ओहि गरीबिनकेँ उधारे बासन देबासँ इन्कार कयलक। कुम्हैनिक एहि कृत्यपर गणिनाथ खिसिया गेलाह । कुम्हारक आबा धँसि गेलैक । बासन सभ फूटि-फाटि गेलैक । एहिपर ओकर कान ठाढ़ भेलैक । कुम्हैनिसँ जखन ओकरा पता लगलैक जे बूढ़ि कानूनिकेँ उधारी बासन नहि देल गेलैक अछि, तखनेसँ उपद्रव भऽ रहल अछि तँ ओ कानूक घर जाय गोविन्दक पैरपर खसल आ नव हाँड़ी हुनका समर्पित कय देलक । गणिनाथ कुम्हारकेँ माफ कऽ देलथिन । यावत ओ घर घुरल, ओकर बाबा पाकि कऽ तैयार भऽ गेल छलैक आ सभटा बासन यथावत् सैंता गेल छलैक।

गणिनाथ कुम्हारक देल हाँड़ीमे तसमइ तैयार करौलनि आ तीनू गोटे भरि पेट भोजन कएलनि । तथापि हाँड़ी भरले रहल । तखन गणिनाथक कहलापर सौंसे सभाकेँ नोंतल गेल आ ओहि एके हाँड़ी खीरसँ परसि-परसि सबकेँ तृप्त कऽ देल गेल । कानू बाबाक जय-जयकार होमऽ लागल ।

कहल जाइछ जे एही भोजक अवसरपर गणिनाथ हलुआइ लोकनिक बीच मूलक बँटवारा कयने छलाह । मूलक अवधारणा एखनहुँ हलुआइ जाति मध्य बचल अछि आ विवाहक वैधता सिद्ध करबाक हेतु मूलमिलौअल एकटा प्रधान कर्म बुझल जाइछ ।

क्रमहि गणिनाथक अलौकिक शक्तिक कथा पसरऽ लगलनि । गणिनाथ आब गंगाक किनारपर कुटी निरमा कऽ तपस्या करऽ लगलाह आ तपसी बाबाक नामे ख्याति पओलनि ।

एक समय राज पलवैयाक टुनकी साहुक बेटा मरि गेलैक । ओकरा जरयबाक हेतु सभ श्मशान पहुँचल । साहूकारक एकमात्र सन्तानक असामयिक मृत्युक कारणे सभ क्यो हकरोस कऽ रहल छल । जखन टुनकी साहुकेँ पता लगलैक जे गंगाक किनारपर एकटा तपसी बाबा रहैत छथि आ ओ अनेक बाँझीकेँ पूत, निरधनकेँ माया, कोढ़ीकेँ कंचन काया, अंधाकेँ आँखि दऽ चुकल छथिन तँ ओ सीधे हुनक पैरपर जा कऽ पुत्रक लाश राखि देलक आ

लागल दुनू प्राणी हुनका गोहराबऽ । गणिनाथ साहुजीक पुत्रकेँ जिआ देलथिन। प्रसन्न साहुजी राज पलवैयामे गणिनाथक कुटी लग खूब पैघ मन्दिर बनबा देलक आ मन्दिरक हेतु पर्याप्त जमीन सेहो दऽ देलक । यद्यपि ओ मन्दिर आब गंगाक गर्भमे विलीन भऽ गेल अछि मुदा ओकरे एक कात आधुनिक नवका मन्दिर ठाढ़ अछि ।

एम्हर बूढ़ाक पुत्री खनेसरी जखन युवती भेलीह तँ कानू बाबाकेँ हुनक विआहक चिन्ता सतबऽ लगलनि । ओ गणिनाथकेँ खनेसरीक पाणिग्रहणक हेतु आग्रह कयलथिन । गणिनाथ तैयार भऽ गेलाह । गणिनाथसँ विआहक बाद खनेसरी खेमा सतीक नामे ख्यात भेलीह आ दुनू प्राणी राज पलवैयामे रहऽ लगलीह ।

कहल जाइछ जे बिआहक हेतु गणिनाथ सब बरियातीक संग पयरे गंगा पार कयने छलाह । विआहमे बरिआतीक हेतु चिक्कसक रूपमे गंगाक बालु आ घृतक रूपमेँ गंगाक जलक उपयोग कऽ पूरी छानल गेल छल । बरिआती लोकनि अन्नपूर्णाक भंडार जकाँ तृप्ति पओने छलाह ।

गणिनाथकेँ खेमासत्तीसँ दू पुत्र आ दू पुत्री भेलथिन्ह । मुदा कोनो सन्तति एहन नहि भेलथिन्ह जाहिसँ हिनका लोकनिक नाम संसारमे चलि सकनि । खेमासत्ती सदिखन एहि चिन्तामे रहऽ लगलीह । गणिनाथ साधनामे लीन रहैत छलाह । साधनाक कारणे गणिनाथ खेमासत्तीकेँ सेहो बिसरि गेलाह। वयसक चारिम भाग भऽ जयबाक कारणे आब खेमाकेँ कोनो महिमावान पुत्रक आशो नहि रहि गेलनि।

खेमा माइक किछु वर्ष एही चिन्तामे झाम होइत बीतल । वृद्धावस्था आबि तुलायल तँ खेमामाइ दिन-राति छगुनऽ लगलीह जे हुनका लोकनिक नाम चलौनिहार क्यो नहि भेल ?

एक समय कार्तिक मासमे मघधोधर लागल छलैक । एहि समय सूर्यग्रहण लगलैक । सभ गंगास्नानक हेतु विदा भेल । दीनानाथ खेमासत्तीकेँ सप्पनमे कहलथिन्ह–'एना झाम होइत रहने किछु ने होयतह । तोहूँ गंगास्नान जाह । तोहर टेक गंगामाइ रखथुन । तोरा कोखिसँ अंशी अवतार होयतहु जे तोहर नाम चला सकतहु ।'

खेमामाइ सप्पनक वृत्तान्त जानि दोसर दिन भोरे हाथमे दतमनि, काँखतर नूआ लऽ कऽ गंगास्नानक हेतु विदा भेलीह । जखन गंगाकिनार पहुँचैत छथि तँ देखैत छथि जे गंगामे जुआरि आयल छैक, सौ-सौ मनके धसना धसि रहल छैक । ओहो ओही धसना तर पिचा कऽ मरि जायब नीक बुझलनि । औघट-घाटक रस्ता पकड़ि लेलनि आ लगली हबोढकार भऽ कानय । तावत् हुनक मनसा जानि बूढ़ी माइक वेष धऽ गंगामाइ लाठी टेकैत पहुँचैत छथि । सब गप्प बूझि कहैत छथिन जे अहाँ दीनानाथकेँ साक्षी राखि गंगामे डूब दऽ अपना आँचरमे जे बालु-पानि आबय से लेने घर चल जाउ । ओहीसँ अहाँकेँ अंशी पूत अवतार लेत आ अहाँक नाम दुनिआमे चलाओत । खेमामाइक सएह कएलनि । एना कएने खेमामाइकेँ बुढ़ारीमे गरभ रहलनि जे गोविन्दक अवतारक कारण भेल ।

गरभबत्ती खेमामाइकेँ जखन नौ मास पूरि गेलनि तँ परसौतीक दरद उठलनि। सलखी नौड़िन गेली चम्पापुर नगरसँ चम्पा डगरिनकेँ बजबऽ मुदा चम्पा तावत् राज पलवैया जायब नहि गछलक यावत् ओकरा हेतु 'लाले रंग महफा सबुज रंग ओहरिया, टाङे खातिर बत्तिसो कहार'क व्यवस्था नहि होइतैक ।' यावत् चम्पा चीर-चोली पहिरि, सोलहो सिंगार, बत्तीसो अभरन कऽ तैयार भेलीह, तावत डोली-कहार आबि गेल । चम्पा विदा भेलीह राज पलवैया ।

ओम्हर गर्भमे गोविन्दजी सोचलनि जे एना जँ डगरिन सभ डोला-कहारपर आबऽ लागत तँ गरीब-गुरबाकेँ नेनाक प्रसवमे बड़ बाधा होयतैक । ओ अपन महिमा डोला देलथिन । चम्पाक डोला आधे रस्तामे छहोछित्त भऽ कऽ टूटि गेलैक । चम्पाक पैर सेहो टूटि गेलैक । तथापि चम्पा नेङराइत-नेङराइत जुमल पलवैया राज, मुदा तावत् गोविन्दजीक जन्म भऽ गेल छलनि । जनमैत देरी गोविन्दजी माए खेमासत्तीसँ सवाल-जवाब साजऽ लगलाह-'माय, माय, हमरा चमैनिसँ नहि छुआउ ने तँ अहाँक दूधो हम अधार नहि करब ।' सोइरी घरक देहरिपर ठाढ़ि चम्पा डगरिनकेँ ई अत्यन्त अद्‌भुत बुझना गेलैक । बाजलि-

'बेटिया से बुढ़िया भेलौं-

टूटल बत्तीसो दाँत-

तिलकल नामी-नामी केस-

एहन अजगुत हम कतहु ने देखलौं'-

बड़बड़ाइत चम्पा विदा भऽ गेल चम्पापुर नगर कऽ । गोविन्दक प्रति अन्यथा भावक कारणे रस्तेमे आन्हरि भऽ गेलि । घुरि कऽ गोविन्दसँ क्षमा मङलक । गोविन्द ओकरा गिद्धक आँखि दऽ देलथिन । बत्तीसो योजन सूझऽ लगलैक ।

परम्परानुसार गोविन्दक लगन उचारबाक हेतु पण्डित बजाओल गेलाह । जखन पण्डितकेँ ज्ञात भेलनि जे गोविन्दजी सोइरी घरमे माएसँ गप्प-सप्प करऽ लगलाह अछि तँ जन्मक नक्षत्र देखि ओ गुनलनि जे ई तँ साक्षात् भगवानेक अवतार छथि । मुदा गणिनाथकेँ कहलथिन जे ई तँ राक्षस थिक, तँ एकरा जिविते गाड़ि देल जाय । गणिनाथ गोविन्दकेँ गड़तियामे गाड़बाक हेतु उपक्रम कयलनि मुदा खाधि खुनैत काल केहनो कोदारि टुकड़ी-टुकड़ी भऽ जाइक । हारि कऽ गाड़बाक विचार छोड़ि देल गेल । विचार भेल जे गोविन्दकेँ काठक बक्सामे बन्द कऽ गंगामे फेकि देल जाइनि।

गणिनाथक दूरापर चननक बिरिछ रहनि । जखन बरही-लोहार ओहि गाछकेँ कटबाक कोशिश कयलक तँ ओकरा सभक कुलहड़ि टूटि जाइक मुदा गाछ कटबे ने करैक । अन्तमे जखन गणिनाथ स्वयं हाथमे कुलहड़ि लेलनि आ गाछ कटबामे हाथ लगौलनि तँ गाछ कटा गेल । ओहि लकड़ीसँ एकटा सन्नुक तैयार करा गोविन्दकेँ ओहिमे बन्द कऽ गंगाजीमे दहा देल गेलनि ।

मुदा महिमामय गोविन्दक रक्षामे स्वयं गंगामाइ लागि गेलीह । किछु दिन धरि गोविन्द गंगाक पेटमे रहलाह । पछाति हुनका मोन पड़लनि यार कारिख । कारिखसँ गोविन्दजी गरभेमे इयारी जोड़ने रहथि । कारिख कामरू-कामाख्याक नयना-मयना जोगिनक मायामे पड़ि ओकरा सभक बनिसारमे पड़ि गेल छलाह ।

नयना-मयना ओ हिरिया-जिरिया जोगिन छलीह । ई सभ जादूगरनी अपन जादूक बलसँ छप्पन कोटि देवताकेँ बनिसार दऽ देने छलीह । चौंसठ कोस कामरूपमे एकेटा दरबज्जा छलैक । अजगरक कोड़ो, गेहुमन-करैतक बत्ती, साँखड़क बन्हन आ बिढ़नी-पचहियाक छान छलैक देल कामरु-गढ़मे। सोखा शंभूनाथ ओलतीपर ठाढ़, राजा सलहेस फुलवारीमे बैसल आ धौला चौकीदार फाटकपर पहरा करैत छला। नयना-मयनाक अत्याचारसँ सौंसे दुनिया

दलमलित छल । 'कारिख सन बरिया जगत्रो ने भेलै सेहो पड़ल बनिसार' नयना-मयनाक । कारिखक गोहनिञा बनि कऽ गोविन्द कामरु राजक यात्रा करऽ चाहलनि ।

मुदा यात्रासँ पूर्व माय खेमा सत्तीसँ आशीष लेब आवश्यक छलनि । गोविन्द जूमि गेला पलवैया राज । माय खेमासत्ती जखन हुनक जतराक उद्देश्य जनलनि तँ आँखिसँ दहो-बहो नोर जाय लगलनि । गोविन्दकेँ नयना-मयना लग जयबासँ मना कएलथिन, मुदा जखन गोविन्द नहिञे मानलथिन तँ आशीष देलथिन–

'मारने ने मरबह–
जारने ने जरबह–
काटने ने कटबह–
बज्जर होतउ तोहर गात,–'

आशीष पाबि गोविन्द माएकेँ आश्वस्त करैत कहलथिन–

'सबकेँ लेखे मैया अनेक जादू टोनमा
हमरा लय श्री भगवान ।'

माए खेमासत्ती रहिमल बछेड़ाकेँ चुमा देलथिन । गोविन्द ओहि बछेड़ापर चढ़ि कामरुक यात्रा टेकि देलनि–

तर छोड़य धरती ऊपर आसमान ।
बीचे-बीचे घोड़ा करैए पयाम ।
घड़िएक चलल गोविन्दजी, पहरो ने बितलै
जूमि गेल मोरङ्ग राज ।

मोरङ्गमे गोविन्दजी कुसुमा मालिनक आतिथ्य ग्रहण करऽ चाहलनि । कुसुमा टेढ़ी बतियौलक । स्थान देबामे नाकर-नुकर कयलक । गोविन्दक अवहेलनासँ तत्काले सासु आन्हर भऽ गेलैक, ननदी राँड़ भऽ गेलैक, सभटा अन-धन लछमी अलोपित भऽ गेलैक । लगली कुसुमा कलपय–

हम नहि जानलौं तोरा
बालक हो गोविन्दजी
हमरो गलती दिऔ ने भुलाय ।

मुदा गोविन्द ओकर गोहारि नहि सुनलथिन । ओ यात्रा टेकि देलनि ।

उसरी डीह पहुँचलाह । ओतऽ एकटा डोमिनक ओहि ठाम ठहरलनि । डोमिन टुटली चटइयाक आसन आ बुचकट कटियामे पानि देलकनि । साठी कूटि कऽ भात बनौलक, मुङिया उला कऽ दालि बनौलक आ पूताक माँसुक फरमाइशी तरकारी सेहो तैयार कएलक । गोविन्दजी डोमिनक सत्कारसँ अत्यन्त प्रसन्न भेलाह । आशीष देलथिन–'तोरासँ बिनु बासन लेने कोनो पावनि-तिहार शुद्ध नहि होयतैक ।' तहियेसँ डोमिनक बासन अधिकांश पावनि-तिहारमे सकल समाजक उपयोगमे अबैत अछि । घुरती काल गोविन्दक प्रतापसँ डोमिनक बेटा सेहो जीवित भऽ गेलैक । अगिला दिन गोविन्द कामरु राज जुमि गेलाह ।

गोविन्दक कामरुमे प्रवेश करैत देरी नयना-मयनाकेँ पता लागि गेलैक। ओ तीन सय जोगिनकेँ गोविन्दकेँ नष्ट करबाक हेतु पठौलक । मुदा जोगिन सभ गोविन्दक रूपपर मोहित भऽ गेलीह । गोविन्दकेँ सोनरा सोनसँ गढ़ने छल, की बरही छोलने छल, की कुम्हरा चाकपर रोलने छल से विचारैत जोगिन सभ आवेशमे पड़ि गेलीह । तावत नयना-मयनाक आदेश मोन पड़ि गेलनि । गोविन्दसँ एकटा जोगिन पूछि बैसलथिन–

कहमा रसैछऽ बाबू कहमा बसैछऽ
कोन ठाम कयलऽ पयाम ।
के तोहर पिता हे बाबू के तोहर माता
कथी खातिर कयलऽ पयाम ।
की तोरा घटलऽ बाबू अन-धन-लछमी
की घटलऽ पाकल बीड़ा पान ।
जे तोरा भेजलक बाबू कामरु ऐसन रजबा
तिनकर हिरदय केहन कठोर ।

एहिपर गोविन्दजी जबाब देलथिन–

राज पलबैया हमर आसन बासन
कामरू कैली पयाम ।
बाबू गणिनाथजीकेँ हमहूँ दुलरुआ
मैयाजीके खेमासत्ती नाम ।
नहि मोरा घटल गे जोगिन अन-धन-लछमी
नहि घटल पाकल बीड़ा पान ।

गरभ इयार हमर कारिख दुलरुआ
सेहो पड़ल नयनाके बनिसार ।
कारिख गोहनित्रा हम ऐली गे जोगिनित्रा
देखबैमे नयना-मयना सारि ।
सबके लेखे कामरु जादूकेँ भंडरबा
हमरा लेखे ससुरारि ।

जोगिन सभ गोविन्दजीक ई गारि सुनि खिसिया गेलीह । तथापि हुनक अद्‌भुत रूपपर दया भऽ गेलनि । सब बुझबऽ लगलथिन जे ओ घुरि जाथि आ नयना-मयनाक जालमे नहि पड़थि–

कथी लए तू अयलऽ बबुआ कारिखके गोहनित्रा
कामरु हेतऽ जीवके जंजाल ।
की तोरा खयतऽ बबुआ बासि-बेरहटिया
की हेबऽ जोगिनक कलेउ ।

मुदा गोविन्द अड़ले रहलाह । कहलथिन–

सबके लेखे जोगिन जादूक नगरिया
हमरा लेखे ससुरारि

गोविन्दक एहन वचन सूनि जोगिन सभ गोविन्दजीकेँ घेरि लेलक । कहऽ लागल जे जखन कामरु तोहर ससुरारि छऽ तँ सारि-सरहोजिक हाथक पान खा लएह । मुदा गोविन्द ने तँ जोगिन सभक रूपेपर मोहित भेलाह आ ने ओकरा सभक देल पाने खयलनि । कहलथिन–

बाप तपसिया, हम भेलौं जोगिआ,
पानक की जानए गेलियै हाल ।

पश्चात् जोगिन सभ आँचर-कोंचासँ गुन निकालि-निकालि गोविन्दपर चलबऽ लगलीह । अगिनबान छोड़ैत देरी सौ-सौ मनक आगिक चेप बरसऽ लागल मुदा गोविन्दक हेतु ओ शीतल बसाते बनल रहल । नागक बाण मारलापर गोविन्द गरुड़वाण मारलनि । साप सभकेँ गरुड़ सभ आबि कऽ खा गेल । एहिना दुनू दिससँ गुन-वाणक मार-काट भेल । जोगिन सभ पराजित भेलीह ।

ई सभ कथा जखन नयना-मयनाकेँ पता लगलैक तँ ओ जादूक एकटा नगरी बसौलक । ओहि नगरीमे अनेक दोकान खोलल गेल । सब दोकानपर जोगिन सभ सोलहो श्रृंगार बत्तीसो अभरन कऽ कऽ बैसलीह । मुदा गोविन्द ओकरा सभक रूपपर आकर्षित नहि भेलाह । पश्चात् नयना-मयनाक जादूक गढ़ तोड़ल गेल । नयन्ना-मयना पकड़ल गेलीह । गोविन्दक पजियार फेकूराम सेहो हुनक सहायताक हेतु सोने सटकुन हाथमे लेने झुनकी खड़ाम पहीरि सैला बाघ लऽ कऽ जुमि गेल छलाह । नयना-मयनासँ कारिखक पता पूछल गेल मुदा ओ सभ किछु बतयबासँ इन्कार कयलक । फेकूराम दुनूकेँ उनटा बान्ह बान्हि देलथिन आ पीड़ा देबाक उद्योग करऽ लगलाह । तावत् जादूक बलसँ दुनू जोगिन पड़बा बनि गेलीह आ पड़यलीह । गोविन्द ओकरा दुनूक ई चलाकी देखि बाझ बनि खेहारलनि । बाझकेँ अबैत देखि दुनू जोगिन माछ बनि जमुनामे खसि पड़लीह । गोविन्द बगुला बनि ओकर पछोर धएलनि । जोगिन जोंक बनलि तँ गोविन्द बोआर, जोगिन चील्ह तँ गोविन्द बाझ आ एहि तरहेँ दुनू गोटेक विभिन्न रूपमे बदलि-बदलि लड़ाइ चलैत रहल । अन्तमे गोविन्दक झपट्टामे जोगिन आबि गेलीह आ हुनक जादूक तीक्ष्णता देखि साँसतमे पड़ि जोगिन सभ हारि मानि लेलनि । कारिखक पता सेहो कहि देलथिन । अस्सी कोसक तरहरातर कारिख अस्सी मनक सिक्कड़सँ जकड़ल, आँखिमे खोलसा, कानमे शीशा देल, बीसो आङुरमे बलेसरी काँटी ठोकल आ छातीपर देल अस्सी मनक चक्कर तर पड़ल छलाह । तरहराक ऊपर हरौती बीट बाँस रोपल छल आ ओहिसँ लागल हिडोलापर नयना-मयना झूलैत छलीह। तरहरा खूनल गेल । कारिख मुक्त भेलाह । छप्पनो कोटि देवताकेँ सेहो जोगिनक जंजालसँ छोड़ाओल गेल । सभ अपन-अपन स्थान कऽ गेलाह ।

यार कारिखक संग गोविन्दजी घर दिस जतरा टेकि देलनि । संगमे फेकूराम दुनू जोगिनकेँ उनटा बान्ह बान्हि कऽ चललाह । पहिने सब गोटे कारिखक गामपर गेलाह । कारिखक माय अपुरा सत्ती अपन बेटाक आगमनपर अत्यन्त प्रसन्न भेलीह। बारह.बरिसपर अपुराक हेरायल सोन भेटल छलनि । अपुरा माय संगमे दुनू जोगिनकेँ देखि आश्चर्यित भेलीह मुदा जखन ओकरा सभक कुकृत्यक पता लगलनि तँ अत्यन्त क्षुब्ध भेलीह । गोविन्दजी ओकर दुनूक बलि देबऽ चाहैत छलाह मुदा तिरिया वधक पापक डरसँ अपुरा मायक

कथा मानि ओकरा दुनूक सभटा गुन झीकि अढ़ाइ अक्षर छोड़ि देलथिन जाहिपर एखनो संसारक सभ डाइन-जोगिनक जादू-टोना चलि रहल छैक ।

एहि तरहेँ गोविन्दजी अपना समयक अत्याचारिन नयना-मयनाक मायासँ जगतकेँ मुक्त कयने छलाह । पश्चात् पलवैया राजक शासन करैत जनकल्याणमे लागल रहलाह आ स्वेच्छासँ समाधि लेलनि । अपन अद्भुत पराक्रम ओ यशोगाथाक कारणे एखनो संसारसँ पूजा लैत छथि ।

गणिनाथ-गोविन्दक एहि लोकगाथामे अनेकानेक क्षेपक सभ जोड़ल जाइत रहल अछि । कहल जाइछ जे गोविन्दजी कृष्णे भगवान जकाँ रासलीला रचौने छलाह, बाबा गोरखनाथकेँ अपन शिष्य बनौने छलाह, इत्यादि ।

इहो श्रुति प्रचलित अछि जे राज पलवैयाक मन्दिरपर औरंगजेबक समयमे लालखाँ नामक सेनानायक मन्दिरकेँ ध्वस्त करबाक हेतु पठाओल गेल। मन्दिरक रक्षामे लागल हलुआइ लोकनि खूब युद्ध कयलनि । जे हलुवाइ गढ़क भीतर रहि युद्धरत भेलाह से गढ़भितरा कहौलनि, जे गढ़ छोड़ि भागि पड़यलाह से गढ़बहरा कहौलनि । हलुआइ लोकनिमे एखनो घरभितरा आ घरबहरा मूल वर्त्तमान अछि जे एहि ऐतिहासिक श्रुतिक प्रमाण अछि । लालखाँ किछु दिन धरि युद्धरत रहलाक बाद अन्तमे मन्दिरमे होइत चमत्कारक सोझाँ हारि मानि लेलक आ गोविन्दजीक भक्त बनि ओतहि रहऽ लागल । एखनो मन्दिरक पार्श्वमे निर्मित लालखाँक मजार पर हलुआइ लोकनि अपन श्रद्धा-पुष्प ओतबे गरिमाक संग चढ़बैत छथि, जतेक गरिमाक संग गोविन्दक मन्दिर पर।

एहि तरहेँ गणिनाथ-गोविन्दक गाथामे इतिहास-पुराण ओ लोकश्रुतिक अद्भुत सम्मिश्रण देखल जाइछ ।

◆

फेकूराम

कानू-हलुआइ कुलमे फेकूरामक जन्म भेल छलनि । दयाराम ओ मनसाराम हिनक दोस्त छलथिन । तीनू दोस्तक स्थान छलनि उजैना नगरी । फेकूरामक जखन गौना भेलनि तँ ओ कोबर घरमे निश्चिन्त सूतल छलाह । जखन दू दिन फेकूराम कोबरसँ बहारे नहि भेलाह तँ हुनक माय लक्ष्मीनकेँ नहि रहि भेलनि । ओ खौंझाइत कहलथिन–

सबके खैरा हो चरैये बोरियावन बथानमे
हमरो खैरा खुट्टा तर झमाय ।

माय लक्ष्मी फेकूरामक स्त्री सती सोनमन्तीकेँ फेकूरामक आलस्यक सद्यः कारण जानि हुनके गारि-सराप देबऽ लगलथिन । गारि-सराप सुनि सत्ती सोनमन्ती लगली कानऽ । कोबरमे जखन फेकूरामक पैर जाँतैत रहथि तँ हुनका आँखिक नोर चूबि कऽ फेकूरामक पैर पर पड़ल । फेकू जागि गेलाह । सत्ती सोनमन्तीसँ सब कथा जानि सोने सटकुन हाथमे लऽ झुनकी खराम पहीरि लेलनि आ खैराक मुन्ही छिटकाय कोशिका धार दिस चललाह ओकरा सभकेँ चराबय ।

सती सोनमन्ती बारह वर्ष आगाँ आ बारह वर्ष पाछाँक हाल जनैत रहथि। ओ बूझि गेलीह जे आब हुनक स्वामी घर घुरि कऽ नहि औथिन तँ अपना हाथेँ हुनका किछु जर-जलखइ करबऽ चाहलथिन । मुदा माइक दुत्कारसँ खौंझायल फेकू भुखले चल गेलाह । जाइत-जाइत तिरियाकेँ कहलथिन जे ओ तुलसी चौड़ा लग एकटा प्यालीमे दूध धऽ देथि । जखन तुलसीक गाछ मौला जाइक, दूध लिधुरमे बदलि जाइ तँ ओ अपना स्वामीकेँ मुइल बुझथि ।

कोशिकाक धार लग जा कऽ चनन बिरिछ तर फेकूराम गमछी बिछा कऽ पड़ि रहलाह । खैरा सभ जंगलमे चरऽ लागल । किछु कालक बाद सात सए बाघिन रमैत-झमैत केदुली वनसँ निकलल चराउर करऽ । सभ फेकूरामकेँ

घेरि लेलक । फेकू रहथि तँ जोरावर मुदा सभटा बाघिनकेँ एके बेर समुपस्थित देखि डेरा गेलाह। बाघिनक सरदार लुल्ही बघिनिञाके कहलथिन–'बेराबेरी अबै जो तऽ सभकेँ देखि लेबौक ।' लुल्ही तैयार भऽ गेल । बेराबेरी लड़ाइमे फेकूराम लुल्हीकेँ छोड़ि सभ बाघिनकेँ मारि कोशिकाक धारमे फेकैत गेला । धारमे बाघिनक लाशसँ पुले बनि गेल । मुदा फेकूराम थाकि गेलाह । जखन लुल्हीसँ सेहो सात दिन सात राति धरि लड़लनि तँ हिनका प्यास जोर कऽ देलकनि । ई पानि पीबाक हेतु समय चाहैत छलाह मुदा लुल्ही हिनका मौका नहि देलकनि । बरिया फेकूराम आर सात दिन सात राति धरि लड़ाई करैत रहलाह । अन्तमे लुल्ही बघिनिआँक द्वारा मारल गेलाह। हुनक चोला छोड़ि हुनक प्राण चनन बिरिछ पर चल गेल ।

ओहि जंगल दऽ कऽ सात सए बरदिया व्यापार करए जाइत छल । शरीरक संस्कारक हेतु व्यग्र फेकूक पवन मनुक्खक रूप धऽ कऽ बरदिया द्वारा गाम पर समाद पठौलक । कानू सभ कोशिका-कात जाय चिता निर्माण कय फेकूरामक चोलाकेँ यथाविधि धऽ देलथिन । फेकू रामक शरीरसँ स्वत: आगि निकललनि आ चिता जरय लागल । फेकू रामक जरैत चितामे कूदि कय हुनक वियोगसँ दुखी मीत दयाराम ओ मनसाराम सेहो प्राणान्त कयलनि ।

फेकूरामक संस्कारमे जे भोज भेलैक ताहिमे फेकूराम, दयाराम ओ मनसारामकेँ स्वयं पंचकेँ पात-भात परसैत देखि सभाक लोक डेरा गेल मुदा हुनका सभक दैवी शक्तिक अनुमान कय सभ शान्त रहल ।

बादमे ई तीनू मनुषदेवा गणिनाथ-गोविन्दक देवानक रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह आ पूजित भेला पर जनकल्याणमे लागल रहैत छथि । अनेक घरमे कुलदेवताक रूपमे हिनक पूजा होइत अछि । कानू आ हलुआइ जातिमे हिनकालोकनिकेँ गणिनाथ-गोविन्दक समकक्षे बूझि पूजल जाइत छनि ।



कारिख

जोतिक नामक एकटा भगत राजा परौली राजमे शासन चलबैत छलाह। ओ दीनानाथक पजियार छलाह आ सभ दिन सकाले दीनानाथक पूजा कएलाक बादे घर-गृहस्थीक काजमे लगैत छलाह ।

एक दिन जोतिक एक सय एक हर लऽ कऽ केदुलिया वनमे जोतऽ गेलाह । हरक कारणे दीनानाथक पूजामे बेरसँ कुबेर भऽ गेलनि । दीनानाथ जखन देखलनि जे जोतिक पजियार आइ पूजा नहि दऽ रहल छथि तँ विप्रक रूप धारण कऽ पहुँचला परौली राज । ओतऽ जोतिकक माय अपुरासँ पता लगलनि जे हुनक पजियार केदुलीवन हर लऽ कऽ गेलाह अछि । दीनानाथ विदा भेलाह जोतिकक उदेशमे–

घरिएक चलल हो विप्र, पहरो ने बितलै
जूमि गेल केदुलिया बन हो राज ।

केदुलिया वनमे विप्र बनल दीनानाथ जोतिककेँ जल्दी पूजा दऽ कऽ अनजल करबाक विचार देलथिन । मुदाक जोतिक हरवाहीक काज पूरा कयलाक बाद निश्चिन्तसँ पूजा करय चाहैत छलाह । एहि पर दीनानाथ खिसिया गेलाह । तरबाक लहरि मगज चढ़ि गेलनि । ओ जोतिककेँ कोढ़ी-कुष्ट फुटबाक शाप दऽ देलथिन। दीनानाथ स्वयं अलोपित भऽ गेलाह । हुनक जाइत देरी जोतिकक सभटा राज-पाट, हर-बड़द नष्ट भऽ गेलनि । शापित जोतिक घर घुरलाह आ अपन तिरिया सत्तीकेँ सब वृत्तांत सुनाय शापसँ मुक्तिक हेतु केदुलिया-वनवास जाय तपस्या करबाक इच्छा व्यक्त कयलथिन ।

तिरिया सत्ती बारह वर्ष आगाँ ओ बारह वर्ष पाछाँक हाल जनैत छलीह। हुनका बुझबामे आबि गेलनि जे जोतिक आब घुरताह नहि, तँ हुनका तपस्या हेतु जयबासँ मोड़ऽ चाहलथिन । कहलथिन–

गौनाके सरिया हो सामीनाथ, रंगो ने मलिन भेल।
हाथके कंगना हो सामीनाथ, खोललो ने गेल ॥

'एखन तँ गौना करौला चारिओ दिन नहि भेल अछि–तखन अहाँ कोना हमरा छोड़ि कऽ चल जाएब । हमरो संगे नेने चलू ।'

जोतिक हटपिटमे पड़ि गेलाह । फेर तिरिआकेँ समझबैत कहलथिन जे ओ अपना माय-बापक राज चल जाथि । मुदा तिरिया सत्ती तैयार नहि भेलथिन। कहलथिन–

अगिया लगेबै हो सामीनाथ, माय बापक रजवा, बजर खसेबै जेठ भाइ॥'

अन्तमे जोतिक सत्ती तिरियाकेँ एकटा फूल देलथिन आ कहलथिन जे हम बारह वर्ष धरि सपनेमे अयबऽ, सपनेमे जयबऽ, सपनेमे भेट मुलाकात होइत रहत, मुदा तोँ संग नहि जाह । हारि-दारि कऽ तिरिया सत्तीकेँ मानऽ पड़लनि । जोतिक तपस्याक हेतु चल गेलाह आ सप्पनमे तिरिया सत्तीसँ भेट कऽ लेल करथि ।

बारहम वर्षमे जाकऽ तिरियासत्तीकेँ गर्भ ठहरि गेलनि । प्रसवक दर्द उठलनि तँ छलकी नौड़िनकेँ पठौलथिन चमैनिक ओहि ठाम । मुदा चमैनि परौली राज जयबाक हेतु सहजहिं तैयार नहि भेलि । ओकर कहब छलैक जे 'बारह वर्षसँ हम परौली राजमे पूतक जनमक लेल भोर-साँझ दीनानाथकेँ अँचरा उठबै छली जे एहन सुयोग भेटने निछाउर-पुरौंतसँ घर भरि लेब । तेँ हम पयरे परौली नहि जायब । हमरा लेल लाले रंग महफा, सबुज रंग ओहरिया, टाङे खातिर बत्तिसो कहार जावत् नहि आओत, तावत् हम सोलहो सिंगार नहि करब, बत्तीसो अभरन नहि पहिरब, रानीक दर्द हरबाक हेतु हम नहि जायब ।'

व्यवस्था तँ सभटा भेलैक मुदा चमैनिक पहुँचबासँ पूर्वहिं कारिखक जन्म भऽ गेल रहनि, तिरिया सत्तीक कोखि भरि गेल रहनि । कारिख छलाह देवांश । हुनक जन्म होइते अनेक प्रकारक अद्भुत चमत्कार सभ होमऽ लागल–

कारिख जनम भेल दुनियाँ आनन्द भेल
डोलि गेल इन्दर कविलास हो ।
सुरपुर डोलए कारिख नरपुर डोलैए हो
डोलय लागल इन्दर कविलास हो ॥

इजोरियाक चान जकाँ कारिख बढ़ऽ लगलाह । हुनक अद्भुत सामर्थ्यक कथा जन-जनमे पसरऽ लागल–

नदियाके तीरे-तीरे खेललऽ शिकार हो, कारीख दुलरुआ ।
बिछि-बिछि मारै छऽ मजूर हो, कारीख दुलरुआ ॥
कानि-कानि कहइ छथिन वनके मजूरनी हो, कारीख दुलरुआ।
वारी वयस हरि लेलऽ सेनूर हो, कारीख दुलरुआ ॥

जोरावर कारिख नेनपनहिमे बाघ-बघिनिआकेँ नाथि कऽ अपन अद्भुत सामर्थ्यक परिचय देलनि । एक बेर लोक सयला असनानक हेतु मना कयलकनि–

नहिञे जे जइयौ कारिख, सयला असलनमे हो राम ।
राम ! उहाँ तऽ रहैये नाग-नगिनिञे हो राम ॥

मुदा कारिख सयला असलान कएलनि आ नागो-नागिनकेँ कुसक डेफसँ नाथि देलथिन ।

कारिख जखन जवान भेलाह तँ अपन पिताक सम्बन्धमे जिज्ञासा भेलनि। मायसँ पता लगलनि जे हुनक पिता दिवड़ाक भीड़ बनल केदुली वनमे तपस्या कऽ रहल छथिन । कारिख पिताक उदेसमे निकललाह । कारिखक जाइत देरी परौली राज सुन्न-मसान भऽ गेल–

किनका बिनु सून लगैए; नगर अजोधा हो,
किनका बिनू परौली स्थान हो ।
साधु बिनु सून लगैए नगर अजोधा हो
कारिख बिनु ·परौली स्थान हो ॥

मुदा कारिखक पिता केदुली वनमे नहि भेटलथिन । तखन कारिख अपन भगत मालीक ओतऽ पहुँचलाह । शोर करैत देरी हिनक पजियार माली आवभगतमे लागि गेल–

घरसे बाहर भेलै मलिया भगतिया हो ।
नजरि पड़ल कारिख नन्दलाल हो ॥
एक हाथ लैए मलिया झारिल लोटा पानी हो।
दोसर हाथ सिंहासन पटिसार हो ॥
पैर तोँ पखारऽ रे बाबू सिंहासन चढ़ि बैठू हो।
कहू बाबू परौली कुशहाल हो ॥

माली जखन जनलक जे कारिख पिताक उदेसमे निकललाह अछि तँ ओ हुनका जोतिकक तपस्याक स्थल दिशि संकेत करैत गंगाजीक किनारमे स्थित पीपरक गाछक पता बतौलक । कारिख ओतहु गेलाह मुदा पितासँ भेट नहि भऽ सकलनि । पिताक अनिष्टक प्रति आशंकित कारिख लगला कानऽ। बूढ़ीक रूप धारण कऽ गंगाजी कनैत कारिखकेँ परबोधि हुनक सूचना देलथिन जे जोतिक आब अपन तपबलसँ वैकुण्ठधाम लाभ कऽ चुकल छथि । कारिख चलि गेलाह बैकुण्ठधाम आ पितासँ घर घुरबाक आग्रह करऽ लगलथिन । मुदा जोतिक पजियार पुनः मर्त्यभुवन जयबाक हेतु तैयार नहि भेलाह आ पुत्रकेँ आशीष दऽ राज चलयबाक आदेश देलथिन । कारिख घुरला परौली राज आ जीवन सामान्य जकाँ बीतऽ लगलनि–

कओने निरमोहिया राम बँसबा कटेलखिन राम केदलिया वनमे ना ।
कओने निरमोहिया बिनेलखीन चारु खाट राम केदलिया वन मे ना॥
जोतिक निरमोहिया राम बँसबा कटेलखिन राम केदलिया वनमे ना ।
कारिख दुलरुआ बिनेलखीन चारु खाट राम केदलिया वनमे ना ॥
किनकर पुतहुआ राम भोजन बनेलखीन राम केदलिया वनमे ना ।
कओने निरमोहिया जेबैए छप्पन भोग राम केदलिया वनमे ना ॥
जोतिक के पुतहुआ राम, भनसा बनेलखीन राम केदलिया वनमे ना।
कारिख दुलरुआ जेबैए छप्पन भोग राम केदलिया वनमे ना ॥

किछु दिनक बाद कामरु-कामाक्षामे नयना-मयना जोगिनक अत्याचार बढ़ल । क्रमशः ओ दुनू जादूगरनी बहिन छप्पनो कोटि देवताकेँ अपन जादूक प्रभावसँ बनिसार दऽ देलक । कारिखकेँ जखन देवता सभक दुर्दशा बूझल भेलनि तँ देवता सभकेँ मुक्त करबाक हेतु ओ चलला-कामरु राज । अपन

जादूक प्रभावसँ ओ देवता सभकेँ छोड़ैबाक प्रयास कयलनि आ नयना-मयनाक जादूक गढ़ तोड़ऽ चाहलनि, मुदा दुनू बहिनक रूप-जालमे फँसि स्वयं सेहो बनिसार पड़ि गेलाह ।

बारह वर्ष धरि नयना-मयनाक बनिसारमे पड़ल कारिख अपन जन्मी इयार गोविन्दजीक प्रतापसँ बनिसारसँ मुक्त भेलाह आ यावज्जीवन जनकल्याणमे लागल रहलाह ।

अत्याचारक विरुद्ध शंखनाद, अद्‌भुत सामर्थ्य ओ जनकल्याणक भावनाक कारणे आइयो जोरावर कारिख अनेक घरमे कुलदेवताक रूपमे पूजित छथि ।



दुलरा दयाल

आम, पान, माछ, मखानक हेतु प्रसिद्ध मिथिलाक माछ ओ मखानक उत्पादनसँ सम्बद्ध जाति मलाहक जातीय जीवनमे दुलरा-दयाल उर्फ नटवर दयालसिंहक लोकगाथा तथाकथित जातिक कीर्त्तिगाथाक रूपमे चर्चित-अर्चित अछि । गाथाक गेय रूपकेँ गबैत मिथिलाक कोनो मलाह ततेक मानसिक तृप्तिक अनुभव करैत छथि जे दिन-रातिक व्यावसायिक जीवनसँ ठेहिआयल शरीरक सुधि सेहो बिसरि जाइत छथि ।

बखरी-सलौनाक चौघटिया इनार । एकटा ननदि-भौजाइ पानि भरबाक हेतु डोल इनारमे खसौनहि छली कि कोनो अपरिचित बटोही पानिक याचना करैत बाजल–हे पनभरनी, जँ निम्मन जातिक होइ तँ एक लोटा पानी दिअऽ आ जँ अछोपिन होइ तँ डोल-उबहनि दिअऽ । पियासे कण्ठ सुखा रहल अछि। जान बचाउ । धरम करू ।' एहि पर दुनू ननदि-भौजाइ आगत बटोहीक परिचय जानऽ चाहलनि । ननदि अपन परिचय दैत बाजलि–'हमर नाम छिक धनी अमरौटी, घर बखरी राज, बापक नाम दुखरन सहनी, माइक नाम बहुरा ठकुराइन, सासुर भरौड़ा, ससुर मालबिसम्भर, सासु गजमोती, सामीक नाम कोना कहू ?'

एहिपर बटोही अपन परिचय दैत बाजल –'हे पनिभरनी, हमर नाम छिकै दुलरा दयाल, घर भरौड़ा, बाबूक नाम मालबिसम्भर, माइक नाम गजमोती, चच्चाक नाम भीमल सहनी, सासुर बखरी, ससुरक नाम दुखरन सहनी, सारक नाम मानिकचन्द, सासुक नाम बहुरा ठकुराइन, सरहोजिक नाम सोनमतिया, तिरियाक नाम कोना कहू ?'

बटोहीक ई परिचय सुनैत देरी दुलरा-दयालक पत्नी धनी अमरौटी जे पानि भरबाक उपक्रम करैत छलीह, लजा गेली । सवा हाथ घोघ काढ़ि लेलनि। भौजाइ सोनमतियासँ सटि कऽ चट ठामे बैसि गेली । सोनगतिया बारह वरषपर अकस्माति ननदोसिकेँ पाबि विभिन्न प्रकारक मसखरीमे लागि गेलीह।

क्रमहि पता लगलनि जे दयालसिंह अपन दोंगाक दिन मनबय आयल छथि । सुनैत देरी सोनमतियाकेँ ठकमूड़ी लागि गेलनि । ओ जनैत छलीह जे जँ पहुना दुरागमनक हेतु बखरी राज जाइत छथि तँ सासु हुनका घूमिकऽ आपस नहि आबऽ देतनि । जमाइयेक नामपर बहुरा गाम-घरक डाइन-जोगिनसँ पैंच-पालट खयने छलि । जमायेकेँ दऽ कऽ ओकरा सभकेँ सधयबाक छलैक। दुलरा-दयालक गठल शरीर आ पार्श्वमे बैसलि धनी अमरौटीक सिरक सेनूर, हाथक लहठी, सोड़हो सिंगार आ बत्तीसो अभरनकेँ देखि-देखि सोनमतिया कननमुँह भऽ गेलि। अन्तमे ओ दयालसिंहकेँ चौघटियेपरसँ डोली फनेबाक आग्रह करऽ लगलीह । मुदा दुलरा-दयाल अड़ि गेल । ओ जँ डोला फनाओत तँ बखरी राजसँ, आजन-बाजन, संग, ढोल-ढाक ओ विध-बरियातीक संग। अपने कनिञाकेँ अपनेसँ चोराकऽ लऽ जयबाक कोन प्रयोजन ? आब ओ पाँच सालक दुलहा-दयाल अछि थोड़े, जकर बरियातीमे आयल सात सय मलाहकेँ ओकर सासु बहुरा ठकुराइन अपन जादूक बलसँ मारि देने छलैक । भरौड़ा राजक सात सय गोढ़िनिञा एके संग राँड़ भय गेलि छलि । आब तँ ओ नटवर दयाल भऽ गेल अछि । गुरु यशोदाक संगतिसँ आब ततेक ने जादू सीखि लेलक अछि जे बहुराकेँ नचा-नचाकऽ मारत । आब तँ ओकरा लग इन्द्र भगवानक वरदानो छैक । इन्द्रासनमे इन्द्र भगवानकेँ अपन नाचसँ जे प्रसन्न कएने छल ओ आ वरदानस्वरूप मोहना मनरियाकेँ जे प्राप्त कऽ लेलक अछि। जखन कखनो मोहना मानरिपर थाप दैछ आ लाल कछिया, जामा जोड़ा पहीरि नटबर दयाल घुँघुरुक संग नाचय लगैछ तऽ ककर ने मोन मोहित कऽ लैछ? तँ दुलरा-दयाल बखरी राजहिसँ डोली फनाओत आ विआहक सभटा बदला सधाओत ।

आ बदला सधायब जरूरियो छलैक । बखरी राज भरौड़ा राजक इज्जति माटिमे मिला देने छलैक । दुखरन सहनी आ बहुरा ठकुराइन दुनू प्राणी गंगा स्नानक हेतु गेल छलाह । ओतहि हुनका डेराक कातहिमे भरौड़ाक मालबिसम्भर आ गज्रमोती दुनू प्राणीक सेहो डेरा छलनि । संयोगसँ दुनू परिवार मलाहे जातिक आ दुनूक पत्नी गरभबत्ती । परिचय-पातक बाद ई स्थिर भेल जे दुनूक गर्भसँ जँ बालक जनमय तँ दोस्त, कन्या जनमय तँ बहिनपा आ पुत्र-पुत्री भेला उत्तर दम्पती होयत।

कालक्रमे बहुरा ठकुराइनकेँ भेलनि धनी अमरौटी बेटी आ गजमोतीकेँ भेलनि दुलरा-दयाल पुत्र। पूर्व वचनक अनुसार बिआह स्थिरे रहल । मुदा बहुरा छली नामी डाइनि । बेटीक बियाहमे आयल सात सय बरियातीकेँ खा गेलि । दयालसिंहक चच्चा भीमल सहनी कोनहुना अपन भातिजकेँ लऽ गाम पड़यलाह । बहुरा हुनको एकटा आँखि लऽ लेलक । एहि हर्जानाक बदला चुकौने बिनु भरौड़ा राजक पाग सब दिन नीचे रहितैक ।

आ दयालसिंह अपन जादूक बलसँ, कमला माइक सहायतासँ आ दोस्त अहीरक जादूक टाटसँ बखरीक सभटा जादूगरनीकेँ नाथि देलनि । सासु बहुराक सभटा मंत्र छीनि अढ़ाइ आखर छोड़ि देलथिन, जाहिपर सौंसे संसारक डाइनिक गुजर भऽ रहल छैक । बखरीसँ डोला फनाय दुलरा-दयाल विदा भेलाह भरौड़ा राजक दिस। मुदा ओ छलाह कमला माइक फुलडलिया । गामक निकट बलथी धारमे दुलरा-दयाल डोला सहित धनी अमरौटीक संगहि चौढार भऽ गेलाह ।

तहियेसँ मिथिलाक लक्ष-लक्ष मलाह जातिक सुरक्षाक मान्य-बिन्दु, व्यावसायिक प्रगतिक केन्द्र-विन्दु मानल जाइत छथि—दुलरा दयाल ।

◆

गाङो देवी

मलाह जातिमे गाङो देवी नामक एकटा लोकदेवीक पूजा कएल जाइत छनि । मछहर करबासँ पूर्व जलकरक भीड़ पर थोड़ेक दूर नीपि सब देवताक स्मरण कय गाङो देवीक सेहो स्मरण कयल जाइत छनि आ सिनुर-टिकुली, पान-प्रसाद, धूप-दीपसँ गाङोकेँ मनाय जाल फेकल जाइछ । एहन मान्यता छैक जे गाङोक कृपा प्रसादात् खूब माछ फँसैत छैक ।

एहि लोकदेवीक सम्बन्धमे जे लोकगीत सभ मलाह जातिमे प्रचलित अछि ताहिमे मलाहिनक दैनन्दिन जीवनक चित्रांकन ओ दाम्पत्य जीवनक नोंक-झोंकक विवरण भेटैत अछि ।

गाङो देवीक जन्मसँ सम्बद्ध जे गीत उपलब्ध अछि से आनो-आन लोकदेवता जेना काली, बन्दी, महामाया, शीतला आदिक जन्मसँ सम्बद्ध गीतसँ मिलैत अछि—

कओने दिन आहे गाङो तोहरो जन्म भेल
कओने दिन भेल छठिहार हे ।
शनि दिन आरे सेवक हमरो जनम भेल
शनि छवे भेल छठिहार हे ॥
कओन घर आहे गाङो तोहरो जनम भेल
कओने घर भेल छठिहार हे ।
टुटले मड़ैया रे सेवक हमरो जनम भेल
मुनहर घर भेल छठिहार हे ॥
कथिए पहिरि हे गाङो तोहरो जनम भेल
कथिए पहिरि छठिहार हे ।
फाटले पुरान पहिरि रे सेवक हमरो जनम भेल
पटम्मर पहिरि छठिहार हे ॥

जखन गाङो दाइ पैघ होइत छथि तँ झुमरी खेलाइत काल हुनकर गलाक गिरमलहार खसि पड़ैत छनि । गाङो दाइ कानऽ लगैत छथि—

छोटी रे अङनमा गाङो दाइ बहुते पसार ।
झूमरी खेलइते गाङो हे टुटलो गिरमलहार ॥
कौआ लऽ गेल मुनरी गोरैया गिरमलहार ।
ताही रे करनमा गाङो दाइ रोदना पसार ॥

तखन गाङोदाइक भाइ आबि कऽ हुनका नव गिरमलहार कीनि देबाक आश्वासन दैत चुप करैत छथिन–

होयतै परतिया गाङो गे लगतै बजार ।
कीनि देबौ मुनरी बेसाह गिरमलहार ॥

एहिना कहियो गाङो देवीक बिछिया हेरा जाइत छनि । फेर रोदना पसारैत छथि । भाइ सोनारक ओतय पहुँचि आदेश करैत छथिन–

कहाँ गेलऽ किए भेलऽ सोनरबा रे भैय्या
गढ़िये दिऔ ना ।
गाङो गोर बिछिया गेलै हेराय हे भैय्या
गढ़िये दिऔ ना ॥

सयला असलान करैत काल गाङो देवीक ललाट परक टिकुली पानिमे खसि पड़ैत छनि । टिकुली तकबाक हेतु मलाह बजाओल जाइत अछि–

कहाँ गेले किए भेले छौड़ा झिनमा मलहबा रे
खोजि दिअउ टिकुली लिलाट ।
एक जाल फेकलक झिनमा दुइ जाल फेकलक
पड़ि गेल घोंघरी सेमार ॥
तेसर जाल फेकलक जब झिनमा मलहबा रे
भेटि गेलै टिकुली लिलाट ॥

गाङो देवी पैघ होइत छथि । पारम्परिक रूपसँ हुनक विआह-द्विरागमन भऽ जाइत छनि–

बाबा जे देलकौ गाङो, अउँठी गे मुनरिया
मैया देलकौ खोइंछा दूभि-धान ।
भैया जे देलकौ गाङो, गल्ला गिरमलहरबा
पहिरि के जयबे ससुरारि ॥

सासुरमे पैर रखिते गाङो दाइ पुतहुक नित्यकर्मक शिक्षा सासुसँ पाबऽ लगलीह–

भोर भेलै भिनसरबा भेलै कोइलिया घन हे बोलइ,
उठू उठू निरधन गे पुतहू बहारू घर-अङनमा ।
सासु सूते देहरी भैंसूर सूते अङनमा,
सामी सूते मुनहर घर कइसे बहारू घर-अङनमा॥
गोरके नेपुलबा हे सासु रुनुझून करैयऽ ।
हाथक कङना करे अनुराग हो रामा ॥

मुदा गाङो देवीक बहानाबाजीक सोझाँ सासु बीस पड़ैत छथिन । ओ तुरत बाधा-निवृत्तिक उपाय बतबैत छथिन–

गोर के नेपुलबा हे पुतहू, कोठी कन्हा रखिहऽ
हाथक कगना बान्हू अँचरबे हो रामा ।
भौरे रूपे अङना बहारू हो रामा ॥

एक दिन गाङो देवी पानि भरबाक हेतु 'नदी तीर जमुनमा' पहुँचैत छथि । ओतऽ देखैत छथि जे हिलसा, पङासक अवार चलि रहल अछि । घर घूरि गाङो ससुर, भैंसुर ओ सामीजीकेँ मछवाहिक हेतु विदा करैत छथि–

ससुराकेँ बाँस भैंसुरबाके जलबा, छिया नाम रे
सामीजीकेँ देलनि महाजाल ।

ससुर-भैंसुर जाल फेकैत छथिन मुदा अगबे घोंघा-सेमारटा पड़ैत छनि। अन्तमे गाङोक नाम लऽ हुनक सामी जाल फेकैत छथि । हिलसा-पङास आ रहुआ बोआरसँ जाल भरि जाइत अछि । तकर बाद–

मछबा जे लेलकै गाङो मथबा चढ़ेलकै
चलि भेलै हटिया बजार ।
घरिएके चलल गाङोकेँ पहर पएरा बितलै
जूमि गेलै हटिया बजार ॥

सभटा माछ हाट-बजारमे बेचि गाङो देवी खोंइछामे पाइ बान्हि चललीह कललबा दोकानपर । सामी लय किछु मधु लितथि । मुदा कललबाक सभटा मधु पहिनहि बीकि गेल रहैक तेँ हुनका सामीक हेतु दारूक व्यवस्था नहि भऽ

सकलनि। हहायल-फुफुऐल गाङो तमोलिनक ओहि ठाम गेलीह मुदा ओतहु पान नहि भेटि सकलनि ।

घर पहुँचि गाङो सामीकेँ ने दारू दऽ सकलथिन आ ने पान । एहिपर ओ रूसि कऽ परदेस कऽ बिदा भऽ गेलनि । गाङो देवी हकरोस करऽ लगलीह–

कहाँ गेलऽ किअए' भेलऽ गामकेँ बहिनपा
सामीजीकेँ दियउ ने मनाय ।

मुदा बहिनपा सभ तैयार नहि भेलथिन । कहलकनि–

अनकर पिआकेँ गाङो हे आन कोना मनौते
अपना पिआकेँ अपने लिऔ मनाय ।

गाङो देवी अपन पिआकेँ उपालम्भपूर्वक मनबऽ लगैत छथि–

जब हम छलियौ हो सामी, बारी हो बयसबा,
तब पिआ दौड़ि-दौड़ि हो आय ।
आब हम भेलियै पिआ हो तरुणी उमरिया
तब पिया जाइ छऽ परदेस ॥

गाङो देवीक प्रति करुणासँ अभिभूत हुनक प्रियतम घर घूरि अबैत छथि । हुनक जीवन-शंकट सांसारिक उच्चावच्चताकेँ नँघैत रहैछ ।

गाङो देवीक साधक भगत हिनक कृपासँ गाय-गोहारि, तिरिया गोहारि, बालक गोहारि कऽ नेना, स्त्री ओ पशुमात्रक कल्याण करैत मिथिलाक ग्राम्य जीवनमे देखल जाइत छथि । एहि भगत समुदायकेँ एकेटा लोभ, एकेटा लक्ष्य, एकेटा उद्देश्य रहैत छैक–लौकिक यश आ एहि यशक हेतु ई सभ गाङोकेँ भक्ति-भावान्वित हृदयसँ उद्गारपूर्वक मनबैत रहैत छथि–

अपने जे जाइ छए देवी गे, कामरु ऐसन रजबे हो राम।
हमरा लय अनबे कोन सन्देशबे हो राम ॥
नहि हम अनबौ रे सेवक अनधन सोनमे हो राम ।
नहि अनबौ पाकल बीड़ा पनमे हो राम ॥
जब हम जयबै रे सेवक कामरु ऐसन रजबे हो राम ।
तोरा लेखे लयबौ जसके मोटरिये हो राम ॥

◆

जयसिंह

लोकनायक जयसिंह ओहि कीर्त्तिपुरुषक नाम थिक जे अपन अद्भुत पराक्रम द्वारा कमलाक बनिसारमे पड़ल पिताकेँ छोड़ा कऽ मलाहक पूज्य भऽ गेल छथि । मलाह लोकनिक पूजनीया कमला निरन्तर जोराबर मलाह सभकेँ अपन फुलडलिया सेवक बनयबाक कुचक्र चलबैत रहैत छथि । जयसिंह सेहो जोराबर छलाह तेँ कमलाक दृष्टिसँ बाँचल नहि रहि सकलाह ।

मरड़ चिन्तामनक पुत्र जयसिंह माता जसुमतिक कोखिसँ अवतार लेलनि । लालपुर गाम आनन्दित भऽ उठल । मुदा ओहि कीर्त्तिपुरुषक जनमिते चारू खूट डोलऽ लागल । इन्द्रपुरमे इन्द्रासन दलमलित भऽ उठल । चौदह कोस तिरहुत डोलि गेल । कमलाक आसन-सिंहासन डगमगा गेल । मैनीमंठ गहबर डोलि गेल ।

मैनीमंठ गहबरमे बैसलि कमला घबराय गेलि । 'ई के वीर अवतार लेलक जे हमरो गहबर डोलि उठल'–कमला सोचऽ लगलीह । भाइ कोइला पतरा उचारै छथि । चारू बगल आनन्दी छैक मुदा माझमे लालपुर गाममे मरड़ चिन्तामनक घरमे माता जसुमतिक कोखिमे बालक जयसिंह जन्म लेलक अछि। ओकरे अद्भुत पराक्रमसँ मैनीमंठ गहबर, आसन-सिहांसन सभटा डोलि उठल अछि ।

कमला बूझि गेलीह जे हुनक फुलडलिया सेवकक अवतार भऽ गेलैक अछि । ओ मालिनक रूप धरैत छथि । एकटा फुलडलियामे एली फूल, चमेली फूल साँठि लैत छथि आ जा जुमैत छथि मरड़ चिन्तामनक दूरा पर–

मरड़ चिन्तामनकेँ ऊँचे ऊँच हवेलिया
दुअरे अशोक घन गाछ ।

मालिनक दूरापर अबैत देरी जयसिंहकेँ कननी लागि गेलनि । माता जसुमति दूरापर ठाढ़ मालिनकेँ देखैत देरी आर घबड़ा गेलीह । मुदा जयसिंह

मालिनक कोड़मे जाइत देरी चुप भय जाइत छथि । मालिन बच्चाकेँ खेलबऽ लगैत छथि । यावत् जसुमति एम्हर-ओम्हर ताकथि तावत् कमला बच्चाकेँ लऽ कऽ पार भय जाइत छथि ।

घुरलापर मालिन ओहि बच्चाकेँ नहि देखि माता जसुमति धरणीपर लोटान मारऽ लगैत छथि । छाती-करेजा पीटऽ लगैत छथि । करुणा करऽ लगैत छथि–

कहाँ गेल किए भेल जयसिंह दुलरुआ
कोखिआ लहरि उठल जाय ।
जइसे कुहुके वनके कोइलिया
तइसे कुहुके जसोमति माय ॥

मैनीमंठ गहबरमे कमला जयसिंहकेँ पकिया सूत रेशमसँ बान्हि अस्सी मनक लोहाक बेड़ीसँ जकड़ि दैत छथि । मुदा दुधमूँहा जयसिंह एक बेर झमारि दैत छथि । बेड़ी टूटि जाइत अछि । जयसिंह मुक्त भऽ जाइत छथि ।

ओम्हर मरड़ चिन्तामनकेँ कमला सप्पन दैत छनि । मरड़ देखैत छथि जे हिरणी लद्दीमे हिलसा-पङास, रहुआ-बोआरक अबार चलि रहल छैक । सात निन्त्रसँ भेर मरड़ चेहा कऽ उठैत छथि । जाल-पात सरियबैत छथि । माछ पिटबाक हेतु भाइ वीरबल सहनीकेँ संग करैत छथि । माता जसुमति जाल चुमबैत छथिन । दुनू भाइ माछक उदेसमे चलि दैत छथि–

घड़िएक चलल मरड़, पहरो ने बितलै
जूमि गेल हिरणीके धार ।

घाट पर पहुँचि वीरबल सहनी छप्पनो कोटि देवताकेँ सुमरि पान-परसाद, गाँजा-तारीक तपान दैत छथि । मरड़ सुग्गी लाह ऊपर करैत छथि । कन्हेर होमऽ लगैत अछि । मुदा एकोटा माछ नहि फँसैत अछि । जाल सेहो कतहु जमीनमे ओझरा जाइत अछि । मरड़ पानिमे पैसि जाल छोड़बऽ लगैत छथि । पानिक भीतर पैसल कमलाक सिपाही बालासिंह मरड़केँ पकड़ि तरे तर मैनीमंठ गहबर लऽ जाइत छनि। भाइकेँ बहुत काल धरि ऊपर नहि अबैत देखि वीरबल ओकरा माछ-काछुक शिकार भऽ गेल बूझि कनैत-खिजैत घर कऽ विदा होइत छथि । ओहि ठाम जयसिंह पहिनहिसँ जूमल छथि । पिताक

डुबबाक खबरि सूनि जयसिंह अत्यन्त क्रुद्ध भऽ जाइत छथि । तरबाक लहरि मगजमे ठेकि जाइत छनि ।

खिसिआयल जयसिंह कमलाक गहबरकेँ तोड़ि दैत छथि । पीड़ीकेँ भसा दैत छथि । हिरणीक धार बान्हि दैत छथि । माछ-काछु, गोहि-बोच, जीवजन्तु सभ ऊसरमे लोटान मारऽ लगैत अछि; मुदा मरड़क कोनो पता नहि लगैत छनि ।

दूरमे कतहु सात सए पंच एकटा पीपरक गाछतर कमलाकेँ पूजा दैत रहैत छथि । हुक्काक गन्धपर चाचा वीरबलकेँ अम्मल जोर कऽ दैत छनि । मुदा कोनो पंच हुनका हुक्का देबाक हेतु तैयार नहि होइत छनि । जयसिंह सातो सय पंचकेँ एक-एक मुक्का दैत छथि । सभ केओ जमीनमे दू-दू हाथ नीचा धँसि जाइत छथि। सात सए गोढ़िनिञा राँड़ भऽ जाइत छथि ।

हिरणीसँ जयसिंहकेँ पिताक चोरिक पता लगैत छनि–'मरड़ कमलाक गहबरमे बनिसार पड़ल छथि । झाँझी कुत्ता, बाघ-बघिनिञा, बिढ़नी-पचहिया, नाग-मणियार, मरड़क पहरू छनि । जाहि घरमे मरड़ बन्द छथि ताहिमे भुन्ना माछक केबाड़ लागल छैक । मरड़क हाथ-गोर अस्सी मनक बेड़ीसँ बान्हल छनि आ छातीपर अस्सी मनक पाथर देल छनि ।'

जयसिंह मैनीकंठ गहबर जा जुमैत छथि । झाँझी कुत्ता पर रोटी, बाघ-बघिनिञापर खस्सीक रान, बिढ़नी-पचहियापर गुड़ ओ नाग-मणियार लग लाबा-दूध फेकि दैत छथि । ओ सभ अपन-अपन प्रिय खाद्यपर लुधकैत अछि आ जयसिंह भीतर चलि जाइत छथि । केबाड़ लग जाय पुरबा-पछबा हवा नोति खढ़मे आगि लगाकऽ भुन्ना-माछ सभकेँ झरकाबैत छथि । धाहपर माछ छट-छट कऽ हटि जाइत अछि। केबाड़ टूटि जाइत अछि । जयसिंह पिताकेँ मुक्त कऽ लैत छथि ।

दुधमूहाँ बालक जयसिंहक एही अद्भुत पराक्रमक कारणेँ आइयो मलाह लोकनि हिनका पूजा दैत छथि । मान्यता अछि जे जयसिंहक स्मरण कयने विपत्तिमे फँसल मलाह उबरि जाइत छथि । नदी सभमे पुल बनयबा काल जँ कोनो मलाह बालककेँ बलिक हेतु लऽ गेल जाइत छैक तँ जयसिंहक स्मरण कयलासँ पाया फाटि जाइत छैक आ बालक बचि जाइत अछि । जयसिंहक पारिवारिक जीवनसँ सम्बद्ध गीत गाबि-गाबि मलाह सभ अत्यन्त

आनन्दित अनुभव करैत छथि–

सब केर गोढ़नी हो जयसिंह, मछुका छुबै छै
तोरो गोढ़नी देहरी तर झमाय।
कहाँ गेल किए भेल जसुमति-पुतहू
रूसल जयसिंहकेँ लिऔ ने मनाय ॥
बारहे बरिस सासु तोरा तर बसलहुँ
कहियो ने केलियै सामी मुख जवाब ।
नहि हम चोरनी सासु नहि हम छिपनी
नहि मुसलौं आढ़त घर भंडार ॥
कहाँ गेल किए भेल बहिनी अशोगा
दिऔ ने जाल-बाँस चुमाय ।
जाल-बाँस आहो जयसिंह कनहा चढ़ौलऽ
चलि भेल हीरामन नग्र हे आब ॥
एक पार फेकलऽ जयसिंह दोसर पार फेकलऽ
तेसर पार रहुआ बोआर ।



अमरसिंह

अमरसिंहक लोकगाथा मिथिलाक ओहि कालखंड दिशि दृष्टि-निक्षेप करबैत अछि जखन बलवानक अब्बलपर शासन छलैक आ बलक संबल पाबि दुर्जन ओकर उपयोग दुष्कृत्यमे कऽ रहल छल । ओ दुर्जन छल बदिला चमार जे रूप-यौवन सम्पन्ना सर्वांगसुन्दरी कमलासँ बिआह करय चाहैत छल । मुदा कमला छलीह मलाहक पूजनीया देवी । युग-युगसँ कुमारि कमला अपन यौवनक उत्ताल तरंगपर नर्त्तन करैत आबि रहल छलीह । मलाहक जीवन-रक्षिका देवी होयबाक कारणे मलाह सभ सब दिनसँ कमलाकेँ माताक आदर दैत आबि रहल छलाह । ओकरापर आङुर उठौने मलाह ओहि आङुरकेँ काटि देब श्रेयस्कर बुझैत छलाह । कमलापर आँखि चढ़ौने ओ आँखि फोड़ि देल जाइत छलैक । मुदा आइ बदिला ओहि कमलाक मर्यादापर आघात करऽ चाहैत छल। कमलासँ विआह करबाक उछाहमे बदिला सेनुर-पहाड़सँ सिन्दुर मङौने छल, बियहुती कपड़ा बनबा लेने छल आ कोबर घरक निर्माण करबा रहल छल।

मुदा समाजकेँ बदिलाक ई कुकृत्य पसिन्न नहि छलैक । धर्मपर आघात भऽ रहल छलैक । काल्हि अनको बहु-बेटी सुरक्षित नहि रहि सकतैक । मलाह सभकेँ तँ बदिलाक ई काज अत्यन्त अनकट्ठल बुझना गेलैक । भितरे-भीतर सभ कनकना रहल छल मुदा प्रकट भऽ ककरो आगू बढ़बाक, प्रतिरोध करबाक साहस नहि छलैक । एहि ठामक माटि-पानि आक्रोशटा अभिव्यक्त करब सिखौने छलैक, प्रतीकारक क्रियाशीलता नहि आ एहि क्रियाशीलताक अभावमे सब चुपचाप देखि रहल छल ।

बदिलाक एहि अनाचारपर इन्द्रासन डोलि उठल । इन्द्रासनसँ अमरसिंहकेँ मृत्युभवन पठाओल गेलनि । माइ ज्ञानोक गर्भसँ अमरसिंह अवतरित भेलाह । जनमैत देरी अमरसिंह सौ-सौ दण्ड पचास खेलऽ लगलाह । पिता जल-व्यवसायी मलाह जातिक । मलाहोमे केओट उप-जातिक, जनिक पुरखा कहियो वन जाइत राम-लक्ष्मण ओ सीताकेँ गंगापार करौने छलनि; जे नौ-परिवहनकेँ अपन

आजीविकाक प्रमुख साधन बनौने छल आ एहि नदीमातृक देशमे जकर सन्तान घटबारक रूपमे खेबापर आ जिनसी लाह चलाय महाजनक सेवापर निर्भर करैत छल । जकर जीवनक खोआवला भाग पानिमे तीति कऽ गलि जाइत रहलैक, मछहर वृत्तिपर आधारित रहि जे सदिखन रोहू, बोआर, हिलसा, पङासक अबारक प्रतीक्षा करैत रहैत छल, ओकर एकटा पूत वीर बहार भेलैक अछि । पुत्रक रुचि देखैत पिता अमरसिंहक हेतु लाली अखाड़ा बनबा देलथिन्ह । सामरधन दुलहिनसँ बिआहो करा देलथिन । मुदा अमरसिंह दिन-राति सरो खेलाइत रहथि । गौना भेलहुँपर तिरिया सामरधनकेँ बिआहक कोनो सुख नहि भेटलनि अछि । तावत बलवीर्यक सोरहो सूनि कमला जूमि गेलीह अमरसिंहक दूरापर । चौदह कोस तिरहुतक ठकुराइन कमला, तकरासँ बदिला बिआह मङै छइ । अमरसिंहक जीबैत ई कोना संभव होयत ? अमरसिंह माइक आशीष लऽ कमलाक रक्षाक हेतु चलऽ चाहैत छथि । मुदा माइक ममता ज्ञानोकेँ विवश कऽ देलकनि । अपन सरवन पूतकेँ ओ अनका लय जब्बह कोना होमऽ देतीह । ओ आशीष नहि देलथिन । माइक आशीषक बिना अमरसिंह युद्धमे जयताह कोना ? मायकेँ मनौलनि । हट-पिटमे पड़ि ज्ञानो आशीष दऽ देलथिन–

'मारने ने मरबह, काटने ने कटबह, जारने ने जरबह,
बज्जर होतउ तोहर गात ।'

माइक आशीष लऽ अमरसिंह सामरधन तिरिया लग जाइत छथि मुदा ओ अमरसिंहकेँ विदा करबासँ पूर्व हुनक बलक परीक्षा लेबऽ चाहैत छथि । सात समुन्दर पार धौलागिरि पर्वतपर अक्षयबटकेँ गाछ छै, गाछमे धोधर छै, धोधरमे गेडुला पेटार छै, गेडुला पेटारमे साड़ी छै । ओ साड़ी पहिरने सामरधन परी भऽ जयतीह, आकाशोमे उड़ि सकतीह । तँ जँ ओकर सामी ओ साड़ी आनि सकबामे समर्थ हेतइ तँ अवश्ये बदिलाकेँ सेहो मारि सकतैक । तँ पहिने ओ साड़ी तँ आनि देखाबय । गेडुला पेटारक रक्षापर लागल नाग-नगिनिञा, बाघ-बघिनिञा, बिढ़नी-पचहियाकेँ तँ परास्त करओ पहिने, तखन ने जायत कमलाक आढ़त पूरय । जोरावर अमरसिंह सामरधनक ई मनोरथ पूर कऽ देलथिन । गेडुला पेटारक साड़ी पाबि सामरधन पतिकेँ बदिलाकेँ मारबाक हेतु विदा करऽ लगलीह । अमरसिंह पयान कएलनि –

घड़ियेक चलल अमरसिंह, पहरो ने बितलै
जूमि गेल बदिलाक राज

बदिलाक अखाड़ा वीर जलक्षत्री, कजरौटिया, पंजाबी पहलमान सबसँ भरल छल । अमरसिंह पहिने सऽहे-सऽहे बदिलाक सभ दाव-पेंच सीखि लेलनि । गुप्त रूपसँ मालिनक घरमे वास करऽ पड़लनि ।

पश्चात् एक दिन दोहरा कछिया डाँड़मे पहिरि जखन अमरसिंह अखाड़ापर उतरैत छथि तँ ताल ठोकैत देरी गाछ-बिरिछक पात झरझराय नीचा खसि पड़ैछ, दोसर तालमे पृथ्वी दलमलित भऽ जाइछ, बदिलाक आसन-सिंहासन डोलि उठैछ, कमलाक हेतु बनाओल कोबर घर ढनमना जाइछ । अशुभ लक्षण सभ देखि बदिला जूमैत अछि लाली अखाड़ापर । 'कोन ई दशमी पूत अवतार लेलक हए जे सभ असगुने देखि रहल छी'–सोचऽ लागल बदिला । अमरसिंह ओकर सभटा पोसुआ पहलमानकेँ क्षयमाण कऽ बदिलाक जुमलापर ओकरो मारि दैत छथि ।

तथापि अमरसिंहक क्रोध शान्त नहि होइत छनि । अनाचारीकेँ समूल नाश करबाक हेतु ओ बदिलाकेँ निर्वंश करऽ चाहैत छलाह । बदिलाक पत्नी गर्भवती छलैक । एक लाति अमरसिंह ओकर पेड़ूपर मारलनि । पूर मास रहबाक कारणेँ लारि-पुरैनि, सोनित समेत बदिलाक पुत्र पिछड़ा उछटि कऽ खसि पड़ैछ । जनमिते पिछड़ामल्ल अमरसिंहसँ युद्ध करऽ लगैछ । सात दिन सात राति धरि दुनूमे युद्ध चलैत रहैछ । मुदा पिछड़ाकेँ जखने अमरसिंह पकड़ि कऽ पटकऽ चाहैछ कि नारि-पुरैनिक कारणे ओ पिछड़ि कऽ दूर हटि जाइछ। अन्तमे, कमला आबा जोड़ैत छथि, पुरबा-पछबा हवा नोतल जाइत अछि । आबाक राख उड़ि-उड़ि कऽ पिछड़ाक देहपर सटैत जाइत छैक । ओकर देह सुक्खल जाइत छैक । पकड़बा जोगर भेलापर अमरसिंह ओकरा पटकि कऽ मारि दैत छथि । बदिला चमार निर्वंश भऽ जाइछ । धर्मक रक्षा भऽ जाइछ । समाजक बेटी कमला, मलाहक पूज्या कमला निरातंक भऽ जाइत छथि आ अमरसिंह मलाहक जातीय देवताक रूपमे पूजा पबैत आबि रहल छथि ।



केवल महाराज

सामन्ती युग छल । राजा सात सए पञ्चकेँ सात समुन्दर पार बनिसार दऽ देने छल । ई सभ पंच मलाह जाति छलाह । हिनका लोकनिक दोष एतबे छलनि जे ई सभ राजाक बेगार नहि करऽ चाहैत छलाह, ओकर पानि नहि भरऽ चाहैत छलाह ।

एही समय इनबारा गाममे जोरावर केवलसिंह माए जमुनाक कोखिकेँ आबाद कएलनि । धैर्य, साहस, बल ओ बुद्धिक आगार केवलसिंह नेनपनेसँ अपूर्व जोराबर बहरयलाह आ सातो सए पंचकेँ राजाक अत्याचारसँ छोड़ौलन्हि। सब ठाम केवल महाराजक जय-जयकार होमऽ लगलनि ।

मुदा केवल महाराजक जय-जयकार शिवराक अमरसिंहकेँ नहि सोहयलन्हि। अपन बल-पौरुषसँ ओ पहिनहिँ मलाहक जोरावर अवतारक रूपमे विख्यात भऽ गेल छलाह । सोचऽ लगलाह-'एक तँ ससांरमे सबसँ जोरावर हम छी, दोसर ई के निकलि गेल ?'

केवल महाराजक डिहबार छलथिन रघुनाथ भुइञा आ दोस्त देवकी सहनी। हिनका दुनूसँ अमरसिंह केवल महाराजक मूर बकसबाक सत्त कऽ लेलनि ।

गृहदेवताक अकृपा भेलनि । सात निन्ने सूतल केवल महाराजकेँ सप्पन भेलनि-'खेमैटी नदीमे हिलसा, पङास, रहुआ-बोआरक अबार चलि रहल छैक ।' केवल चेहा कऽ उठलाह । जाल-पात सरिऔलनि । भथ्थन भाइकेँ संग लय खेमैटी धार दिस मछहरक हेतु विदा भेलाह । भथ्थन भाइ बहिङामे एक दिस जुमरी जाल बन्हलनि, दोसर दिस डेली लटकौलनि । डेलीमे लछमी सौती राखि विदा होयबेपर छलाह कि ओहि निशाभाग रातिमे कागा डकि देलक । पाछूसँ क्यो छीकियो देलक। भथ्थन भाइ केवलकेँ जतरा करऽसँ रोकलथिन । मुदा केवलकेँ तँ उदमतिया लागल रहनि । ओ नहि रुकलाह ।

किछु दूर आगू बढ़लापर सियार दहिनासँ बामा रस्ता काटि देलकनि । भथ्थन भाइ गरजि पड़लाह-'बेर-बेर बरजै छी भैय्या बरजलो ने मानैछऽ' आ आगू बढ़बासँ इन्कार कऽ देलनि । केवल अड़ले रहलाह आ घड़िएक चलल केवलसिंह, पहर पएरा बितलै जुमि गेल खेमटी लद्दी धार ।'

केवलसिंह जतऽ अपन सुग्गी लाह गाड़ने छलाह ओतऽ कूदि लाहकेँ ऊपर करबामे लगलाह । लाहक निकट नुकायल अमरसिंह लाह ऊपर नहि होमय देथि। पानिक भीतर दुनू गोटेमे बहुत देर धरि जोरक प्रदर्शन होइत रहल मुदा बरिया केवलसिंह अपन लाह ऊपर कइये लेलनि । मछहर होमऽ लागल-

एक जाल फेकलह केवल बाबा दोसर जाल फेकलऽ
पड़ि गेल घोंघरी सेमार ।
तेसर जाल जब फेकलऽ केवल बाबा ।
पड़य लागल रहुआ बोआर ॥

भरि मोन माछ भारि केवल महाराज आ भथ्थन भाइ डेली-खोंघी समेटि घर विदा भेलाह । तावत् झोलफल भऽ गेल रहैक । एहि बीच देवकी सहनी अमरसिंहकेँ देल वचनक अनुसार दोस्तक संग गद्दारी कएलनि आ बाघक रूप धएलनि । मुदा जोराबर केवल हुनकासँ सात दिन सात राति धरि युद्ध करैत रहलाह आ अन्तमे हुनका कुशक डेफसँ नाथि सुस्ताय लगलाह ।

केवलकेँ मारबाक योजना असफल होइत देखि रघुनाथ भुइञाकेँ अपन देल वचन अस्थिर होइत बूझि पड़लनि । मुदा अपन फुलडलिया सेवककेँ ओ अपनेसँ मारथु कोना ? तथापि वचनक रक्षाक हेतु मोन कड़ा कऽ लेलनि आ लुल्ही बाघिनक रूप धऽ केवलपर आक्रमण कएलनि । फेर सात दिन सात राति युद्ध चलल । केवल अपन घरक गोसांइकेँ स्मरण कएलनि तँ हुनका युद्ध करैत बाघक रूपमे भुइञाक दर्शन भेलनि । सब बात स्पष्ट बुझबामे आबि गेलनि । गोसाँइसँ लड़ब उचित नहि बूझि देह नेरा देलनि । बाघिन बनल भुइञा हुनका मारि देलकनि।

मृत्युक बाद केवलक पवन इनबारा पहुँचल । सोनधनि तिरियाकेँ अपन मृत्युक समाचार कहलक । गौनाक साड़ियो सोनधनि तिरियाक मलिन नहि भेल रहनि आ एहन विपत्ति पड़ि गेलनि । धरतीपर ओ माए जमुनाक संग

लोटान मारऽ लगलीह। केवलसिंहक पोसुआ हीरामन सूगा अन्न-पानि बारि देलक । गामक लोक सभ केवलक चोला आनि संस्कार कएलक ।

मान्यता अछि जे अपन श्राद्धमे केवल अपने पात-भात परसैत देखल गेलाह। भोजमे सात दिन धरि सौंसे सभाकेँ भोज होइत रहल । केवलक जय-जयकार होइत रहलनि । अपन पौरुष, कीर्त्ति, अद्‌भुत सामर्थ्यक कारणे आइयो केवल मलाहक पूज्य बनल छथि ।

वस्तुतः एहि लोकनायकक गाथामे इर्ष्याजन्य प्रतिशोधक चिर पुरातन ओ सनातन मानव-धर्मक कालुष्यक आवृत्ति देखि पड़ैत अछि ।



दीना-भद्री

मिथिलाक आर्थिक जीवनक आधार अछि कृषि । कृषि-उद्योगक सफल संचालन हेतु कृषक मजदूरक भूमिका प्रमुख छैक । मुदा मिथिलाक कृषक मजदूर एखनो 'शोषित-मर्दित-अर्द्धबुभुक्षित, आर पहिरने गुदरी फाटल' भेटत । एहि कृषक मजदूरमे मुसहर जातिक भूमिका विशिष्ट छैक । कारी स्याह वर्णक मंगोलियन प्रजातिक ई जाति अपन छहछह शरीर, बलिष्ठ देहयष्टि एवं कमासुत स्वभावक कारणे कृषक मजदूरक विशिष्ट कोटि थीक। कोड़ल खेतक अल्हुआ-पतुआ चालि, पोखरि-झाँखरिक कातमे अन्हइ माछक शिकार कऽ, टाला-कोदारिसँ मटिकट्टाक भूमिका निबाहि जीवन-यापन करैत ई जाति प्रसिद्ध अछि खेतमे मूसक बिल कोड़बाक हेतु । मूसक किलाकेँ ढाहि ई ओकर अर्जित सम्पत्ति निकालबामे बीहड़ तँ होइते अछि, बीहरिसँ मूसकेँ बाहर कऽ ओकरा रुचिपूर्वक पकाकऽ खाइतो अछि । प्रायः अपन एही आदिम प्रवृत्तिक कारणे समाजमे ई जाति, मुसहर नामे जानल जाइत अछि ।

एहि जातिक उपनाम होइछ सादा । ई अपनाकेँ ऋषिकुलक सन्तान ओ शबरीक वंशज मानैत अछि जे रामचन्द्रजीकेँ ऐंठ बैर खोआय सद्‌गति पओने छलि। एहि जातिमे अनेक उपजाति सभ अछि यथा—मगहिया, सतार, धांगर, तिरहुतिया इत्यादि । आवास स्थानक स्थैर्यक आधार पर एहि जातिक दुइ गोट वर्ग अछि—टेबैता ओ झोलैता । जीविकाक अभाव अथवा जमीन मालिकक उपद्रवसँ उबि कऽ जीवन भरि नव आवास क्रमशः टेबैत रहबाक मानसिकतावला वर्ग टेबैता कहल जाइछ । टेबैता मुसहरक तुलना पड़बासँ कयल गेल अछि । जेना एक जोड़ पड़बा पोसि लेला उत्तर ओएह पड़बा विचरणक क्रममे आनो-आन पड़बाकेँ फँसाय आनि लैत अछि आ कोनो दिन मालिकक लग पड़बाक अनेक समूह स्वतः भऽ जाइत छैक, तँ कोनो दिन सभ पड़बा दोसर गोठक संग उड़ि खोपकेँ खाली सेहो कऽ दैत छैक । तहिना मुसहरक एक जोड़ाकेँ बसा लेलाक बाद अनेक मुसहर ओही ठाम बसऽ लगैछ आ टोले बनि

जाइछ, मुदा कखनो एहनो होइछ जे सभटा मुसहर राताराती पड़ाय दोसर ठाम नव आश्रय ग्रहण कऽ लैछ आ टोल खण्डहर बनि कऽ रहि जाइत छैक । एहि आधार पर कहबी छैक 'मुसहर जन आ पड़बा धनक कोनो बिसबास नहि, खन अछि खन नहि ।' टेबैताक एहि जातीय चरित्रक ठीक विपरीत झोलैताक स्वभाव होइत छैक । ई सभ एके स्थान पर पुस्त दर पुस्त रहैत अछि । झोलैता कहयबाक कारण एकरा सभक घरमे लागल झोलकेँ मानल जाइछ जे एकर स्थिर आवासक सूचक थीक । आवासकेँ स्थिर करबाक प्रक्रिया खन्ती गाड़ब कहल जाइत छैक ।

मुसहरक टोलकेँ मुसहरी कहल जाइत छैक । मिथिलामे दू-चारि गाम पर एकटा मुसहरी अवश्ये देखि पड़ैत अछि । माटि काटब, पशुपालन, सूगर पोसब, छिट्टा-पथिया बनायब आदि एहि जातिक वृत्ति-पक्षक विभिन्न आयाम होइत छैक।

मुसहर जातिमे काली, बामति, सुरसरि, बघेसरि, चौभान, महिषासुर आदि लोकदेवताक पूजन-परम्परा छैक । पूजामे सूगरक पाञ्जरमे खोभन्टा भोंकि ओकर बलि प्रदान करबाक प्रथा छैक । पूजाक हेतु नियुक्त व्यक्तिकेँ भगत कहल जाइत छैक । बलिदानक सूगरक गर्म खून भगत ताड़ीक संग पीबि जाइत अछि । देवताकेँ सिरनी, खीर, तमाकुल, गाँजा आदि सेहो चढ़ाओल जाइत छनि ।

दीना-भद्री एहि जातिक जातीय देवता थिकथिन । हिनक वीरगाथा एहि जातिमे गौरवक वस्तु बूझल जाइत छनि । एहि गाथाकेँ लौकिक गीतक माध्यमे गाबि ई जाति अपन श्रमक परिहार करैत अछि । एकटा लौकिक गीतक उदाहरण द्रष्टव्य थिक-

मचिया बैसल कमला खिड़की मे ओङठल
तकैत हेतै दीनाराम के बाट ।
कहाँ गेल किए भेल भैया दीना-भदरी
आनि दिऔ भैया सुतिहार ॥
कहमा से अनबौ गे कमला चनन लकड़िया
कहमा से अनबौ सुतिहार ।
धौलागिरि पर्वत से अनबौ चनन लकड़िया

भागलपुर से अनबौ सुतिहार ॥
बिना तपोवन के भैया डोलिया निरमेबै
उहो डोलिया उड़ल चलि जाय ॥

एहिना लोकदेवीसँ सम्बद्ध एक गोट गीतक स्वरूप एहि प्रकारक भेटैत अछि-

बामति सूरति देखि भुललै बरहामन छौड़ा
लय रे गेलै डिंगरा वन के ओर ।
एन वन गेलऽ बरहामन दुइ वन गेलऽ
तेसर वन अँचरा देल बिलमाय ॥
छोड़ू-छोड़ू आहो बरहामन हमरो अँचरबा
रोबैत हेतै गोदी के बलकबा ।
घरहीमे छौक बामति सासु तोर ननदिया
खेलैत हेतौ गोदी के बलकबा ।
सासु मोर अन्हरी ननदि ससुररिया
रोबैत हेतै गोदी के बलकबा।
बड़ आशा धेलियौ बामति तोहरो अँचरबा
हमरो आशा करै छें निराश ॥

एहि तरहेँ दीना-भद्री एवं अन्य जातीय ओ लोकदेवता-गृहदेवताक आराधनासँ सम्बद्ध सहस्रो गीत एहि जातिक धरोहर थिकैक जाहिमे कथातत्व अनुगुम्फित भेटैछ, भावक प्रवणता भेटैछ, लोकजीवनक यथार्थक अनुभूतिक चित्र देखि पड़ैछ, शृंगार ओ करुणा, अद्भुत ओ वत्सलता आदिक सहज पुट भेटैछ ।

जातीय देवता दीना-भद्रीक वीरगाथा मुसहर जातिक विशिष्ट सांस्कृतिक परम्पराक प्रतीक थिक । एहि गाथाक विवेचन सर जी. ए. ग्रियर्सन उनैसम शताब्दीक अन्तमे लोकजगतमे छिड़िआयल, मिथिला, मैथिल संस्कृतिक एहि रिक्थकेँ विभिन्न स्रोतसँ एकत्र कऽ कयने छलाह । परवर्त्तीयो कालमे एहि गाथाक विविध स्वरूप प्राप्त लोक सामग्रीक आधार पर प्रस्तुत होइत रहल अछि । एहि गाथाक विवेचन-विश्लेषण सेहो होइत रहल अछि । प्रस्तुत अछि लोकजगतसँ संकलित एहि गाथाक स्वरूप जे विभिन्न मुसहरीक परिभ्रमण कऽ संयोजित कयल गेल अछि-

दीना आ भद्री दुइ गोट मुसहर भाइ छलाह । हिनका लोकनिक पिता छलथिन कालू सादा आ माइ निरसो–

कथी लय करुणा करैए निरसो माइ ।
दहा लय करुणा करैए हंस-चकेबा
दीना-भदरी लय करुणा करैए निरसो माइ॥

दीनाक पत्नीक नाम छलनि रोदना आ भद्रीक पत्नीक बुधना । दीना-भद्री अपना-अपना पत्नीकेँ कखनो बाहर नहि जाय देथि । स्वयं दिन भरि शिकार खेलाथि । बलिष्ठ तेहन छलाह जे अस्सी मनक धनुष आ चौरासी मनक तीरसँ शिकार करथि। स्वतंत्र जीवनक प्रति दुनू भाइ आग्रही छलाह–

काँख लेलऽ नाताजी, बगल दबौलऽ नाताजी,
तीर रे धनुहिया, चलि भेलऽ बिजुवन शिकार।
हरिणो ने मारय नाताजी तितिरो ने मारय
बिछि बिछि मारैए मजूर ।
हकन कनै छै नाताजी वन के मजूरनी
बकसि दिऔ सिर के सेनूर ॥

दीना-भद्री जाहि राजमे रहैत छलाह तकर नाम छलैक जोगिआ नगर । जोगिआ नगरक राजा छलाह कनकधामि । अपन प्रजावर्गसँ बेगार पर कृषिकर्म कराबथि । बलिष्ठताक प्राकृतिक संबलक कारणे दीनाभद्री बेगार नहि करैत छलाह आ ने राजा सएह हुनका दुनूकेँ अढ़बैत-प्रताड़ित करैत छलथिन ।

राजा कनकधामिक बहिन छलैक बचिया धामि । एकरा अपन भाइक डरपोक स्वभाव नहि सोहाइत छलैक आ दीना-भद्रीक पुरुषार्थसँ ईर्ष्या सेहो होइत छलैक, जे राजाक शासनकेँ मानिते ने छलैक । बचिया धामि जादूगरनी छलि । जादूक सात सय पुड़िया ओकर खोपाक लटे-लटे बान्हल रहैत छलैक। दीना-भद्रीकेँ नीच देखयबाक हेतु ओ योजना बनौलक आ अपना भाउजिकेँ कहि एकटा पोखरि खुनबौलक। जादूक बलसँ एकटा पनियादराधक जोड़ा बनाए ओहि पोखरिमे छोड़बाय देलक । पानिक हेतु जे जीव-जन्तु पोखरिमे जाय, दराध ओकरा डँसि लैक। क्रमशः माल-जाल, चिड़ै-चुनमुन्नी, लोक-वेदक लाशसँ ओ पोखरि भरि गेल। लाशक गंधसँ सौंसे नगर घिनाय लागल । दीना-भद्रीकेँ पता लगलनि । दुनू भाइ नगरक लोककेँ एहि आतंकसँ बचैबाक

हेतु पोखरि जाय, पानि उपछि, परियादराधक जोड़ाकेँ पकड़ि कुशक डेफसँ नाथि देलथिन–

गामक पछिम कोड़ौलनि एगो लव पोखरिया।
ओही पोखरिया गे धमियाइन रोपलैं पुरइन
ओही जनि पैसिहऽ हो दीनाराम धरतऽ तोरा पनियादराध ।
ओहि जनि पैसिहऽ हो भदरी धरतऽ तोरा परियादराध ॥
घुरमी सहैते गे धमियाइन तोरो हम सधबौ ।
कुशक डेफसँ नथबौ गे धमियाइन तोहरो पनियादराध ॥
अस्सी मन के पत्थल छेदि कऽ हेबौ गे बहार ॥

दीनाभद्रीक एहि कीर्त्तिगाथामे ओकर प्रबल पौरुषक उद्घाटन, अद्भुत, तत्त्वक सम्मिश्रण ओ अतिरंजना लोककथाक सामान्य विशिष्टताक अनुरूपे छैक । पूर्व कथ्यमे श्रीकृष्णक कालिय-दमन वृत्तान्तक स्पष्ट प्रभाव लोकदेवताक चरित्रमे आरोपित बुझना जाइछ । बचियाक चरित्रमे तंत्रक प्रभाव परिलक्षित होइछ ।

दीना-भद्री द्वारा जखन बचियाक पनियादराधकेँ नाथि देल गेलैक तँ ओ आर बेसी क्रुद्ध भऽ गेलि । दीना-भद्रीकेँ राजासँ दण्डित करयबाक हेतु तुरत दोसर कुचक्र रचि लेलक । एहि हेतु अपन भाउजक संग पोखरिक मोहार पर जाय दुनू गोटे अपन-अपन नूआ फाड़ि लेलक आ देहमे कादो-माटि लगा लेलक । जखन राजा कनकधामि पोखरिक घाट पर जुमलाह तँ दुनू जनी लगलीह कानय-बाजय आ जनौलथिन जे दीना-भद्री हमरा सभकेँ कादोमे घिसिया-घिसिया कऽ मारलक अछि आ इज्जति सेहो लूटि लेलक अछि । ई बात सुनि कनक अप्रतिभ भऽ गेलाह । अक-बक बन्न भऽ गेलनि । की करथि की नहि, किछु ने फुराइन । जनानीवला बात । बहुबात भऽ जा सकैत छलैक, तँ ओ चुप्पे रहब नीक गमलनि । बातकेँ बाओग कयने अपने हसारति होइतनि । तँ सभ बात मोनेमे राखि लेलनि । मुदा आब हुनका मनमे प्रतिशोधाग्नि पजरि चुकल छलनि । मौका पबिते ओ दीना-भद्रीकेँ नीचा देखयबाक योजना बनबऽ लगलाह । तैओ मोनक कोनो कोनमे ओहि दबंग सहोदरक जोड़ीसँ भय लगले रहलनि ।

प्रतिशोधसँ जरैत राजा कनकधामि एक दिन अहलभोरे दीना-भद्रीक ओहिठाम जा जुमलाह । दीना-भद्री मुनहर घरमे सूतल छलाह । दीनाक पत्नी रोदना अङ्गना बहारैत छलि आ भद्रीक पत्नी बुधना जाँतमे किछु पीसि रहल छलि । राजा हिनका दुनूक नाङट-उघार देह देखि लेने छलाह । दुनू कनिञा हहायल-फुफुआएल डेराकऽ मुनहर घर दिस भगली । दीना-भद्रीक नीन टूटलनि । दरवज्जा पर राजाकेँ देखि आश्चर्य भेलनि । राजा कहलकनि-'सौंसे राजक लोक हमरा एहि ठाम बेगार करैत अछि आ तोँ दुनू भाइ नहि करैत छें। आब तोरा दुनू भाइक नहि गेने विद्रोह भऽ रहल अछि, तेँ चल आ हर लय दू सय बिगहा खेत जोति दे, तखने जान बाँचि सकैत छौक ।' ई सुनि दुनू भाइ राजाकेँ मुसुकी बान्ह बान्हि खूब पिटलनि । अप्रतिभ राजा मन मसोसिकऽ घर घुरि गेल आ अपन बहिनिक अपमानकेँ बिसरि जयबाक कोशिश करऽ लागल।

मुदा बचिया एकरा राजाक अन्यमनस्कता एवं डेरबुक होयब बुझलक। ओ तुरत जा जुमलि दीना-भद्रीक यार सलहेसक गहबरमे । सलहेस पुछलथिन-
की तोरा घटलौ गे बचिया अन-धन-लक्ष्मी की घटलौ पाकल बीड़ा पान।
बचिया बिनु सत्त कयने किछु कहबाक हेतु तैयार नहि भेलि-

एक सत्त दू सत्त तीन सत्त
तेसर सत्त जे नहि करय ।
अस्सी कुण्ड नरकमे परय ॥

सलहेस सत्त कऽ लेलथिन । बचिया एहि पर दीना-भद्रीक मूड़ मङ्गलकनि। सलहेस अवाक् रहि गेलाह । प्रपञ्चमे पड़ि जनमी इयारक मूड़ बकसि देने छलथिन।

दीना-भद्रीक घरक देवता छलथिन बघेसरि । बचिया हुनको थान पर पहुँचलि । सात दिन सात राति ओतहि भुखले पड़लि रहलि । अन्तमे तिरिया वधक पापसँ डेरा कऽ बघेसरि सेहो सत्त कऽ लेलथिन आ दीना-भद्रीकेँ मारबामे बचियांकेँ सहायता देबाक वचन दऽ देलथिन । तथापि प्रपञ्चंमे पड़ि अपन फुलडलिया सेवकक मृत्युक आयोजन पर विचार कऽ दहो-बहो नोरे कानऽ लगलीह ।

ओही राति बघेसरि दीना-भद्रीकेँ सप्पन देलथिन-'कटैया खापक जंगलमे सूगर-माकड़ मरल पड़ल अछि ।' सपना देखि दुनू भाइ कटैया खाप जयबाक हेतु तैयार भऽ गेलाह । अपन माय निरसोकेँ तत्काल नैहर पठा देलथिन । निरसोक समाद पर दीना-भद्रीक़ मामा बहुरन सेहो जूमि गेलाह । तथापि एकटा बाधा उपस्थित भऽ गेल छलैक । तीन गोटे संगमे यात्रा कोना करताह । तीन तेकट महाविकट । मुदा दीना-भद्री पर तँ बघेसरि उदमति चढ़ौने छलथिन । दुनू भाइ ई बाधा नहि मानि मामा बहुरनक संग चलि देलनि। तावत् असमय कागा डकि देलक। नढ़िया सेहो दहिनसँ बाम रस्ता काटि देलकनि । तीन कोस चलला पर रस्तामे तेलीक दर्शन भेलनि । दुनू भाइक बामा आँखि फड़कऽ लगलनि । अनेक असगुन भेला पर बहुरन यात्रा स्थगित करऽ कहलथिन, मुदा दीना-भद्री नहि मानलथिन आ जंगल दिस बढ़िते रहलाह ।

कटैया खापक जंगल भयाओन छल । कतहु एकोटा हरिण, गीदर, सूगर, माकड़ नहि देखि पड़ि रहल छलनि । बघेसरि छलना कऽ कऽ दीनाभद्रीकेँ बजौने छलथिन। मामा बहुरन एकटा मलहानक गाछ पर चढ़िकऽ देखलनि, तँ दूर पर एकटा तिनटङ्गा फटरी (हरिणक बच्चा) देखाइ पड़लनि। लग अयला पर ओ बाघ बनि गेल । दीना-भद्री तीरसँ ओकरा मारलनि मुदा सभटा तीर बेकार भऽ गेलनि । जखन सभटा तीर ओरा गेलनि तँ दुनू भाइ बाघक संग कुश्ती लड़ऽ लगलाह । दुनू भाइ बाघक रान पकड़ि दू फाँक चीरि देथिन आ दुनू कात फेकि देथिन । राजा सलहेस बचियाक संग सत्तक निर्वाहक लेल फोटरा गीदर बनि जूमल छलाह । ओ बाघक दुनू रानकेँ जोड़ि जिया देथिन आ एकटा मुइल गाइक हड्डीमे जा कऽ नुका रहथि । सात दिन सात राति धरि लड़ाइ चलैत रहल। अन्तमे पियाससँ व्याकुल भऽ दीना-भद्री बाघक द्वारा मारल गेलाह ।

मामा बहुरन दुनू भाइकेँ मुइल देखि गाछ परसँ उतरि पड़ैलाह । जंगलमे दीना-भद्रीक लाश पड़ल छल । दुनू गोटे प्रेत बनि अपन शरीरक अन्तिम संस्कारक व्यवस्थामे जुटि गेलाह । दुनू एकौंसी मुसहरी गाममे मुसहरक रूप धारण कऽ जुमलाह । मुदा मुसहर सभ हुनका लोकनिक लाश उठयबाक हेतु तैयार नहि भेलनि। हारि कऽ दीना-भद्री फकीरक रूप धारण कऽ लेलनि-

दीना-भद्री दुनू भैया एकमति केलखिन, बनि गेलखिन जोगिया फकीर।

फकीर बनल दीना-भद्री एकटा बनिआसँ कफन मङलथिन । ओ दऽ देलकनि । दुनू भाइ मिलि मृतकक संस्कार अपनेसँ कयलनि, गाम पर फकीरेक रूपमे समाद देलथिन आ श्राद्धक भोजमे पात-भात सेहो बँटलथिन। यद्यपि कालू सादाक घरमे कोनो विभव नहि छलनि । मुदा दुनू फकीरक द्वारा सौंसे सभाकेँ जयजयकार कराबऽवला भोज भेल । अद्‌भुत चरित्रक एहि लोकदेवताक सर्वत्र चर्चा-अर्चा आरम्भ भऽ गेल ।

एकौंसी मुसहरीमे दीनाभद्रीक प्रतापें मरकी उठि गेलैक । ओहि ठाम मुसहरक एक सय एकैस घर बसैत छल । सभ घरमे बच्चा आ मौगीकेँ छोड़ि सभटा मुसहर मरि गेल । कफनदान करऽवला बनिआकेँ एकसँ एकैस भऽ गेलैक । दीना-भद्रीक आतंक सर्वत्र व्याप्त भऽ गेलनि । बचिया डरे भागिकऽ कोशी पार चलि गेलि । बचियाकेँ बचयबाक हेतु कोशी दीना-भद्रीकेँ एही पार घेरि लेलक । दीनाराम कोशीकेँ सिनुरदान करबाक धमकी देलथिन । डरें कोशी शान्त भऽ गेलि । ओहि पार जाय दीना-भद्री बचियाकेँ पकड़ि कोशीमे बलि चढ़ा देलथिन ।

बचियाकेँ मारलाक बाद दीना-भद्री कनकधामिक ओतऽ पहुँचलाह । कनकधामिक राजमे उक्खरि, मूसर, सूप, चालनि आदि सभ वस्तुमे झुनकी लागल रहैत छलैक जाहिसँ सौंसे राजमे सभ ठामसँ झनाक्-झनाक् शब्द सूनि पड़ैत छलैक । एते धरि जे ओहि ठामक नारी शृंगारमे सेहो झुनकीक प्रयोग होइत छलैक । दीना-भद्री द्वारा कनकधामिक सातटा बेटीमे पाँचटा सेहो मारल गेलि। ओकर दूटा बेटी हिरिया आ जिरिया दीना-भद्रीक सहायता कयने छलैक तेँ ओकरा दुनूकेँ रुजना आ बुजना नामक दूटा मुसहर सहोदरक संग बिआह करा देल गेलैक । इहो-दुनू भाइ दीने-भद्री जकाँ स्वतंत्र जीवन जीवाक आग्रही छल आ बेगारक विरोधी छल ।

एहि तरहेँ दीना-भद्रीक गाथा लोकजीवनक एकटा विशिष्ट गाथा थिक। एहिमे लोकगाथाक अनुरूप अतिरंजना, सत्त, सप्पन, असगुन, मुइलाक बादो पराक्रम-प्रदर्शन आदि तत्त्व सभ भेटैत अछि । आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे ई गाथा एहि हेतुएँ अधिक महत्वपूर्ण कहल जा सकैत अछि जे एहिमे राजतंत्र आ बेगारक विरुद्ध क्रान्तिक सूत्र भेटैत अछि ।

लोकगाथाक अनुरूप जोड़-तोड़क प्रवृत्तिक कारणे दीना-भद्रीक मूल गाथामे अनेक क्षेपक उपकथाक समावेश होइत रहल अछि । क्षेपक सभक संख्या अपरिमित अछि । समस्त क्षेपकमे दीना-भद्रीक वीरत्वक अतिरंजनाटा उद्देश्य बुझना जाइत अछि ।

एकटा क्षेपकमे कालू वीर नामक डोम जातिक पहलमानकेँ दीना-भद्री द्वारा पराजित करबाक कथा अछि । कालू पहलमानमे एतेक बल छलैक जे सात कोठि बाँस ओ अपन कन्हा पर राखि दौड़ैत चलैत छल । मुदा इहो अद्‌भुत वीर दीना-भद्रीक संग कुश्तीमे हारि गेल । एक सय एक पाठा खेलौनिहार गुलामी जटकेँ सेहो दीना-भद्री कुश्तीमे हरा देने छलथिन।

दोसर क्षेपक हंसराज ओ वंशराज नामक मग्गहक दूटा सादाक संग दीना-भद्रीक कुश्तीक अछि । ई दुनू सादा दू-दू कट्ठाक माटि कोदारिक एक छओमे औदारि लैत छल आ टाला पर राखि बहङी टाङि चलैत छल । एक बेर मिथिलाक महाराज मग्गह पहुँचलाह । ओ हंसराज आ वंशराजकेँ अपना ओहि ठाम बजाय नरुआर गाममे एकटा पोखरि खुनबाक आदेश देलथिन । यज्ञ भेलाक बाद जखन जाठि गड़यबाक स्थिति भेलैक तँ हंसराज ओ वंशराज भारी जाठिकेँ नहि उठा सकलाह। दीना-भद्री दुनू भाइ जाठिकेँ दछिनबरिया भीड़ परसँ उठा कऽ तेना ने फेकलनि जे जाठि आबि कऽ सोझे बॉली (जाठि गाड़बाक खाधि) मे खसि पड़लैक । नरुआरक पोखरिक जाठि किञ्चित दक्षिण दिस झुकल एखनहुँ दीना-भद्रीक स्मृतिक कथा कहैत अछि । हंसराज-वंशराज जखन अपन काज समाप्त कऽ मगह घुरल जा रहल छलाह तँ गौसाघाट लग दीना-भद्रीसँ भिड़न्त भऽ गेलनि । एहि भिड़न्तमे दुनू भाइ मारल गेलाह । कहल जाइत अछि जे हंसराज ओ वंशराजक जलखइ पसेरी भरि तथा खोराकी मन भरि होइत छलनि ।

अन्य क्षेपकमे ई कहल गेल जे एक बेर एकटा अघोरी सिंहेश्वरस्थान महादेवक ओतऽ अयलाह आ सौंसे थूक-खखारसँ भरि देलथिन । अन्तमे दीना-भद्री आबि अघोरीकेँ परास्त कऽ मारि भगौलनि आ बाबा सिंहेश्वरकेँ अपवित्र होयबासँ बचौलनि ।

कहल जाइछ जे अन्तमे दीना-भद्री जगन्नाथपुरी पहुँचलाह । पंडा सभ हुनका दुनू भाइकेँ मुसहर जानि जगन्नाथजीक दर्शन नहि करऽ देलकनि । दुनू

भाइ मोक्षक हेतु जगन्नाथ-दर्शन अनिवार्य बुझलनि आ सात राति धरि भुखले-पिआसले सिंह दरवज्जा पर पड़ल रहलाह । तैओ जखन दर्शन सुलभ नहि भऽ सकलनि तँ मन्दिरक आधारमे छाती भिड़ा जोर लगौलनि । मन्दिर दड़कि गेलै । जगन्नाथजी स्वयं दर्शन देलथिन आ मन्दिरकेँ नष्ट भेने अपन नाम दुनिआसँ अलोपित होयबासँ बचौलनि । जगन्नाथक दर्शनसँ दीना-भद्रीक अपन पूर्वकृत्य सभ समक्ष आबि गेलनि। जीवनमे जतेक जीवक हत्या कयने रहथि, सब सामने देखि पड़लनि । पापक डरें भयभीत भऽ गेलाह । तथापि जगन्नाथजीक कृपासँ प्रेतयोनि समाप्त भऽ गेलनि आ भुइञा बाबाक रूपमे तिरहुत घुरलाह आ आइयो पूजित होइत छथि । एहि क्षेपक गाथामे धार्मिक स्वतंत्रताक हेतु सर्वहारा वर्गक आन्दोलन परिलक्षित होइत अछि ।

एहि तरहेँ दीना-भद्रीक लोकगाथामे आर्थिक ओ धार्मिक शोषणक विरुद्ध सर्वहाराक विद्रोहक कल्पनापरक चित्रांकन भेटैत अछि ।

सम्प्रति एहि जातीय देवताक पूजक मुसहर जाति अपन अलमस्त स्वभावसँ चीन्हल जा सकैत अछि । मेहनतिसँ नहिञो डेराइत ई जाति अढ़ौला पर अपमान-बोध करैत अछि । दीना-भद्री एहि जातिक आदर्श छथि, एकर वर्ग-संघर्षक मनोबल बढ़ौनिहार मानदण्ड छथि । तथापि एहि जातिक सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक ओ राजनीतिक स्तरमे विकास समुचित नहि कहल जा सकैछ । यद्यपि आरक्षणादि सुविधाक लाभसँ किछु संख्यामे एहि जातिक लोक सेहो जीवनक विभिन्न क्षेत्रमे प्रवेश कऽ रहल छथि, मुदा प्रगतिक परिमाण संतोषजनक नहि । तेँ एहि जातिक विकासक हेतु योजनाबद्ध रूपेँ मनोबलक जागरण ओ विकास कार्यक विभिन्न आयामक आवश्यकता छैक ।



बेनीराम

बेनीराम मिथिलाक दुइ गोट जाति क्रमश नाउ आ करोड़ीक जातीय देवताक रूपमे पूजित छथि । हिनका प्रति एहि दुनू जातिक लोकक आस्था अत्यन्त प्रबल अछि आ लोकविश्वास छैक जे बेनीरामक पूजासँ नहि केवल अन-धन-लक्ष्मीकेँ पलटाओल जा सकैछ अपितु डाइन-जोगिन आदिक करिश्मासँ त्रस्त गाय-गोरू ओ नेनाक सेहो रक्षा भऽ सकैत छैक । लोकमान्यता इहो छैक जे एहि लोकदेवताक पूजासँ बाँझिन पर्यन्तक आँचर भरि सकैत छैक ।

बेनीरामसँ सम्बन्धित अनेको लोकगीतक प्रचार भगत लोकनि आ नारी समाजमे अछि जे पुस्त दर पुस्त कण्ठान्तरित होइत आबि रहल अछि । एहि लोकदेवतासँ सम्बद्ध गीतक संकलनक प्रयास लहेरियासरायक प्रसिद्ध वकील स्व. महावीर ठाकुर द्वारा कयल जयबाक सूचना अछि मुदा स्व. ठाकुरक असमय निधनक कारणे ओ गीत सभ अद्यावधि प्रकाशमे नहि आबि सकल अछि । उदाहरणार्थ लोककंठसँ संकलित ई गीत द्रष्टव्य अछि—

उठू उठू कोइली हे चिड़ैयाँ भेलै भिनसार
रूसल जाइ छै बेनीराम दुलरा, दिऔ ने मनाय
तखनी से कहितय रे सेवक दितियौ रे मनाय
रन्था भेल उताहुल रे सेवक जेबै बड़ी दूर
पीबि लेहो आहो दुलरुआ सोहरी गाय के दूध
चाभि लेहो आहो दुलरुआ पाकल बीड़ा पान
नहि पीबौ आरे सेवका सोहरी गायके दूध
नहि चभबै आरे सेवका पाकल बीड़ा पान
छवही महीना हो बेनीराम कयलिअह धेयान
अपना सेवकके दुलरुआ देहो ने आशीष
छवही महीना रे सेवका सेवलें जरूर
ऊँच तोरा करबौ रे सेवक जाय दे बड़ी दूर

दरभंगा व्यवहार न्यायालयक अधिवक्ता श्री अशोक कुमार ठाकुर बेनीराम चालीसाक निर्माण कयने छथि जे प्रकाशित अछि । एहि चालिसामे श्रीठाकुरक भक्त हृदयक उद्‌गार भेटैत अछि । तदनुसार बेनीराम नाउ कुलमे जनम लेने छलाह । ई नेनपनहिसँ अत्यन्त वीर प्रकृतिक छलाह । तत्कालीन शस्त्रास्त्र तीन-धनुष चलयबामे ई निष्णात छलाह आ ताहिसँ चिड़ैं-चुनमुनी ओ जीवा-जन्तुक शिकार कयल करथि। जखन ई पैघ भेलाह तँ पओलनि जे भारतीय भूभागमे नेपाल तराइ दिससँ किछु आततायीक समूह आबि आक्रमण कऽ देल करैत अछि आ नहि केवल अन्न-वस्त्रादि ओ संचित निधिटाक लूटपाट करैत अछि अपितु ओ लोकनि एहि ठामक नारीक इज्जतिक संग सेहो खेलवाड़ करैत अछि । बेनीरामकेँ जनसमुदायक ई दुर्दशा बर्दाश्त नहि भेलनि। ओ आततायी सभक संहार करबाक बीड़ा उठौलनि आ सैन्य संगठनमे लागि गेलाह । हिनक दुइ गोट सेनापति छलथिन-केतका करोड़ी आ रामा नामक ब्राह्मण । एहि दुनूकेँ संग लऽ ई अपन विशाल वाहिनीक संग धनौजाक मैदानमे युद्ध कयलनि तथा मिथिलामे शान्ति ओ सुव्यवस्था स्थापित कयलनि। हिनक वीरता ओ लोककल्याणक भावनाक कारणे परवर्तीकालमे हिनक पूजाक परम्परा बनल आ कतोक ठाम हिनक गहबर, मन्दिर आदिक सेहो निर्माण भेल । संभवतः ई मिथिलाक इतिहासक अंधकार युगक कोनो वीर पुरुष होथि, से एहि लोकश्रुतिसँ विज्ञात होइत अछि । भऽ सकैछ जे बादमे मिथकीय देवताक रूपमे ई मान्य भऽ गेल होथि ।

एहि लोकदेवताक वार्षिक पूजा चैत सुदी पड़िवा दिन होइत छनि । हिनक मूर्त्तिक संकल्पना विष्णुक चतुर्भुज स्वरूपक छनि जनिक एक हाथमे ध्वज, दोसरमे मशाल, तेसरमे तीरधनुष विराजमान रहैत छनि । चारिम हाथ आशीर्वादी मुद्रामे रहैत छनि । हिनक कानमे कुण्डल, हाथमे बाला ओ माथ पर मुकुट रहैत छनि । ई पीत वस्त्र धारण करैत छथि आ जनऊ पहिरने रहैत छथि । बाघ हिनक सवारी छनि । प्रसादक रूपमे हिनका गाँजा, पान, सिरनी, केरा आदि चढ़ाओल जाइत छनि । कतहु-कतहु हिनक सेनापति केतका करोड़ीकेँ बलि सेहो प्रदान कयल जाइत छैक। हिनक पूजाक अवसर पर छकबाह एके साँसमे पर्याप्त दूध पीबैत देखल जाइत अछि। जनरिया लोकनिकेँ अगबे दूधमे बनाओल तसमइ भोजन कराओल जाइत छनि। भगत आ डलवाह

हिनक पूजाक मुख्य आकर्षण होइत छथि । भगत अपन देह पर एहि देवताक आवाहन करैत छथि आ आवाहन भेलाक बाद कारणी सभकेँ फूल-अक्षत प्रदान कऽ ओकर मनोभिलाषा पूर्ण होयबाक वचन दैत छथि । डलवाह हाथमे फूल-अक्षतक डाली रखने भगतक अनुगमन करैत रहैत छथि । मनरियाक समूह मृदंगक संग भगतक चारू कात नचैत, गीत गबैत रहैत छथि ।

बेनीरामक पूजा आरम्भ करबाकाल किंवा लोकगाथाक गायन करबासँ पूर्व जे सुमिरन गीत गाओल जाइत अछि तकर स्वरूप एहि प्रकारक अछि–

सुमिरन सुमिरन सुमिरन करै छी
सुमिरन करै छी हे पञ्चन निरंजन भगवान के हो
प्रथम सुमिरन गे मैया माता सरोसत्ती के
रहिहऽ माता कण्ठ असवार हे
सुतले अधरबा मैया कण्ठ मोर बसिहऽ हे
दिहऽ माता वेद के बखान हे
दोसरे सुमिरन गे मैया पिता के चरणियाँ हे
जिनका बून से लेलहुँ हम जनम हे
आरो हम सुमिरी हो पंचन माता के चरणियाँ हे
जिनका ओद्र लेल अवतार हे
आरो हम सुमिरी ई मैया चम्पा बेटी दगरिन हे
जे कयलनि सोइरी प्रतिपाल हे
आरो हम सुमिरी हो भगवान बुढ़िया बकरिया हे।
जिनकर दूध सोइरीमे आधार हे
आरो हम सुमिरी गे मैया गुरु के चरणियाँ हे
जिनकर गुण गाबय संसार हे
आरो हम सुमिरी हो पंचन माता भगवती हे
रहु मैया सेवक पर सवार हे
आरो हम सुमिरी गे मैया गुरु गोरखनाथ हे
जिनकर गुणमा गाबय संसार हे
ओझा-गुणी बन्हलौं गे मैया, डाइन घर बन्हलौं हे
दैवा मोर मूसक असवार हे
आरो हम बन्हलियै गे मैया तेली घर मसान हे
जिनकर तेल जरय संसार हे

बेनीरामसँ सम्बन्धित जाहि लोकगाथाक गायन लोकजगतमे होइत अछि तकर स्वरूप ग्राम-धनहर प्रखण्ड-वारिसनगर (समस्तीपुर) निवासी वेदो ठाकुरसँ प्राप्त भेल अछि जकर आधार पर हुनकासँ सम्बन्धित कथाक स्वरूप ई थिक–

राज परौलीमे लेखा ठाकुर नामक एक गोट नाउ रहै छला । ओ अत्यन्त धर्मात्मा प्रकृतिक छला । नित उठि दिनकर-दीनानाथकेँ अर्घ देथि आ छप्पनो कोटि देवताक पूजा करथि । तकर बादे ई अन्न-जल ग्रहण करथि । हिनक भक्तिक प्रसार सौंसे सुरपुर-नरपुरमे होइत गेल।

एक बेर लेखा ठाकुरक मोनमे ई अभिलाषा जगलनि जे ओ गुरुमुख भऽ जाथि, कारण जे लोक गुरुमुख नहि होइत छथि हुनका मोक्ष नहि भेटैत छनि आ बेर-बेर मृत्युभवनमे आबऽ पड़ैत छनि । एहन लोक जन्म-मरणक चक्करमे पड़ल कष्ट कटैत रहैत छथि । लेखा ठाकुर इन्दर कविलास कऽ यात्रा कऽ देलनि ।

घड़िएक चलल हो लेखा ठाकुर
पहर पयरा बितलै हो
चलि देलऽ इन्दर कविलास हो ।

इन्दर कविलासमे लेखा ठाकुर विश्वकर्माजीसँ भेट कयलनि आ हुनका अपन गुरु बनबाक कृपा करऽ कहलथिन । मुदा विश्वकर्माजीकेँ बूझल छलनि जे लेखा ठाकुर स्वयं भगवानक अंश छथि, महान धर्मात्मा छथि तेँ ओ हुनका अपन शिष्य बनायब उचित नहि बुझलनि । तथापि लेखा ठाकुरक हठ पर ओ हुनका अपन शिष्यमंडलीमे शामिल कऽ लेलथिन आ अपन भंडार घरक रखबार नियुक्त कऽ लेलथिन । लेखा ठाकुर पूजा-पाठ ओ गुरुभक्तिमे समय बितबऽ लगला ।

एक समय इन्द्रासनमे विष्णु यज्ञक आयोजन भेल । ओहि यज्ञमे समिधा जुटयबाक हेतु एक गोट नाउक आवश्यकता छल । देवता लोकनि लेखा ठाकुरकेँ नाउ होयबाक कारणे ओहि यज्ञमे नियुक्त करऽ चाहै छला, मुदा सूर्यदेव लेखा ठाकुरक अविवाहित होयबाक कारणे आपत्ति कऽ देलथिन । अविवाहित नाउक जुटाओल समिधासँ यज्ञक सफलता बाधित होइत, तेँ ई निश्चय भेल जे लेखा ठाकुरक विवाहक व्यवस्था कराओल जाय । एकर भार सूर्यदेवहिकेँ देल गेलनि ।

ताहि समय मयना-महपुरामे हेमनचन नामक एकटा करोड़ी छल । एहि करोड़ीकेँ एकटा बेटी छलै । ओकर नाम गोधन छलै । ओ बड़ सतवरती छलि। नित्य ओ निरंजन भगवानक पूजा करथि आ तितले अँचरे सूर्यकेँ अर्घ देथि, विधिपूर्वक महादेवक पूजा करथि । हिनक भक्ति देखि हेमनचन राउत हिनका लेल एकटा अलगे शिव मन्दिर बनबा देने छलथिन आ मन्दिरक चारू कात कपड़कोट लगा देने छलथिन जाहिसँ पूजा काल केओ हुनक अङ्ग पर दृष्टि नहि दऽ सकनि। अङनहिमे कुइञा खुनाओल छल जाहि पर गोधन स्नानादि करै छली । करोड़ीक घुमक्कड़ वृत्तिक कारणे हेमनचनकेँ बेसी काल घरसँ दूरहि रहऽ पड़ैत छलनि। तेँ ओ अपन बेटीक सतीत्वक रक्षाक हेतु सदति चिन्तित रहथि । अपन बेटीकेँ ओ नित्य धर्मक पलड़ा पर जाच करथि आ हुनक ओजन मात्र एक अड़हुलक फूलक बरोबरि पाबि आश्वस्त भेल करथि।

समय बीतैत गेल । गोधन सती युवावस्थाकेँ प्राप्त कऽ गेल छली । माता-पिताकेँ अपन बिआहक प्रति सकांक्ष नहि देखि एक दिन गोधन सती शिवसँ प्रार्थना कयलनि–'हे देवाधिदेव महादेव ! अहाँक भक्ति करैत-करैत युग बीति गेल। की एहि सतयुगमे हमरा लेल सामीक अवतारे नहि भेल अछि ।' गोधन सतीक प्रार्थना सुनि महादेव प्रकट भऽ हुनका अपन योग्य स्वामी मङबाक आज्ञा देलथिन। सती गोधन हुनका कहलथिन–'हमरा जेहन-तेहन वर नहि चाही । हमरा तँ चाही भक्त आ सतबरता वर, आ से एखनुका युगमे लेखा ठाकुरेटा भऽ सकैत छथि । ओ इन्द्रक दरबारमे विश्वकर्माक रखबार छथि । हुनकेसँ हमर बिआह कराओल जाय।' गोधन सतीक वचन सूनि शिव लगले जोगीक रूप धारण कऽ विश्वकर्मा लग जा जुमला । विश्वकर्मा जोगी शिवकेँ चीन्हि डेरा गेलाह । ओ मनमे विचारलनि जे हमरासँ कोन एहन घटी-कुघटी भऽ गेल जे शिवकेँ कैलाशवास छोड़ि हमरा लग आबऽ पड़लनि। ओ शिवक अयबाक कारण पुछलथिन । मुदा शिव सत्त करौने बिना किछु कहबाक हेतु तैयार नहि भेलथिन । एक सत्त दोसर सत्त तेसर सत्त जे नहि करे अस्सी कुण्ड नरकमे पड़े ।

सत्त भेलाक बाद शिव गोधन सतीक संग विवाह करयबाक हेतु विश्वकर्मासँ हुनक शिष्य लेखा ठाकुरक माङ कऽ बैसलथिन । लेखा ठाकुर

अपन गुरुक चरण छोड़ि सांसारिक मायामे लेपटाय नहि चाहैत छलाह । मुदा गुरु वचनबद्ध भऽ गेल छलथिन । तेँ गुरुक आज्ञा पाबि ओ शिवक संग जयबाक हेतु बाध्य भऽ गेलाह। शिव हुनका लऽ कऽ कैलाश दिसि चलि देलनि ।

रस्तामे शिव लेखा ठाकुरकेँ कहलथिन–हमर भक्तिन गोधन सती विवाहक हेतु अहीँकेँ टेबने छथि । जँ अहाँ हुनका संग विवाह नहि करबनि तँ ओ प्राण हति लेतीह आ अहाँकेँ तिरिया वधक पाप लागत । तिरिया वधक पाप सात गोहत्याक पापक बरोबरि होइत छैक । तेँ नीक जे अहाँ हुनका संग विवाह कऽ ली । लेखा ठाकुर हुनक बात मानि लैत छथिन आ अपन धर्मक छूरा आ चमौटी तथा अयनाकेँ जुगता कऽ राखि लैत छथि ।

ओम्हर गोधन सती शिवक मन्दिर पर निशि भाग रातिमे ठोहि पाड़ि कऽ कानि रहल छलीह । हुनक कानब सुनि सुरपुर–नरपुर आ इन्दर कविलास पर्यन्त डोलऽ लागल । संसारक सभटा जीवा–जन्तु करुणा करऽ लागल । ताही समय शिव लेखा ठाकुरकेँ लऽ कऽ गोधन सती लग पहुँचलाह आ हुनका कहलथिन–'हे सती, अहाँ जनिका लय रोदना पसारने छी, तनिका हम लऽ अनलहुँ । आब अहाँ दुनू गोटे बिआह कऽ लिअऽ जाहिसँ अहाँक मनोरथ पूर्ण हो ।'

गोधन सती लेखा ठाकुरकेँ किछु काल धरि देखिते रहि गेलीह । पछाति ओ हुनक सत्तक परीक्षा लेबाक हेतु हुनका पर कतेको जादू चलौलनि । मुदा लेखा ठाकुर पर कोनो असरि नहि पड़लनि । एम्हर लेखा ठाकुर एहि असमञ्जस छलाह जे हम नाउ कुलक सन्तान छी, एहि करोड़ी कुलक कन्यासँ विआह करी तँ कोना करी । ताही घड़ी सती समधानि कऽ एकटा जादू चला देलथिन जाहिसँ लेखा ठाकुर विचलित भऽ गेलाह । हुनका छूरा गोधन सतीक माङ पर खसि पड़लनि आ माङक बीचो–बीच सोनितक धार बहऽ लगलनि जेना सेनूर कयल गेल हो आ एही तरहेँ गोधन सतीक सिन्दूरदान सम्पन्न भऽ विवाह भऽ गेलनि ।

विवाहकं बाद लेखा ठाकुर गोधन सतीकेँ अपन घर राज परौली लऽ जाइत छथिन । ओहि ठाम जुमला पर गोधन सती देखैत छथि जे हुनक सासुरमे दूरा पर चननक गाछ छनि, ओहि गाछ पर मयूर आ कोइली सबद करैत रहैत

छनि । हुनक सासु आन्हर छथिन आ दूरा पर बैसि कऽ हुक्का पिबैत समय बितबैत छथिन । क्रमशः सासु आ पतिक सेवा करैत गोधनक समय बितैत चल जाइत छनि । समय पाबि गोधन गर्भवती भऽ जाइत छथि ।

किछु समयक उपरान्त लेखा ठाकुर राज मोरंग कऽ विदा होइत छथि। हुनका जसिया–बसिया नामक दुइ गोट धामि (जादूगरनी) बजओने छलथिन। दुनू लेखाठाकुर पर जोर आजमाइस कऽ हुनका अपन वशमे करऽ चाहैत छली। लेखा ठाकुर सात दिन सात रात धरि लगातार चलैत रहलाक बाद मोरंग राज जा जूमैत छथि । हुनका आयल बूझि जसिया–बसिया सोलहो शृङ्गार कऽ, बत्तीसो अभरन पहीरि, चीर–चोली झमकाबैत लेखा ठाकुर लग पहुँचैत छथि। लेखा ठाकुर आ जसिया–बसियाक बीच जादूक युद्ध चलैत अछि । जसिया–बसियाक जादूकेँ लेखा ठाकुर नष्ट करैत रहैत छथि । जसिया–बसिया अगिनवाण चला दैत अछि । लेखा ठाकुर गुरुक सुमिरन कऽ ओहि अगिनवाणकेँ नष्ट कऽ दैत छथि । एहि क्रममे एक बेर ओ गुरुक आराधना करब बिसरि जाइत छथि । सावधान जसिया–बसिया एही बीच हुनका पर सिकिया वाण चला दैत छथि । लेखा ठाकुर विचलित भऽ जाइत छथि । जादूक प्रभावसँ ओ सुग्गामे बदलि जाइत छथि । जसिया–बसिया हुनका चट पिजड़ामे बन्न कऽ लैत अछि आ सात धरती तरमे ओहि पिजड़ाकेँ गाड़ि ओहि पर अस्सी मनक पाथर धऽ दैत अछि । ऊपरसँ ओ हरौती बीट–बाँस रोपि दैत अछि। लेखा ठाकुर जसिया–बसियाक बनिसारमे पड़ि जाइत छथि ।

एम्हर गोधन सतीक गर्भ जखन देखार भऽ जाइत छनि, तखन पतिक परोक्ष रहबाक कारणे लोक हुनक गर्भकेँ शक–सुबहाक दृष्टिञे देखऽ लगैत छनि । गाम–घरक लोक तँ सहजहिँ, एतऽ धरि जे हुनक सासुओ–ननदि हुनका पर आङुर उठाबऽ लगैत छथिन आ ताना मारैत रहैत छथिन । गोधन एहि दुःखक समयकेँ बड़ धैर्यपूर्वक कटैत रहैत छथि ।

नवम मास पूर भेलाक बाद गोधन सतीक गर्भसँ एकटा बालकक जन्म होइत छैक । ओ नेना अद्‌भुत प्रकृतिक रहैत छैक आ सोइरीए घरमे मायसँ जबाब–सवाल करऽ लगैत छैक । ओ गोधन सतीसँ अपन पिताक हालचाल पूछऽ चाहैत अछि मुदा जखन गोधन सती लेखा ठाकुरक मादे किछु नहि जना

पबैत छथिन तँ ओ माइक कोरसँ उछटि जाइत अछि, दूध पीब बन्न कऽ दैत अछि आ कहि उठैत अछि–

गोदिओ ने खेलबौ गे मैया
दूधो नहि पीबौ
जल्दी बता दे पिता के उदेस

गोधन एहि अद्‌भुत बालकक किरदानीसँ आतंकित भऽ उठैत छथि। हुनका होइत छनि जे ई नेना कोनो भूत-दूत थिक की राक्षस-पिशाच, जे जनमिते पिताक उदेस जानऽ चाहैत अछि। एखन ई नेना अछि। एकर पिता जादूगरनीक जंजालमे पड़ल छथिन। जँ एकरा कहि देबै तँ इहो ने कदाचित् ओहि जंजालमे पड़ि जाय। ताहि ममतासँ ओ किछु ने कहैत छथिन।

सती गोधन नेनाक भाग-सोहाग जनबाक लेल अपन पुरोहित कारे पंडितकेँ बजयबाक हेतु झिमना खबासकेँ पठबैत छथि। कारे पंडित लेखा ठाकुरक ओहि ठाम पुत्र जन्मक खबरि सुनैत देरी पुरना-नवका पतरा लऽ कऽ लगले अपन यजमानक ओतऽ जा जूमैत छथि। हुनका एहि शुभ अवसर पर बेस दान-प्रदान भेटबाक आशा छलनि। ओ पोथी-पतरा उचारि गोधन सतीकेँ कहैत छथिन जे अहाँक बालक साधारण बालक नहि छथि। ई तँ अवतार थिकाह। हिनक नाम बेनीराम राखल जाय। ई वीर होयताह। ई सौंसे संसारक लोकक भलाइमे लागल रहताह। दुष्ट सभकेँ ई नाश कऽ देताह। हिनकासँ डेरयबाक कोनो गप्प नहि। देवताक अंश होयबाक कारणे सोइरीए घरसँ बाजब शुरू कऽ देलनि अछि। गोधन सती नेनाक भोग-लक्षण नीक जानि प्रसन्न भेलीह। ओ सवा हाथ धरती नीपि, करिया कम्बल ओछा ओहि पर पंडितजीकेँ बैसौलनि आ बेनीरामकेँ निहुँछि कऽ बेस दान-प्रदान कयलनि। पंडितजी प्रसन्न होइत घर घुरलाह।

एम्हर बाबा बेनीराम जखन अपन पिताक सम्बन्धमे नित्य खोध-बेध करऽ लगलथिन तँ गोधन सती सोचलनि जे नगरक आइ-माइ सभ हमर बेटा पर उदमति चंढ़ा देलक अछि। बेनीराम मायकेँ आश्वस्त करैत कहलंथिन–'हे माय, हम एक जन्म अहाँक पुत्र भऽ कऽ जन्म लेलहुँ तँ अहाँ हमरा अपन पुत्रटा बुझैत छी। मुदा अहाँकेँ ई नहि बूझल अछि जे हम के छी–

मिथिलामे जन्म लेलियै
अयोध्यामे ठाढ़ भेलियै
कंस मारि केलियै खरिहान
काली दहमे नाग नथलियै
नाम पड़ल कृष्ण भगवान
यमुना तट घटवारी केलियै
नाम पड़लै श्रीनन्दलाल
बाल गोआलिनके दही छीनि खेलियै
लोक कहय नटवर गोपाल

बेनीरामक ई परिचय पाबि सती गोधन अपन पुत्रक अंशावतारक बात बूझि सकदम्म रहि गेलीह। आब हुनका ई जनाबऽमे कोनो भाङठ नहि रहलनि जे बेनीरामक पिता राज मोरंगमे जसिया-बसियाक बनिसारमे पड़ल छथिन।

पिताक बनिसारक बात सुनैत देरी बेनीरामक तरबाक लहरि मगज पर चढ़ि जाइत छनि। ओ मोरंग जयबाक हेतु ठानि लैत छथि। मोरंगमे संग चलबाक हेतु ओ अपन संगी कारे पंडितक पुत्र झटहा पंडितकेँ बजा अनैत छथि। दुनू मित्र प्रस्थानक तैयारी करैत छथि।

दुनू मित्रकेँ यात्राक सवारीक हेतु घोड़ा आवश्यक बुझना जाइत छनि। बेनीरामक घोड़ाक नाम छल हंसराज। हंसराज बेनीरामक अवतारसँ पूर्वहिसँ मर्त्यलोकमे पड़ल अपन असवारक बाट ताकि रहल छल। बारह वर्ष बीति चुकल छलैक मुदा ओकर असवार आयले नहि छलैक। परिणाम ई भेल छलैक जे ओ असक्क भऽ गेल छल। ओकर चारू नालक भीतर पीलू फड़ि गेल छलैक। माता गोधन सती हंसराजक चुमान चँगेरीमे हड़दि, दूभि, अरबा चाउर आदि साँठि कऽ करबाक हेतु तत्पर भेलीह। ताहिसँ पूर्व ओ हंसराजक चारू नालक पीलू सभकेँ कुसक डेफसँ झाड़ि देलथिन आ सुतनीक झाँझसँ ओकर सौंसे देह रगड़ि ओकरा सरयू नदीमे स्नान करा देलथिन। घोड़ा रन-रन करऽ लागल। बेनीराम आ झटहा पंडित ओहिपर सवार भऽ मोरंग राज कऽ चलि देलनि। माय गोधन हुनक अभियानक सफलताक कामना करैत

आशीर्वाद देलथिन–**मारने ने मरबय रे बेनीराम, काटने ने कटबय रे, बजर हेतउ तोहर गात रे ।**

जखन हंसराज घोड़ा पर असवार चढ़ि गेल, तखन तँ जेना घोड़ाकेँ पाँखि लागि गेल होइक–**तर छोड़य धरती, ऊपर आसमान, बीचे-बीचे घोड़ा करैये पयान**। से घड़िएक चलल हो बेनीराम पहर पयरा बितलऽ हो, जूमि गेल मोरंग राज हो।

मोरंग राजक सिमान पर उतरि बेनीराम एकटा मोटगर चनन बिरीछमे घोड़ाकेँ बान्हि देलनि । दुनू मित्र ओतहि विश्रामक जोगाड़ करऽ लगलाह । झटहा पंडितकेँ ओहि जङलाह क्षेत्रमे बाघ-साँपक डर भेलैक, तेँ ओ एकटा गाछ पर चढ़ि गेल आ बेनीराम नीचेमे धूनी रमा कऽ निरञ्जन भगवानक भजनमे लागि गेलाह ।

ओहि जंगलमे जसिया-बसियाक पोसल सात सय बाघिन पहरा दैत छल । ओ सभ जखन बेनीराम आ झटहा पंडितकेँ देखलक तँ अति प्रसन्न भेल । ओकरा सभकेँ ई बूझि पड़लैक जे बारह वर्षसँ एहि जंगलमे रहलाक बादो कहियो कोनो शिकार नहि भेटल मुदा आइ दू-दूटा शिकार अभरल अछि। ओ सभ खूब प्रसन्न भेल आ बेनीरामक आसन दिस चलि पड़ल । बाघ सभकेँ देखि बेनीराम छगुन्तामे पड़ि गेलाह । मुदा छलाह तँ बलवान । बेरा-बेरी सभटा बाघकेँ पकड़ने जाथि आ कुशक डेफसँ ओकरा सभकेँ नथने जाथि । सातो सय बाघक नथा गेलासँ ओहि जंगलक सभटा बाघिन अपनाकेँ राँड़-मसोमात बूझऽ लागल । बेनीरामक वीरता देखि एकटा लुल्ही बाघिन आ एकटा कनाह बाघ पड़ाकऽ जसिया-बसिया लग पहुँचल आ सभटा बाघक मारल जयबाक वृत्तान्त कहलकैक ।

जसिया-बसिया चौदह सय जादूक पुड़िया जूड़ामे बान्हि, चौदह सय खोइंछामे लटकाय, किछु पिपनी पर तँ किछु सितुहा सन-सन दाँतमे राखि बेनीरामक बासा पर चलि दैत अछि आ बेनीराम पर जादूक वर्षा करऽ लगैत अछि । मुदा बेनीराम पर ओकरा सभक जादूक कोनो असरि नहि होइत छनि। तथापि जसिया-बसियाक आजमाइस चलिते रहैत छैक । एक बेर बेनीराम विचलित भऽ जाइत छथि । जसिया-बसिया अपन जादूक बलें हुनका पाथरक मूरुतमे बदलि दैत छनि । सौंसे दुनिआमे हाहाकार मचि जाइत अछि ।

बेनीरामक पाथर बनि गेने तथा लेखा ठाकुरक बनिसार पड़ि गेने गोधन सती पर जेना विपत्तिक पहाड़ टूटि पड़ैत छनि । ओ करुणा करैत जीवन-यापन करऽ लगैत छथि । माइक करुणासँ द्रवीभूत बेनीराम पाथरक रूप त्यागि जसिया-बसिया पर आक्रमण करैत छथि आ हुनका हाथें दुनू जादूगरनी बहिनिक हत्या भऽ जाइत छैक !

तकर बाद बेनीराम हड़ौती बीट बाँस उखारि, धरती कोड़ि, धरतीक तरसँ सुग्गा बनल अपन पिताकेँ बनिसारसँ छोड़बैत छथि । पिता-पुत्रक मिलन होइत अछि आ दुनू परौली राज कऽ विदा होइत छथि ।

परौली राज घुरलाक बाद दुनू पिता-पुत्र यजमनिका कमाय लगलाह । एहिसँ जे अन्न-द्रव्यादि भेटैत छलनि, ताहिसँ परिवारक गुजर चलऽ लगलनि।

एक बेर जितनी नामक एक गोट धनिकाइन तेलिन अपन पोंताक जगमूड़न ठनलनि । कतोक देवे-सेवे प्राप्त भेल ओहि पोंताक जगमूड़नक अवसर पर दीनानाथक पूजाक आयोजन छलैक । मुदा कोनो भगतीया दीनानाथकेँ अर्घ देबामे आ छाँकी लगयबामे समर्थ नहि भऽ सकल । एतऽ धरि जे पूजा ढारबाक हेतु ओहि समयक नामी-गिरामी भगत लोकनि बजाओल गेल छलाह यथा–कारिख महाराज, भुइयाँ महाराज, गणीनाथ-गोविन्द आदि । एहि भगता सभ पर मोहरी नामक एक गोट चमैनि अपन तन्त्रक प्रयोग कऽ दैत छलीह आ ई सभ बेहोश भऽ जाइत छलाह। चमैनि हिनका सभकेँ बनिसार दऽ दैत छल । एहि तरहें ओ ओहि समयक हजारो भगतकेँ अपन बनिसारमे बन्द कयने छल । अन्ततः केश मुड़बामे बाधा देखि बेनीराम मोहरी पर अपन जादू चला ओकर सभटा जादू नष्ट कऽ देलनि आ सभटा भगतकेँ ओकर बनिसारसँ आजाद करा देलथिन । हिनक जय-जयकार होमऽ लागल। जितनीक पोंताक जगमूड़न भेलैक, बेनीराम अपनेसँ दीनानाथकेँ अर्घ देलनि आ छाँकी ढारलनि । सौंसे संसारमे हिनक नाम-यश पसरि गेलनि । जितनी प्रसन्न भऽ हिनका पैघ जमीन्दारी प्रदान कयलकनि ।

तकर बादसँ बेनीराम प्रसिद्ध भगतक रूपमे जतऽ-ततऽ दीनानाथक पूजामे बजाओल जाथि ।

एक समय धानासिंह आ मानासिंह नामक राजा राज परौली पर चढ़ाइ कऽ देलक आ हजारो गाय-गोरूकेँ कटबा देलक । गोहत्याक एहि कृत्यसँ हाहाकार मचि गेल । बेनीरामकेँ जानकारी भेटलनि । ओ मन्त्र पढ़ि सभटा गाय-गोरू पर गंगाजल छीटि देलनि । सभ पहिने जकाँ जीवित भऽ उठल । तहियासँ गाय-गोरूक अस्वस्थ भेला पर बेनीरामकेँ गाय-गोहारिक हेतु सेहो बजाओल जाय लगलनि आ ओ गाय-गोरूक कष्टहरण करऽ लगलाह ।

एहिना एक बेर बेनीरामकेँ बाट पर एकटा अबला पर नजरि पड़लनि। ओ हबोढकार भऽ कानि रहल छलीह । कारण पूछला पर ओ जनौलथिन जे हुनक गौनाक बारह वर्ष भऽ गेल छलनि मुदा एकोटा सखा-पात नहि भेल छलनि । तेँ सासु हुनका मारैत छलथिन आ ननदि ठुनकाबैत रहैत छलथिन । बेनीराम हुनक दुर्दशा पर पसीझि हुनको पर कृपा कयलथिन । बेनीरामक कृपासँ ओहि अबलाक आञ्चर फूजि गेलैक । तहियासँ ओकर वंशज बेनीरामकेँ पूजा देबऽ लगलैक ।

एहिना एक बेर बेनीरामकेँ एकटा एहन स्त्रीसँ भेट भेलनि जकर बच्चा मरि गेल छलैक । बेनीरामक उपचारसँ बच्चा राम-राम कऽ उठि गेलैक ।

एहि तरहेँ बालक-गोहारि, तिरिया-गोहारि, गाय-गोहारिक माध्यमे जनसामान्यक कल्याणमे लागल बेनीरामक जीवन बीतैत गेलनि ।

एक बेर राज परौलीक राजा अपन बेटीक विआहक बाद पुतोहुक गौना करबऽ चाहैत छलाह । गौनासँ पूर्व दिन मनयबाक पत्र लऽ बेनीरामकेँ समधि केँ दऽ अयबाक हेतु पठौलथिन । बेनीराम जंगल दऽ कऽ जा रहल छलाह । जसिया-बसियाक पोसल लुल्ही बाघिन आ कनहा बाघकेँ मौका हाथ लागि गेलैक । ओ हिनका तोड़ि देलक ।

बेनीरामक लहास जंगलमे पड़ल छल । एकटा करोड़ी जंगलमे घुमैत-घुमैत हिनका लहासकेँ देखलक । ओहि समयमे कनौजिया नाउ सभक एकटा बरियाती जा रहल छलैक । करोड़ी ओहि बरियाती सभकेँ बेनीरामक लहासकेँ गति प्रदान करबाक हेतु कहलकैक । मुदा कोनो नाउ एहि हेतु तत्पर नहि भेल। तखन ओ करोड़ी बेनीरामक घर पर समाद देलकैक । समाद सुनि गोधन सती करुणा करऽ लगलीह । अवधिया नाउ सभ जाय बेनीरामक संस्कार कयलक।

लोकश्रुति अछि जे संस्कारक बाद जे भोज आयोजित भेलैक ताहिमे बेनीरामकेँ सदेह उपस्थित भऽ पात-पात परसैत देखल गेलनि आ तहियेसँ ओ नाउ आ करोड़ी जातिमे देवताक रूपमे पूजित छथि । हुनक पूजासँ लोककेँ कल्याण होइत रहलैक अछि, एहन विश्वास छैक ।

एहि तरहेँ बेनीरामक कथामे लोकतत्त्वक संगहि अनेक ऐतिहासिक ओ सांस्कृतिक पक्षक निदर्शन भेटैत अछि । एहि गाथामे मिथिलाक सांस्कृतिक पक्षक गुरुमुख होयबाक अनिवार्यता, यज्ञादिमे नाउ जातिक अनिवार्यता, पुत्र जन्मक अवसर पर पसारी वर्गक उपयोगिता, लोकदेवतामे पौराणिक देवी-देवताक आरोप आदि अनेक तथ्यक उल्लेख भेटैत अछि । ऐतिहासिक दृष्टिजे ई लोकगाथा बौद्धोत्तरकालीन मिथिलाक गाथा बुझना जाइछ जाहिमे लोकजीवन जादू-टोना आदिसँ ग्रस्त छल, आडम्बर ओ अंधविश्वास लोकजीवनक अंग बनि गेल छलैक । तथापि एकर लोकपक्ष अत्यन्त सबल छैक आ बेनीराम मिथिलाक प्रमुख जातीय लोकदेवता रूपमे समादृत छथि ।

◆

गहबर गीत

मैथिली लोकवृत्तक सर्वाधिक प्रशस्त ओ समृद्ध विधा थिक लोकगीत। एहि विधामे मिथिलाक सांस्कृतिक चेतनाक सुस्पष्ट ओ सजीव चित्रांकन देखि पड़ैत अछि । संगहि ई सभ मिथिलाक सामाजिक ओ सांस्कृतिक जीवनक अभिन्न अंग बनल एकर लोकसंस्कृतिक संचालनमे प्रमुख भूमिकाक निर्वाह करैत रहल अछि । चौमासा, छमासा, बारहमासा, वसन्त, फागु, चैतावर, जोगीड़ा, कजरी, मलार, रास, ग्वालरी, विरहा, पराती, साँझ, झुम्मरि आदि सामयिक लोकगीत; कमरथुआ ओ जगरनथियाक यात्रागीत; विविध प्रकारक शिशु गीत, लोकक्रीड़ा गीत, श्रमापनोदनसँ सम्बद्ध रोपनी आ लगनीक गीत; नदीमातृक मिथिलाक कोशी, कमला, जीवछ, गंगासँ सम्बद्ध नदी गीत; गोसाउनि, गौरी, ज्वालामुखी, शीतला, धर्मराज, हनुमान, ब्राह्मण, भैरव आदिसँ सम्बद्ध भक्तिपरक गीत तथा नचारी-महेशवाणी आदि गीत मिथिलाक लोकरंजन करैत आयल अछि । अदौसँ नारीकंठ जाहि गीत सभकेँ संजोगने आबि रहल छथि से थिक संस्कारपरक गीत जाहिमे सोहर-खेलौना जन्मोत्सवक गीत प्रकार सभ थिक । एहिना मूड़न, उपनयन ओ विआहक अवसर पर सेहो गीत सभ गाओल जाइत अछि जाहिमे वैवाहिक गीतकेँ भास ओ विषयक आधार पर विभिन्न उपवर्ग यथा पसाहनि, नहछू, परिछन, सिनुरदान, कोबर, महुअक, डहकन, उदासी, समदाओन आदिमे विभाजित कयल गेल अछि । कतोक सम्प्रदायमे मृत्युपरान्त मरौटी किंवा निर्गुण गीत गयबाक परम्परा सेहो देखि पड़ैत अछि । एतावता मैथिली लोकवृत्तक ई विधा बहुआयामी रहल अछि ।

लोकवृत्तक एहि विधाकेँ छिजबा ओ नष्ट होयबासँ बचयबाक उद्देश्यें किंवा संरक्षित कऽ लेबाक उद्देश्यें बहुतोक विद्वानलोकनि मैथिली लोकगीतक संकलन सभ प्रकाशित करबैत रहलाह अछि जकरा अपन निधिक प्रति चैतन्य संपुटित भावविन्यास कहल जा सकैछ । एहि क्रममे राम इकबाल सिंह 'राकेश', प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन', बोलगोविन्द झा 'व्यथित', विभूति/ज्योत्स्ना

'आनन्द', कामेश्वरी देवी, इन्द्रकान्त झा, पूर्णिमा देवी आदिक नाम लेल जा सकैछ । मुदा एकर सर्वाधिक व्यवस्थित अनुसन्धान-अनुशीलन ओ संकलनक श्रेय डा. अणिमा सिंहकेँ रहलनि जे लोकमंत्रादिकेँ सेहो अपन संकलनमे समाहित कयने छथि । अद्यावधि यावन्तो संकलन प्रकाशमे आबि सकल अछि ताहिसँ आभिजात्य संस्कारक गंध अबैत बूझि पड़ैत अछि आ लोकसंस्कार बहुधा ओहि स्तर धरि अवडेरले राखल गेल अछि जे आभिजात्य वर्गकेँ स्वीकार्य नहि भेल करैछ । हमर संकेत एहि संकलन सभमे अनवस्थित गहबर गीतसँ अछि ।

गहबर गीत मैथिली लोकगीतक ओ प्रकार भेद थिक जकर गायन लोकपरम्पराक गोहारि, भगतइ आदिक क्रममे कयल जाइत अछि । गोहारि-भगतइ आदिमे लोकमान्यता प्राप्त छप्पन कोटि देवतामेसँ किनको अथवा मृत पूर्वजक आवाहन कयल जाइत छनि। ई आवाहन मन्त्रद्रष्टा भगत किंवा ओकर शिष्य परम्पराक सेवैत पर होइत छैक जकरा देवता/प्रेत विशेषक घोड़ा कहल जाइत छैक । आवाहन भेला पर घोड़ा थरथर काँपऽ लगैत अछि; हाथ, पैर जाँघ पर चाटी मारऽ लगैत अछि, मुँहसँ फुफकारी. वा अन्य शब्द करऽ लगैत अछि, कूद-फान करैत नाचऽ लगैत अछि आ एहिना आनो प्रकारक क्रिया करऽ लगैत अछि जकरा सम्बन्धमे कहल जाइत छैक जे ओ घोड़ा पूर्व स्थितिमे अयबासँ पूर्व धरि नहि बूझैत रहैत छैक जे ओ की सभ क्रिया कयलक अछि। आवाहनक हेतु लोकजगतमे 'भाओ' शब्दक प्रयोग होइत छैक आ ई बहुधा निसबद रातिमे कयल जाइत छैक । जाहि देवता वा पितरक आवाहन होइत छनि, तनिकासँ सम्बन्धित गीतक गायनक हेतु मृदंग किंवा ढोल ओ झालि वाद्यक संग किछु गोटे रहैत छथि । ओ सभ जाहि प्रकार भेदक गीत गबैत छथि सैह गहबर गीत मध्य परिगणित कयल जा सकैत अछि, जकर संकलन-सम्पादन-समीक्षा दिस अनुसंधित्सुलोकनि उपेक्षे भाव रखलनि अछि। प्रकाशित लोकगीतक सामग्रीकेँ देखला उत्तर ई तथ्य स्पष्ट बुझना जाइत अछि ।

जखन कोनो व्यक्ति वा परिवारविशेषमे निरन्तर अभावग्रस्तता रहैत छैक आ कतबो कठिन परिश्रम कयनहुँ पूरी नहि पड़ैत छैक, वैवाहिक जीवनक पैघ अवधि भेलो उत्तर सन्ततिक अवतरणक कोनो सूरसार नहि देखि पड़ैत छैक,

सम्पत्तिक छिजाओ होमऽ लगैत छैक, परिवारमे निरन्तर कोनो ने कोनो दुर्घटना घटऽ लगैत छैक, नजरि-गुजरिसँ ग्रस्त नेना तबाह रहऽ लगैत छैक, पोसुआ गाय-महींस प्रदूषित वा कम दूध देबऽ लगैत छैक किंवा एहने घटना सभ होइत छैक, तँ ओहि परिवारक लोक कारण आ निदान दुनू जनबाक हेतु भगत आ घोड़ाकेँ भाओक हेतु आमंत्रित करैत छथि । भगतक अनुसार धूप, गुग्गुल, पड़वा, दारू, सिरनी, कपड़ा आदि विविध पूजन सामग्री एकत्र कयल जाइत छैक आ आयोजन होइत छैक । भाओ भेला उत्तर घोड़ा पर क्रमशः विभिन्न देवता ओ मनुषदेवाकेँ उतारल जाइत छैक जे पुछला पर विपत्तिक कारण आ निदान दुनू जनबैत छैक । लोकमान्यता छैक जे तदनुरूप कयने स्थितिमे सुधार होइतहिँ छैक ।

एहि लोकमान्यताक परिपूर्त्यर्थ आवाहनक हेतु जे गीत सभ गाओल जाइत अछि तकरा गहबर गीतक अभिधान देल जयबाक चाही, कारण एहन गीत सभ बहुधा जातीय गहबरक कुलदेवता, जाति-देवता वा पितर-देवतासँ सम्बद्ध रहैत अछि । एहि प्रकारक देवी-देवताक किछु नामावली एतऽ उद्धृत कयल जाइछ यथा—काली, बन्दी, गोरैया, गहिल, गाङो, दीना-भद्री, कारिख, शीतला, गरीब भुइञा, बामती, अघोरी, फूलमति, लुकेशरि, महिषासुर, जगदम्बा, दुर्गा, राहु, मनुषदेवा आदि ।

एहि प्रकारक गीत सभक अध्ययन अत्यन्त रोचक उपसंहृति प्रदान करयवला अछि, जेना—(क) एहि प्रकारक गीतक सुर ओ ताल मृदंगिया ओ झलैताक उत्साहक अनुसरण करैत अछि । (ख) एकर भाषा ओ शब्द लोकजीवनक अत्यन्त निकट देखि पड़ैत अछि आ शास्त्रीयताकेँ अवडेरने रहैत अछि । (ग) लोकजीवनक हास-विलास ओ उल्लास एहि प्रकारक गीतमे सहजहि उपलब्ध अछि । (घ) गीत सभक स्वरूप मुक्तक आ कथा-काव्यपरक दुनू प्रकारक अछि, आदि ।

उदाहरणक हेतु गहबर गीत मध्य परिगणनीय किछु कालीक झूमरि पर विचार कयल जा सकैछ । वस्तुतः भारतीय शास्त्रीय दर्शनमे काली मार्कण्डेय पुराणक देवी माहात्म्य ओ अन्यान्य पुराणक अवधारणा थिकीह । दुर्गासप्तशतीक पञ्चम अध्याय श्लोक 87-88 मे कहल गेल अछि जे—

शरीर कोशाद्यत्तस्याः पार्वत्याः निःसृताम्बिका।
कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते ॥
तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती।
कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया ॥

एहि तरहेँ शास्त्रीय काली शिवक अर्द्धांगिनी पार्वतीक एक गोट परिवर्त्तित स्वरूपटा थिकीह जनिक ध्यान ओ स्तवनसँ सम्बद्ध गीतक परम्परा मैथिलीओमे विद्यापतियेक कालसँ भेटैत अछि । शाक्त भक्ति प्रवाह ओ तद्जन्य मैथिली पदावलीक रचना मिथिलामे अनवच्छिन्न रूपें होइत रहल अछि । मुदा गहबर गीतक काली मिथिलाक सामान्य बेटी छथि जे तन्त्रसाधना सिखबाक हेतु उताहुल छथि । एहि शिक्षाकें हेतु अनिवार्य प्रतिदान किंवा दक्षिणाक रूपमे ओ जे किछु देबऽ चाहैत छथिन से विभिन्न कारणसँ स्वीकार्य नहि मानल जाइत छैक, कारण प्रशिक्षिकाक ध्यान हुनक भाय गोरिल पर छनि। मुदा गोरिलकेँ प्रदान कऽ देबामे भ्रातृवत्सला काली अपन असमर्थता देखा लोकजीवनक भ्रातृभावकेँ उत्कृष्ट स्तर प्रदान करैत छथि आ श्रोता वा पाठककेँ एकटा सहज भावलोक धरि पहुँचा दैत छथि । गीत एहि प्रकारेँ अछि—

कहाँ गेलऽ किए भेलऽ कैथिन के बेटिया हे
तनी गुनमा हमरो दियउ सिखाय॥
जब तोरा आहे काली गुनमा सिखयबउ
हमरो के किए देबऽ दान॥
जब तोहें आगे कैथिन गुनमा सिखयबें
गल्ला गिरमल देबौ तोरा दान॥
हम नहि लेबौ काली गल्ला गिरमलहरबा
ओहो तँ देखत माय-बाप॥
जब तोहें आगे कैथिन गुनमा सिखयबें
छोटकी ननदिया देबौ दान॥
हम नहि लेबौ काली छोटकी ननदिया
ओहो छौकऽ पर के तिरिया॥
जब तोरा आगे काली गुनमा सिखेबउ
छोटे भैय्या गोरिल लेबौ दान ॥
अगिया लगेबौ कैथिन तोहरो जे गुनमा

बजर खसेबो तोहरो माथ ॥
हम नहि देबौ गे कैथिन भइया दुलरुआ
सहोदर देल नहि जाय॥
एक बेर बोलू हो पञ्चन सिरी भगवान हो
दोसर बेर बाबा बैद्यनाथ हो॥
तेसरे बेर बोलू हे पञ्चन इन्दर कविलास हो
चारिम बेर श्रीसीताराम हो॥

एहिना एकटा गहबर गीतमे सलहेसक बालस्वरूपक सहज ओ मनोहर झाँकी प्रस्तुत करैत भक्त लोकगीतकार कहने छथि–

मैया के गोद से उतरल राजा सलहेस
बाबा के ठेहुनमा धेने ठाढ़ ।
छओही महिनमा के जनमल राजा सलहेस
सेहो माङय चरण घुघुर ॥
घुरु-घुरु मत करियौ राजा सलहेस
इहो हेतऽ जीव के जंजाल ॥
पटना शहर के होरिल दरजिया
सिबिहह नामे नामे बाँहि ॥
सेहो कुरता जब पहिरत सलहेस
छमकैते जयतै ससुरारि ।
मगह मुंगेर के चतुर सोनरबा
गढ़ि देल घुरु अनूप ॥
सेहो घुरु जब पहिरत राजा सलहेस
रुनुझुनु-उठतै अनघोल ॥

एही तरहेँ अन्यान्यो लोकदेवता सभसँ लोकगाथेतर मुक्तक गीत सभ मिथिलाक लोकजगतमे पुष्कल परिमाणमे लोककंठमे वर्त्तमान अछि आ आधुनिक टी.व्ही., कम्प्यूटर युग सुरसा जकाँ मुँह बओने ओकरा सभकेँ गीड़ि-जयबाक हेतु तत्पर अछि । तेँ समय अछैत एकरा सभक संकलन मैथिली लोकसाहित्यक एक गोट विशिष्ट ओ उत्कृष्ट विधाक प्रति न्याय होयत । लोकजगतसँ प्राप्त किछु एहन गीत सभ एतऽ संकलित कऽ उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत कयल जाइत अछि ।

देवीक सुमिरन

काँचहि-बाँस के डलबा रे डलबा सूत कमल केर फूल हे ॥
ओही फूल पुजबै काली हम्मर देवता काली हमर होइयै समतूल हे ॥
ओही फूल पुजबै बन्दी हम्मर देवता बन्दी हमर होइयै समतूल हे ॥
ओही फूल पुजबै सत्ती हम्मर देवता सत्ती हमर होइयै समतूल हे ॥
ओही फूल पुजबै महामाया हम्मर देवता महामाया मैया होइयै समतूल हे ॥

कालीक झूमरि

कओने राज उपजल झउसा हे गहुमबा हे लहुलाखन देवी,
देवी हे, कओने राज जँतबा हय बहुत हे लहुलाखन देवी ।
पुरबे राज उपजल झउसा हे गहुमबा हे लहुलाखन देवी,
देवी हे, पछिमे राज जँतबा हय बहुत हे लहुलाखन देवी ॥
कओने बहिनो पीसै छथिन झउसा हे गहुमबा हे लहुलाखन देवी,
देवी हे, कओने बहिनो मारै झिकबा झोर हे लहुलाखन देवी ।
काली बहिनो पीसै छथिन झउसा हे गहुमबा हे लहुलाखन देवी,
देवी हे, बन्दी बहिनो मारै झिकबा झोर हे लहुलाखन देवी ॥



तिसिया खेतमे तिसिया मसुरिया खेतमे राइ
हे काली ताही खेतमे ना
काली दाइ झुमरि खेलाइयै
हे काली ताही खेतमे ना
झुमरी खेलाइते काली गोर बिछिया गेलै हेराय
हे काली ताही करणमा ना
कालीँ दाइ रोदना पसारथिन
हे काली ताही करणमा ना
एतना वचनिआ सुनलनि भैया बरइता हे
भैया खोजि हे दियउ ना

काली गोर बिछिया गेलै हेराय हे
भैया खोजि हे दियउ ना
पटना शहरबा के साँकर मोर गलिआ
हे काली गलिये-गलिये ना
काली दाइ बसै छै सोनरबा
हे भैया गलिये-गलिये ना
कहाँ गेलऽ किए भेल भैया सोनरबा
हितबा गढ़िये दिऔ ना
काली गोर बिछिया गेलै हेराय
हे सोनरा गढ़िये दिऔ ना
गढ़िए गुढ़िए सोनरा केलकै समतूलबा
हे काली लैए लियउ ना
काली दाइ, गोर के गोर बिछिया
हे काली लैए लियउ ना
पहिरि-ओढ़िए हे काली भेलै समतुलबा
हे काली चलिए देलकै ना

◆

कइसन देखै छी घन बँसबरिया कइसन बहे नदी जमुना।
हरियर देखै छी घन बँसबरिया शीतल बहे नदी जमुना ॥
ढुनमुन ढुनमुन काली हमर खेलए गौआ सब बथनमा ।
कओने जोगिनिञा नजरि लगेलकै काली हमर हरि लेलकै॥
सउँसे डइनी ननदी हइ जोगिनिञा ओहे काली हरि लेलकै॥
कटबै मे चानन के गछिया निपबै मे अङ्गनमा ।
तऽबे मोरा घुरतै काली सत्ती निरमोहिया ।
सबके तऽ दैछऽ काली अन धन सोनमा ।
सेवक खातिर दिअउ हे काली यश के मोटरिया ।

कओने महिनमा देवी तू सुतलऽ अङ्गनमा, काली तू सुतलऽ अङनमा हे ।
देवी हे कहमा भिजौलऽ नामी केस, देवघरबा देवी हमर रूसल जाइयै हे ॥
आसिन महिनमा सेवक हम सुतलहुँ अङ्गनमा, सेवक सुतलहुँ अङ्गनमा हो ।
सेवक हो ओसबे भिजेलहुँ नामी केस, देवघरबा देवी हमर रूसल जाइयै हे ॥
किनका पोखरिया देवी तू माथा मले गेलऽ, काली तू माथ मले गेलऽ हे ।
देवी हे कहमा हेरौलऽ टिकुली लिलाट, देवघरबा देवी हमर रूसल जाइयै हे ॥
बाबा के पोखरिया सेवक हम माथा मले गेली हो, सेवक माथा मले गली हो ।
सेवक हो ओतही हेरौली टिकुली लिलाट, देवघरबा देवी हमर रूसल जाइयै हे ॥
कहाँ गेलए कीए भेलए झिनमा मलहबा रे, झिनमा मलहबा रे ।
झिनमा खोजि दिअऽ टिकुली लिलाट, देवघरबा देवी हमर रूसल जाइयै हे ॥
एक जाल फेकलक झिनमा, दोसर जाल फेकलक हे ।
झिनमा रे पड़ि गेलौ घोंघरी सेमार, देवघरबा देवी हमर रूसल जाइयै हे ॥
तेसल जाल फेकलक जब झिनमा महलबा रे, झिनमा मलहबा रे ।
भेटि गेल टिकुली लिलाट, देवघरबा देवी हँसे लागल हे॥

◆

कओने बहिनो तुलसी रोपैये, के दैय धुपदान गे ।
कओने बहिनो आढ़त दैये, जरैये पलहास गे ॥
काली बहिनो तुलसी दैये, जगदम्मा दैये धुपदान गे ।
भागवत बहिनो आढ़त दैये, जरैये पलहास गे ॥

◆

कओने दिन आहे काली तोहरो जनम भेल
कओने दिन भेल छठिहार हे ।
शनि दिन आहे सेवक हमरो जनम भेल
शनि छवे भेल छठिहार हे ॥
कओने घर आहे काली तोहरो जनम भेल
कओने घर भेल छठिहार हे ।

टुटले मड़ैया हे सेवक हमरो जनम भेल
मुनहर घर भेल छठिहार हे ॥
कथिये पहिरि हे काली तोहरो जनम भेल
कथिये पहिरि छठिहार हे ।
फाटले पुरान पहिरि हमरो जनम भेल
पटम्मर पहिरि छठिहार हे ॥
कओने फूल ओढ़न हे काली कओने फूल पहिरन हे
कओने फूल तोहरो सिंगार हे ।
एली फूल ओढ़न हे सेवक बेली फूल पहिरन हे
अड़हुल फूल हमरो सिंगार हे ॥



छोटी रे अँगनमा काली माइ बहुते पसार ।
झुमरी खेलाइते हे काली टुटलौ गिरमलहार ॥
कौआ लऽ गेल मुनरी गोरैया गिरमलहार ।
ताही रे कारणमा कालीदाइ रोदना पसार ॥
होयतै परतिया काली हे लगते बजार ।
कीनि देबौ मुनरी बेसाहब गिरमलहार ॥

महामायाक गीत

उत्तर दिसासँ अयली महामाया मैया ठाढ़ि भेली जमुना किनार ।
नैया लाबू नैया लाबू झिनमा मलहबा हम पंथ उतरब पार ॥
टूटल पंथ हे मैया टूटल करुअरिया कोन विधि उतरब पार ।
अरही काठ के नैया निरमाओल चन्दन लिअऽ करुआरि ॥
खने नैया ·खेबय खने भसिआबय खने पुछए जतिया विचार ।
जञो तोहें आ रे केवटा बहिञा पकड़बें नावे पर दऽ देबौ शाप ॥
हम छिकौं जातिक ब्राह्मणी रे केवटा माय-बाप रखलक काली नाम ।
हाथ बाट धरबे कोढ़ी कुष्ट फुटतौ पापक नैया जेतौ बुड़िआइ ॥

फूलमतिक गीत

बेतिया से अयलै फुलमति झुमरिया खेलैत हे अयलै
टूटि हो गेलै गल्ला गिरमलहार ।
जनु कानू जनु खीजू फूलमति बहिनिञा हे
आनि देब गल्ला गिरमलहार ॥
सोनपुर शहरिया से सोनरा बजायब
गढ़ि देतै गल्ला गिरमलहार ॥
पटना से पटबा मँगायब हे बहिनिञा
गाँथि देतै गल्ला गिरमलहार ॥

लुकेशरिक गीत

पछिमहि राज से बहार भेलै गे लुखा देवी
नेपुर उठैये अनघोल ।
पैर के नेपुलवा लुखो खोइँछा भरि लेलकै
चलि भेलै काशीराम पार ॥
किए तोरा घटलौ लुखो अन-धन सोनमा
किए घटलौ पाकल बीड़ा पान।
नहि हमरा घटलै बाबा अन-धन-सोनमा
नहि घटलै पाकल बीड़ा पान ॥
बारह बरिस बाबा तोरे नग्र बसलौं
कहियो ने गेलौं गंगा असलान ।
अंगना मे कुँअबा खुनाय देब लुकेशरि
बाँटि देब रेशम सुत डोरि ॥
कुँअबा के पानी बाबा सड़ल गेन्हाइ छै
सैला मे बहय निर्मल पानि ।
सैला, सैला मत भूकू देवि लुकेशरि
सैला बहय चौड़बा के पार ॥
लिखल जे हेतै बाबा चौड़बा के पारबा
लिखल मैटल नहि जाय ॥

बामतिक गीत

बामति सुरति देखि भुललै बरहामन छौड़ा
लए रे गेलइ डिंगरा वन के ओर ।
एक वन गेलऽ बरहामन दुइ वन गेलऽ
तेसर वन अँचरा देलऽ बिलमाय ॥
छोड़ू-छोड़ू आहो बरहामन हमरो अँचरबा
खेलैत हेतै गोदी के बलकबा ॥
सासु मोर अन्हरी ननदि बसे ससुररिया
रोवैत हेतै गोदी के बलकबा ।
बड़ आशा धैलियौ बामति तोहरो अँचरबा
हमरो आशा करै छैं निराश ॥

कमलाक गीत

कहमही उपजल हे कमला जल हे गुआ पान हे ।
मैया हे, कहमही उपजल धान, अगम पन्थ कमला दया करू हे ॥
किए सुत कतरब हे कमला जल हे गुआ पान हे ।
मैया हे, किए सुत काटब पन्थ, अगम पन्थ कमला दया करू हे ॥
सोने सुत कतरब हे कमला जल हे गुआ पान हे ।
मैया हे, दये सुत काटब पन्थ, अगम पन्थ कमला दया करू हे ॥

अघोरीक गीत

कथी बिनु आहो नाताजी मुहमा मलिन भेल
कथी बिनु घुरमै शरीर ।
पान बिनु आहो नाताजी मुहमा मलिन भेल
गाँजा बेगर घुरमै शरीर ॥
पनमा जे खेलऽ नाताजी पिकिया नेरौलऽ
ओही पिकिया जनमल अढ़ुलबा फूल के गाछ।
गजबा जे पीलऽ हो नाताजी भेलऽ मतबलबा
बैठि गेलऽ अढ़ुलबा फूल के गाछ ॥

महिषासुरक गीत

कहमा बिसरलह हो महिषासुर भैंसिया के नथबा
कहमा बिसरलह सयलिआव ॥
बथने बिसरलहुँ सेवक भैंसिया के नथबा
गहबर बिसरलहुँ सयलिआव ॥
माय के आँचर धेने महिषासुर अरज करय
हमर गौना दिअउ ने कराय ॥
गौना के धोती महिषासुर मलिनो ने भेलह
अपने भेलह अलोपित ॥

गरीब भुइआक गीत

किए भगता काशी जाइयै किए परयगबा हो
किए सुतलै तिरिया संग साथ हो ।
नहि भगता काशी जाइयै नहि परयगबा हो
नहि सुतलै तिरिया संग-साथ हो ॥
अबितहि छलियै बौआ धरम केर बटिया हो ।
कोढ़िया बटिया घेरने ठाढ़ हो ॥
अबितहि छलियै गरीबन धरम केर बटिया हो
अन्हरा बटिया घेरने ठाढ़ हो ॥
अबितहि छलियै बाबू धरम केर बटिया हो
बाँझिन तिरिया बटिया घेरने ठाढ़ हो ॥
कोढ़िया के काया देलियै अन्हरा के नयनमा हो
बाँझिन तिरिया बालक देलियै दान हो ॥
ताही मे लगलै बाबू हमरा के देरिया हो
नाही सुतली तिरिया संग साथ हो ।
नाही गेली काशी परयाग हो ॥

◆

तुलसी के पतबा तोड़ि बान्हलऽ चदरिया हो,
बान्हि छान्हि कैलऽ समतूल हो ।
काँख तर लेलऽ गरीब हो लाले लाल धोतिया हो
चलि भेल गंगा असलान हो ॥
एक कोस गेलऽ गरीब हो दोसर कोस गेलऽ हो
तेसर कोस गंगा असलान हो ।
घड़ि एक चलल गरीब हो पहर पएरा बितलै हो
जूमि गेलऽ गंगा असलान हो ॥
कुसुम रंग-धोतिया गरीब हो उपरे नेरौलऽ हो
चलि देलऽ गंगा असलान हो ।
एक डुम्मी मारलऽ गरीब हो दोसर डुम्मी मारलऽ हो
तेसर डुम्मी कएलऽ असलान हो ॥
एक ताल मारलऽ गरीब हो दोसर ताल मारलऽ हो
डोलि गेल इन्दर कविलास हो ॥
एक बेर बोलू हो पञ्चन श्री भगवान हो
दोसर बेर बाबा बैजनाथ हो ।
तेसर बेर बोलू हो पञ्चन इन्दर कविलास हो
चारिम बेर श्रीसीताराम हो ॥

धर्मराजक गीत

चारू दिस देखै छी दीनानाथ जलम जलामय
कोने विधि उतरब गंगा पार ।
नहि हम देखी हो दीनानाथ नैया-नवेरिया
नहि देखी झिलमिल मलाह ।
आठहि काठ केर नैया निरमाओल
चनने रचल करुआरि ।
ताहि पर बैसल केवल मलहवा
करू केवल लगले गंगा पार ।

अगिले जे माङी बैसल अलख निरंजन
पछिले माङी दसो रे देवान ।
तर छोड़य धरती नैया उपर असमनमा
बीचे नैया पवन-बसात ।
धर्मक नैया हेतै हो दीनानाथ पार उतारतै
पापक नैया बूड़त मझधार ।

पीर बाबाक गीत

आहो साहेब औलिया पीर, आहो साहेब औलिया पीर ।
बाप तोहर पढ़ौ रे औलिया उर्दू रे फारसी
तोहूँ पढ़ले सात खण्ड कुरान ।
हाथ तोहर शोभौ रे औलिया सोना षट्कोणमा
पैर शोभौ झुनकी खराम ।
मुँह तोहर शोभौ रे औलिया पाकल बीड़ा पनमा
गला मे शोभौ गिरमलहार ।
एक कोस गेल औलिया पहर पयरा बितलै
तेसर कोस जूमल मक्का देस ।
तेसर कोस जूमल मदीना देस ।

कारिखक गीत

सितले अमुनिञा बाबू सितले जमुनिञा हो
सितले कदम जुड़ि छाँह हो ।
ताही तर अपुरा मैया पलङा ओछाओल
सूतल बाबू कारिख नन्दलाल हो ।
कथिएक अउआ रे पउआ कथिएक पसिआ हो
कथिए घोरल हुनकर खाट हो ।
सोने केर अउआ रे पउआ रूपे केर पसिआ हो
रेशमे घोरल हुनकर खाट हो ॥

ताही खाट सूतै दुलरा कारिख नन्दलाल हो
सूतल बाबू कारिख नन्दलाल हो ॥
उठू उठू कारिख दुलरा लाली सेज पलङ्गिया हो
लिऔ बाबू सेवक के उदेस हो ।
हम नहि उठबै अम्मा लाली सेज पलङ्गिया हे
नाहि लेबै सेवक के उदेस हो ॥
अच्छत के धान गे अम्मा सेवक कूटि खेलकै गे
पीबि गेल अरकबा के दूध गे ।
धूर बान्हल खस्सी गे अम्मा सेहो बेचि खेलकै गे
कइसे लेबै सेवक के उदेस गे ॥
भुखले मे खेलकौ बाबू अच्छत के धनमा हो
पिलकौ अरकबा के दूध हो ।
दुखले मे बेचलक बाबू धूर बान्हल खस्सी हो
लिऔ बाबू सेवक के उदेस हो ॥
एक बेर बोलू हो पञ्चन श्रीमहादेव हो
दोसर बेर कृष्ण भगवान हो ।
तेसर बेर बोलू हो पञ्चन भुइञा हमर देवता हो
चारिम बेर श्री सीताराम हो॥



कारिख जनम भेल दुनिञा आनन्द भेल
डोलि गेल इन्दर कविलास हो ।
सुरपुर डोलैए कारिख नरपुर डोलैए हो
डोलि गेल इन्दर कविलास हो ॥
उतरहि राज से अयलै एक बटोहिया हो
बैठि गेल चनन बिरिछ हो ।
जल्दी से लबियौ मैया मधुरीके फुलबा हो
पूजियौ हमर छठिहार हे ॥
उजरी चदरिया तानि कारिख तोहूँ सुतलऽ हो
सुति रहलऽ निशि अब भाग हो ।

निशि निशि रतिया कारिख उठलऽ चेहाय हो
लागि गेल मधुरी पियास हो ॥
किए तोरा घटलऽ कारिख अनधन सोनमा हो
किए घटलऽ पाकल बीड़ा पान हो ।
कओने उदेस कारिख रन वन फिरलऽ हो
किए लागल मधुरी पियास हो ॥
नहि मोरा घटलै अम्मा अनधन सोनमा हे
नहि घटलै पाकल बीड़ा पान हे ॥
सेवक उदेस हे अम्मा रन वन फिरलहुँ हे



नदिया के तीरे तीरे खेललऽ शिकार, हो कारीख दुलरुआ ॥
बिछि बिछि मारलऽ हो मजूर, हो कारीख दुलरुआ ॥
हरिणो ने मारलऽ कारिख तितिरो ने मारलऽ, हो कारीख दुलरुआ ॥
बिछि बिछि मारलऽ हो मजूर, हो कारीख दुलरुआ ॥
कानि कानि कहै छथिन वन के मजूरनी, हो कारीख दुलरुआ ॥
बकसि दिअउ सिर के सेनूर हो कारीख दुलरुआ ।
जब तोहर आहे मजूरनी सेनूरा बकसबऽ, हो कारीख दुलरुआ ॥
हमरा के किए देबऽ दान, हो कारीख दुलरुआ ॥
भरि राति आहो कारिख नचबा देखैबऽ हो कारीख दुलरुआ ॥
भोरे उठि शब्द सुनायब, हो कारीख दुलरुआ ॥





डा. योगानन्द झा

डा. योगानन्दझा मैथिली भाषा-साहित्यक प्रतिबद्ध लेखक छथि। आलेख सञ्चयन, मैथिली शाक्त साहित्य, फकीर मोहन सेनापति; लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा; बिहारक लोककथा, मैथिली हनुमान चालीसा, गहबर-गीत, स्नेहलता, मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष, कथा-लोककथा, सीतावरण प्रबन्धकाव्य, मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली, मैथिली लोककथा संचयन आदि हिनक प्रमुख मौलिक, सम्पादित ओ अनूदित कृति सभ थिकनि। साहित्यकार संसद, समस्तीपुर; हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग; मैथिली प्रवाहिका, रायपुर (छ.ग.) आदिसँ सम्मानित श्रीझाकेँ साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 2005क अनुवाद पुरस्कार प्रदान कय समलंकृत कयल गेल छनि।

-प्रकाशक

शेखर प्रकाशन, पटना
ISBN : 978-81-934584-5-7